प्रार्थना

राग-हरीगीत छंद

आ जगतमां भमतो हतो, पण भ्रमर मारी नव ठरी,
मळीयो खरेखर एक जेणे, जीवनमां शांती करी;
आशा तणा पासा बधा, सवळा पड्या साचा अरे!
काळांतरे स्वप्नुं फळयुं, महापुन्यशाळी नर खरे! १

रखडई मरे भटकई मरे, पण संत साचो क्यां जडे,
जे भावना उरमां हती, ए स्थानमां नयनो पडे;
ओ! भारती माता, खरेखर विश्ववंद्य कहाय तुं,
दुःख हारिणी शुभ कारिणी, सुख अर्पनार गवाय तुं. २

कल्याणकारी सृष्टिनी, देवी सती ओ! भारती,
आनंदकारी सृष्टिनी, देवी सती ओ! भारती;
जयकारिणी आ सृष्टिनी, देवी सती ओ! भारती,
पुरहर्षनां उभरावती, देवी सती ओ! भारती. ३

ओ भारती तुज, छत्रछायामां खरेखर दीसतो,
पहाडो अने भेखड विषे, ए कर्मदळने पीसतो,
जंगल गुफा भय भासतो, त्यां एकीका फरता फरे,
ए ईष्टना साधक थवा, हिंसक पशुथी नव डरे. ४

नयनो कमळ सम दीसतां, मुखचंद्र सम चळके खरे!
शांती तणो साचो मीनारो, ज्योत अंतरमां झरे!
मद मोह मायाने हण्यां ने, काम क्रोध गयां खरे!
आत्मोन्नतिने साधवा, सिद्धांत साचां आचरे! ५

विश्नु कहो ब्रह्मा कहो, जरथोस्त कहो के राम कहो,
इसु क्राइस कहो के कृष्ण कहो, महावीर कहो पारस कहो;
आ सर्व नाम तणुं खरेखर, मूळ आखर एक छे,
जेने जीवनने जीतीयुं, तेनो खरेखर टेक छे. ६

ए विश्व आखुं एक समजी, अंतरंगे म्हालता,
उंच नीच के धनवान, निर्धन सर्व एक पीछाणता;
माया निहाळी एहनी, मानव कदी नव भूलता,
रात्रि अने दिन एहनां, स्वप्नां मही सौ झूलता. ७

गभरु अवस्था बाल्य वयमां, सर्व छोडी निसर्यां,
मातृ पितु स्नेही सबंधी, मन विषे ए विसर्यां;
ममता बुरी संसारनी, ए भान अंतरमां थयुं,
फरता हता वन वृक्ष त्यां, गुरु देवनुं शरणुं भयुं. ८

वय आठ वर्ष सुधी अरे! ए ढोर जंगल चारता,
जन्मे हता आहिर पण कंई, आत्म आहिर नव हता;
धन्य आहिर जातने, हो! धन्य आहिर ज्ञातने,
धन्य एनां मातने, हो! धन्य एना तातने. ९

चंडाळमां जन्मेल नर, चंडाळ नव कहेवाय छे,
वैश्नवपणुं धरनार नर, विश्नु नहि कहेवाय छे;
जे कर्म बुरां आचरे, ते नर खरो चंडाळ छे,
आचारथी जे शुद्ध छे, तेनो उंचो अवतार छे. १०

पुन्य आहिरनां खील्यां, ए विश्वना साधु बन्या,
मस्ति जगावी आत्ममां, मृत्यु तणो भय विसर्या;
साची धूनी परमात्मनी, ए शोध मांहे निसर्या,
आ देहनी माया अने, ममता बधी ए विसर्या. ११

त्यागी बन्या ए सोळ वर्षे, जैन दीक्षा आचरी,
शांतिविजयना नामथी, आ विश्वमां हाकल करी;
नव भेद जाण्यो कोईमां, सहु विश्वना महेमान छे,
निज आत्मने अपनाववो, ए वीर नरनुं काम छे. १२

अध्यात्म योग पीछाणवा, ए घोर जंगलमां फर्या,
मतभेद सर्व त्यागीने, ए आत्म मांहे उतर्या;
साधक बन्या जे पूर्वमां, ए मार्ग अंतरमां वर्यो,
पत्थर अने पहाडो विषे, ओमूकारनो दीपक धर्यो. १३

आहा! अजब आनंदमां, मस्तान थई ए नाचता,
निर्जर भयानक वन विषे, ए सिंह थईने राचता;
एकलो आव्यो जवानो, एकलो निश्चय खरे!
साधीश जो कंई आत्मनुं, तो देहनुं सार्थक खरे! १४

वर्षो सुधी ए मौनमां, रात्रि दिवसने गाळता,
अभिग्रह भयंकर आदरी ने, इंद्रियोने वाळता;
स्वादो तजी सहु जीभना, वर्षो थकी तप आचर्या,
उपसर्ग नडीया कारमा पण, मन विषे ए नव डर्या. १५

साधु थवुं ए दोहीलुं, पण वेष सजवो स्हेल छे,
तीक्ष्ण धारे नाचवुं, एथी वधु ए खेल छे;
आत्मने साधु बनावे, तेज साधु थाय छे,
जे आत्मने समजे नहि, ते विश्वमां अथडाय छे. १६

आत्म तत्व पीछाणवु. ए मार्ग शूरवीरनो अरे!
झूकवुं खरेखर मस्तिमां, ए मार्ग वीरलानो खरे!
नवकाम त्यां कायर तणुं, ए वाड कंटकनी अरे!
हींमत धरी आगळ वधे, ए वाड ओळंगे खरे! १७

कंटक तणी वाडो गुंदीने कोक वीरलो चालतो,
ए तीक्ष्ण धारोने वींधीने, कोक वीरलो हालतो;
कंटक थकी पण दोहीलुं, साचुं रसायण आत्मनुं,
सौ औषधीथी दोहीलुं, साचुं रसायण आत्मनुं. १८

भठ्ठी पुरी पकवे नहि, तो सर्व निष्फळ जाय छे,
काचुं कदी लेवाय तो, आखुं शरीर कहोवाय छे;
अभिमान आवी जाय तो, पळमां वधुं धावाय छे,
अंकुर आवी जाय तो पण, सर्व निष्फळ जाय छे. १९

साची कसोटी आत्मनी, स्हेवुं खरे मुश्केल छे,
निज मस्तिमां जाग्रत रहीने, साधवुं मुश्केल छे;
दुनियातणो संसर्ग छोडी, जीतवुं मुश्केल छे,
आ सर्वमां विजयी बने तो, मोक्ष मळवो स्हेल छे. २०

ओम्कारना साचा सूरोना, तानमां ए नाचता,
अंतर मही वाजींत्र एनां, रातदिन उच्चारता;
ओम्कारनी मस्ति मही, ए ध्यानमां लय पामता,
ओम्कारना साचा स्मरणथी, पुर्ण रसमां जामता. २१

ओम्कार सर्वे मंत्रमां, राजा समो कहेवाय छे,
ओम्कार सर्वे मंगळोमां, आद्यपद कहेवाय छे,
ओम्कारमां विश्नुमहेश्वर, सर्व आवी जाय छे,
जैनोतणा सिद्धांतमां, परमेष्टि पद कहेवाय छे. २२

ओम्कार आखा विश्वनो, साचो अमोलो मंत्र छे,
ओम्कार आत्म सुधारणानो, एक साचो यंत्र छे;
साधु अने संन्यासीनो, साधक खरो ए मंत्र छे,
अबधूत अने योगीजनोनुं, गान ए पण मंत्र छे. २३

ओम्कारनी शक्ति थकी, सौ कार्य सिद्धि थाय छे,
ओम्कारनी शक्ति थकी, सात्विक बळ मेराय छे;
ओम्कार मांहे देवदेवी, सर्व आवी जाय छे.
ओम्कारना ध्याने करी, सर्वत्र शांती थाय छे. २४

आहा! अजब ओम्कारछे, आहा! गजब ओम्कारछे,
सहु कार्यनो साधक वळी सम, एक ए ओम्कार छे;
ओम्कार सारा विश्वनुं पूजनीक बळ कहेवाय छे,
ओम्कार केरा जापथी, मानवजीवन पलटाय छे. २५

रुषीओ अने योगेश्वरो, ए साधता निश्चय खरे,
पण मानवी निश्चय करे तो, कंईक प्राप्त करे अरे;
सारा जीवननो सार सहु, ओम्कारमां देखाय छे,
निज हर्षथी भजतां थकां, आनंदमंगल थाय छे. २६

ॐकार तारा ध्यानथी, कंई वीरनर साधी गया,
ॐकार तारा ध्यानथी, कंई आत्ममां जामी गया;
ॐकार तारा ध्यानथी, कल्याण सार्चु थाय छे,
ओम्कार तारा ध्यानथी, परमात्मपद लेवाय छे. २७

ओम्कार तारी शक्तिनुं, वर्णन खरेखर शुं करुं,
ओम्कार तारी भक्तिनुं, वर्णन खरेखर शुं करुं;
ओम्कार तारा ध्याननी, भिक्षा खरे माग्या करुं,
गुरुकृपा जो थाय तो, ए ध्यान अंतरमां वरु. २८

आत्मनी साची धूनीमां, परमपद गुरु पामीया,
वर्षो सुधी मस्ति करीने, पुर्ण रसमां जामीया;
सिद्धि खरेखर अंतरे, वाधी पुरी ओम्कारथी,
लब्धी खरेखर अंतरे, वाधी पुरी ओम्कारथी. २९

मृत्यु समां कष्टो सही, ए वीर साचा निवडया,
जंगल अने पहाडो फरी, ए धीर साचा निवडया;
शांतीतणी साची सरिता, अंतरे उभरई रही,
शांतीतणी छोळो शरीरना, रोमेरोम वही रही. ३०

विश्वप्रेम तणो झरो, आहा ! अजब छलकई रह्यो,
समभाव रसनुं पान पी, मानव समूह हर्षई रह्यो;
विश्वना सहु प्राणीओ, निज सम अरे ! ए मानता,
उंच नीच के निर्धन, बधाने एकरुप पीछाणता. ३१

जगतना चारे खूणे, सौ गान गुरुनुं गाय छे,
दर्शन करीने एहनां, मानव पुरा हरखाय छे;
नयनो अजब जादु भर्यां, अदभूत प्रेम वहाय छे,
ए प्रेमनी छोळो मही, सहु स्नान करता जाय छे. ३२

वचनामृतो गुरुदेवनां, अमृतसमां वरसाय छे,
कर्मो थकी सळगी रह्यां, मानवजीवन बुझवाय छे;
ओम् ह्रीं अर्हं तणा, साचा सूरो भजवाय छे,
भक्ति अने नीतितणां, शास्त्रो खरे उजवाय छे. ३३

गुरुदेवना उपदेशमां, सहु सार आवी जाय छे,
विश्वमां सहु मानवी, सूणतां थकां हरखाय छे;
ममता हृदयथी त्यागीने, समभाव रस रेडाय छे,
अहंभाव अंतरथी तजी, सहु एक आलेखाय छे. ३४

आहा ! अजब ! गुरुदेवनी, भक्ति बधे भजवाय छे,
ए भक्तिना साचा सूरो, चारे तरफ गजवाय छे;
भक्ति तणी कींमत नथी, भक्ति खरे पूजवाय छे,
अंतर थकी भक्ति करे तो, मेल सहु धोवाय छे. ३५

स्वार्थने छोडी भजे तो, कंईक सिद्धि थाय छे,
पण मोह मायाथी भजे तो, रोझ सम अथडाय छे;
आशा अने तृष्णामहीं, आखुं जगत होमाय छे,
अंतर खरे ! निर्मळ बने तो, सर्व आवी जाय छे. ३६

आशा अभागी मानवीने, मोहमां पटके खरे,
आशा तणा पासा महीं, मानव बधे भटके खरे;
आशा अमर जाणी बिचारो, मानवी अथडाय छे,
आशा तणी जंजीरमां, ए रात दिन रोळाय छे. ३७

आशा अजब जंजीर छे, आशा जीवननुं तीर छे,
आशा रुपी बाजी महीं, जे जीतीया ते वीर छे;
आशा तणी बाजी अहो ! चारे तरफ खेलाय छे,
पासा पडे सवळा नहि तो, सर्व हारी जाय छे. ३८

आशा तणा पडदा तळे, आखुं जगत नाच्या करे,
आशा तणां फळ चाखवा, मानव अहो ! राच्या करे;
आशारुपी तीर वागतां, मानव पूरो वींधाय छे,
महा पुन्यशाळी होय तो, ते पार पामी जाय छे. ३९

आहा ! दीपक आशा तणो, चारे तरफ सळगी रह्यो,
आहा ! दीपक आशा तणो, मानव हृदय झळकी रह्यो;
आशा तजीने कोक वीरलो, आतमनुं साध्या करे,
पण मुक्तिनी साची, अभीलाषा पूरी एने खरे. ४०

आशा तणी बाजी तजी, गुरुदेव श्री साधी गया,
दुनिया तणी जंजीरथी, ए सर्व आराधी गया;
आशापुरी मुक्ति तणी, ए शोधमां फरता फरे।
माया तणा बंधन थकी, ए आश उंच्च अहो! खरे. ४१

हिंसा करावा बंध गुरुए, विश्वमां हाकल करी,
सत्यना साचा दीपकनी, ज्योत विश्वमहीं धरी;
लख्खो मनुष भील ज्ञातिना, हिंसक खरे अपनावीया,
ओम्‌कारना शुभ मंत्रथी, सहुनां जीवन पलटावीयां. ४२

ओम्‌कारनो डंको बजावी, राजवी पावन कर्या,
हिंसा करावा बंध, सूत्रो जीवदयानां पाठव्यां;
कंई रोगीओना रोग सहु, आशीषथी चाल्या गया,
मृत्यु बिछाने सूई रहेला, मानवी जाग्रत थया. ४३

मरुधर भूमि पावन करी, डंको बजाव्यो देशमां,
मस्तिपुरी निज ध्याननी, झळकी रही छे वेषमां;
रात्रि दिवस पळपळ विषे, गुरुध्यानमां लय थाय छे,
ओम्‌कारना अद्‌भूत बळथी, ज्योत झळकावाय छे. ४४

आ विश्वना चारे तरफ, जयघोष घरघरमां कर्यो,
ए कार्यमां सिद्धि थवाने, योगने आगळ धर्यो;
ज्योती खरेखर योगनी, आ विश्वमां प्रसरी रही,
लख्खो जीवो उगर्या अहो! तेमां जरा शंका नहि.

शक्ति अजब ! त्हारी प्रभो, गुणग्राम पामर शुं करुं,
भक्ति करी हुं ताहरी, अंतर विषे राच्या करुं;
मेरु समो त्हें भार लाध्यो, कल्पना पण क्यां करुं,
बींदु अरेरे ! एहमांथी, वहन हुं केमे करुं. ४६

गच्छा समो अवतार मारो, जीवन सहु एळे गयुं,
पण पुन्य कंईक कर्यां हशे, तो शरण त्हारुं सांपडयुं,
बळता जीवनमां तें प्रभो, शांती करी साची अरे !
त्हारा विना आ जगतमां, कीरतार साचो नव खरे ! ४७

दोरी लीधी छे हाथतो, मुजने कदी नव चूकजे,
निरधार बाळक ताहरो, रस्ता विषे नव मूकजे;
दोषो अति मारा प्रभो !, मागु क्षमा अंतर विषे,
आ दीन तणो आधार तुं, तारक प्रभो साचो दीसे. ४८

पकडी हवे त्हें दोर तो, भवपार बाळ उतारजे,
मुज पापीना दुर्गुण कदापी, अंतरे नव धारजे;
पागल वन्यो तुज भक्तिमां, कंई मार्ग नव सूझतो अरे !
तुज भक्तिरसना पानमां, आनंद मंगल छे खरे ! ४९

साची कृपा त्हारी हती, तो कंईक हुं आगळ वध्यो,
भक्तितणी मस्तिमहीं, हुं छंद पूर्ण करी शक्यो;
बाळक पीता पासे हृदयथी, लाड भाव कर्या करे,
तीम बाळ किंकरदास त्हारा, तानमां नाच्या करे. ५०

आभार दर्शन

स्हायक मित्रो !

प्राणप्रभुनी दिव्व कृपानुसार " भक्तिरस काव्यो " अने आत्मचिंतन पदोनी एकहजार प्रत टुंक समयमां ज पूर्ण थवाथी बीजा पुस्तकनी योजनामां गुंथायो.

तन मन अने धनपूर्वक जे मित्रोए मने स्हायता करी मारा आरंभेल कार्यमां फळीबुद्ध बनाव्यो छे तेओना आभारनी तुलना हुं करी शकतो नथी. प्रिय मित्रोनी जहेमत अने आदर्श हाकलनुं ज आ एक रेखाचित्र छे. प्राणप्रभु ! प्रत्येक शुभ कार्योमां ए मित्रोने उदारशील बनावे एटली ज अभ्यार्थना.

मारा प्रिय मित्र भाईश्री भोगीलाल पानाचंदे प्राणप्रभु प्रत्येनी पोतानी भक्तिनी धखश अने अंतरनी उर्मिओ साथे रचेल काव्य कळानो मारा अज्ञात अने पागल जीवनमां लखाएल पुस्तकमां समावेश करी मारा कार्यने शोभाव्युं छे, तेओनो आभार हुं आ स्थळे भूलतो नथी.

जेओनी नोकरीमां रही हुं मारुं व्यवहारु जीवन दिपावी रह्यो छुं ते मारा आत्म प्रिय शेठजी वकील श्रीयुत हिंमतलाल प्रभाशंकर शुकल के जेओनी नोकरी वफादार नोकर तरीके नहि बजावतां वधु समय आवा ज कार्योमां वीतावुं छुं. मारी धगशने तेओए स्वयंपणे पीछाणेली छे एटले ज आवां कार्यो

हुं तेओनी छत्रछायामां पुर्ण करी शकुं छुं. तेओनो आभार लखवा मात्रथी वळी शके तेम नथी. तेओना आभार नीचे ज मारुं व्यवहारु जीवन दिपावुं छुं.

मारा प्रिय मित्रोनी धर्मभावनाने लईने ज आ पुस्तक प्रसिद्ध करी शक्यो छुं. तेनो क्रम एवी रीते छे के पुस्तकना खर्चना प्रमाणमां ज चोपडीनी किंमत नक्की करी छे अने तेनां जे नाणां आवे ते स्हायक मित्रोनी मूळ रकमने कायम राखी अने बीजी आवृत्तिओ तेमांथी प्रसिद्ध करवी एज आशय अने हेतुने शीरोधार्य करी आ पुस्तक वांचको समक्ष रजु करुं छुं.

वांचक मित्रो व्होळा प्रमाणमां आ पुस्तको खरीद करी मारा श्रमने यथार्थ बनावशे एटली ज भिक्षा याचतां विरमु.

आश्विन कृष्ण
संवत १९९४
अमदावाद

आप सर्व मित्रोनो
आभार पात्र
किंकरना जयवंदन

टुंक नोंध

परम कृपाळु श्रीमद् गुरुदेवना कृपावृक्षनी अद्वैत छायामां रमण करतां "भक्तिरस काव्यो अने आत्मचिंतन पदो" सुधारवानुं कार्य हस्तमां लीधुं.

गुरुश्रीनी वखतो वखतनी मीठी सुवास अने उत्साहनी छोळो मारा रोमे रोममां वहावतां आ भक्तिरस थाळ वांचको समक्ष मूकी शक्यो.

जेओने हुं मारा प्राणप्रभु तरीके स्वीकारुं छुं ते महान योगीराज, तिर्थरुप, परमकृपाळु गुरुदेव श्रीमद् विजय-शांतिसूरीश्वरजीना कृपावृक्षने मारा मनोमंदिरमां रोपवाने दशदशवर्ष पूर्वनी आ अपूर्व तैयारीओ चाली आवतां भक्ति-रुप जळद्वारा जीवन ज्योतने झूकावी.

लांबा समये, कृपावृक्षने खीलावतां तेना फळनी आशाए आगळ वध्यो. चंपाना वृक्षने ज्यारे पुष्प उपार्जीत थाय छे त्यारे तेनी वासना उत्तम सुवासथी नाशीकाने भरपुर बनावे छे, तेवी ज रीते भक्ति पुष्पनी म्हेंक अने वैराग्य रुप वानगी साथे भक्ति रस थाळने केटलेक अंशे पुर्ण कर्यो.

"भक्तिरस काव्यो अने आत्मचिंतन पदोमां अवारनवार सुधारो वधारो तेम केटलाक मूळ विषयमां परी-वर्तन थवाथी आ पुस्तकना नाममां फेरफार करवानी मारी

आंत्रीक जीज्ञासाने अमलमां मूकी तेनुं नाम " वैराग्य तरंग अने गुरु काव्य गूंजन "ना नामथी संबोधा वांचको समक्ष मूकवा मारी भावना श्रेय करी.

आखाए पुस्तकमां काव्यो अने पदो घणी ज सरळ अने सादी भाषामां रचाएल होवाथी सामान्यमां सामान्य मानव स्हेलाईथी समजी शके तेम छे. वधु नहि लखतां आटलेथी ज मारी नोंध पुरी करी आंत्रीक उछरंग वहावतां वैराग्य तरंग अने गुरु काव्य गूंजनमां प्रवेशुं.

लखवामां हस्तदोष थयो होय अगर प्रुफ सुधारवामां न्यूनता जणाय ते स्थळे मारी अज्ञानता अने भूल वदल वांचक पोते ज विचारी लई क्षमानी द्रष्टिए निहाळशे एटली ज प्रेम भिक्षा याची विरमु.

नथी विद्वान के वक्ता, कविनु ज्ञान अंतरमां,
न जाणुं शास्त्र पींगळनां, लखुं छुं सर्व मस्तिमां;
वनावी भक्तिमां पागल, जीवन आगे धपावुं छुं,
जीवन जादव प्रभो शांति, हृदयमां एक ध्यावुं छुं.

फतासा पोळ
नवी पोळ
अमदावाद
संवत १९९४
आश्विन कृष्ण

किंकरना जयचंदन.

आंत्रिक उर्मीओ

गझल

अजब ! मस्ती जीवन जागी, अखंडानंद उभरायो;
वह्यां झरणां कृपा सिंधु, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १

नथी विद्वान के वक्ता, कविनु ज्ञान अंतरमां;
कृपा ए ईष्टनी प्रगटी, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २

भ्रमण करतो हतो जगमां, मळया महापुन्यथी साचा;
प्रभो ए दिव्यनी छाया, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३

हतो हुं शोधमां जेनी, गुरुवर ए मळ्या सुजने;
प्रभो ! शांति सूरीश्वरजी, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ४

समर्प्युं छे जीवन सघळुं, स्वीकार्या अंतरे म्हारा;
जीवन तारक प्रभो साचा, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ५

परमहर्षे पड्यो चरणे, मूक्युं मस्तक कृपा सिंधु;
त्रृषाव्यो धोध अंतरमां, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ६

सदाए दिव्य झरणांथी, तृषा म्हारी छीपावुं छुं;
करुं छुं स्नान हुं एमां, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ७

अरे हुं मूढ बुद्धिनो, नथी कंई ज्ञान म्हारामां;
अकारो लागतो सहुने, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ८

बन्युं आ शुं प्रभो आजे, अजब शक्ति खीलावी छे;
पुरी मस्ती जगावी तें, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ९

जीवननी सर्व घटनाओ, कीधी आगे प्रभो मुजने;
पीलाव्यो भक्ति रस साचो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १०

जीवननाटक बन्युं दुलहु, पूरो नाच्यो प्रभो एमां;
शरण त्हारुं स्वीकारीने, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ११

प्रभोए दुःखसुखे प्रगटयां, कराव्युं भान अंतरमां;
चढाव्यो भक्तिमां आगे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १२

खीली बुद्धि प्रभो मारी, नथी वर्णन कह्युं जातुं;
बन्युं मुज शक्तिनी बहारे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १३

नथी मारी प्रभो शक्ति, वस्यो तुं अंतरे साचो;
करावी सर्व रचना तें, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १४

बतावी दिव्य घटनाओ, अगम संदेश आप्यो छे;
निहाळुं ते मुजब सर्वे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १५

मळया बहुधा रुपे मुजने, समय समये लीला न्यारी;
अजब ! दर्शन करी त्हारां, रच्य काव्यो अति हर्षे. १६

प्रभो ! आ दीनबाळकना, तमे कीरतार छो साचा;
अवरथी काम नहि मुजने, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १७

प्रभो ! हुं आपने मानु, त्रिभुवन आपने जाणु;
अरे ! सर्वस्व पीछाणु, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १८

विषय अध्यात्मनो लीधो, न जाण्यो भेद अंतरमां;
प्रभो ! में आपने स्थापी, रच्यां काव्यो अति हर्षे. १९

गुणानुवाद करवाथी, कदापी पार नहि पामु;
गजब शक्ति प्रभो त्हारी, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २०

हुं तो भाडुत छुं भाई, प्रभो ! मालीक छे मारा;
लखावे तेम हुं लखता, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २१

अरे ! ऍंजीन छुं हुं तो, प्रभो छे हांकवावाळा;
चलावे तेम हुं चालु, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २२

प्रभुनो रथ बन्यो छुं हुं, प्रभो छे नाथ जीवनना;
दोरावे तेम दोरातो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २३

नथी आ माहरी शक्ति, प्रभुनी सर्व माया छे;
हुकमनु पान काधुं छे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २४

पुरा पूजनीयने लायक, प्रभोने मानजो सर्वे;
हुं तो पामर कीडो जगनो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २५

कदापी उर नहि आणो, करी छे में सहु रचना;
चरणरज सर्वनो हुं तो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २६

दया दीन पर ह्रुषावीने, करो सहु दोषने माफी;
कहे छे दास सर्वेनो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २७

कदी अभीमान नव आवे, प्रभो ए शक्तिने प्रेरो;
बनावो मीट्टीसम सुजने, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २८

जगतना नाश सुखोनी, नथी आशा प्रभो सुजने;
स्पृहा राखुं कदापी नहि, रच्यां काव्यो अति हर्षे. २९

जीवन मारुं रडे आजे, प्रभोनी भक्तिने काजे;
सदा मुज रोममां गाजे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३०

कदापी हुं भूलुं तुजने, विसारो नहि प्रभो मुजने;
निरंतर राखजो घटमां, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३१

नथी आधार बाळकने, प्रभो त्हारा विना साचो;
जीवनतारक तमे मारा, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३२

प्रभो ! निरधार बाळक छुं, नथी त्हारा विना मारे;
दया अंतर विषे धारो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३३

जीवन दोरी मूकी चरणे, करो भवपार बाळकने;
न छोडुं प्राणना भोगे, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३४

उगारो के प्रभो मारो, छतां हुं छुं सदा त्हारो;
जीवनथी पार उतारो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३५

कदापी नव भूलो किंकर, त्हमारा दीन बाळकने;
पडुं छुं पाय करगरतो, रच्यां काव्यो अति हर्षे. ३६

प्रस्तावना

भारत वर्षमां चालता वीतंडावादमां महान पुरुषो जवल्लेज मळी आवे. कदापि मळी आवे तो तेओनी ओळख करवी ए पण महद् पुन्यनो योग होय तोज बनी शके.

दश वर्ष पूर्वे आ संस्मरणो मारा जीवनमां भ्रमण करी रह्यां हतां. संवत १९८४ नी सालमां ए महान अवतारी पुरुष महात्मा गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरिश्वरजीना पवित्र दर्शननो भोगी बन्यो अने मारी आंतर तृषाने संतुष्ठ करी.

विश्वनी द्रष्टिए एम पण मानवामां आवे छे के "हरिष्यामी" जो तुं तारा अंतःकरणथी गुरु करवानी ईच्छा धरावतो होय तो प्रथम गुरु त्हार पहेरेलां वस्त्र उतारी लई निर्धन अवस्थामां मूकी देशे. मृत्युना अंत सुधी सहन करवानी शक्ति धरावतो होय तोजतुं अंतःकरणथी गुरु करजे.

प्रस्तुत कथन मारा हृदयमां प्रथमथीज रमी रह्युं हतुं. जगतना क्षणीक सुख अने नाशवंत मायानी स्पृहा मात्र राख्या शिवाय आत्मतत्व गृहण करवानी मारी आंत्रिक अभीलाषा हती.

"हरिष्यामी" करवानी तो मारामां यत्कीचींत स्पृहा मात्र हजु सुधी जागी नथी छतां भक्तिमांज पागल बनी मस्त जीवनमां तलीन रहेवुं एज आंत्रिक ध्येय हतो अने छे.

आ महान पुरुषनी त्याग वृत्ति, आत्मधून, विश्वप्रेम अने जगत कल्याणनी आदर्श भावना निहाळतां पूर्व समयमां थएल महान पुरुषो पैकीना तेओश्री एकज छे.

आ महान पुरुषना सहवासमां लांबा समय सुधी रही में मारी मानव जातने पावन बनावी छे. तेओश्रीना वधु गुण-ग्राम नहि करतां एटलुं तो चोक्कस जणावीश के आ कळीयुगना विषम समयमां एक महान् अवतारी पुरुष तरीकेज तेओश्री पोतानो जीवन प्रवाह दिपावी रह्या छे. कोईपण प्रकारना मत मतांतर अने जातीना भेद भाव वगर मैत्री भावनो झरो वहावी रह्या छे.

युरोपीअन पारसी मोमेडन हींदु आदी हरेक कोमना मानवो तेओश्रीने एक महान अवतारी पुरुष तरीके स्वीकारे छे अने पूज्य माने छे.

आ महान पुरुषना कृपा दृष्टने मारा मनो मंदिरमां खीलावतां खीलवतां तेओश्रीनी परम कृपा अने अमूल्य वानगी द्वारा भक्ति रसथाळ प्रथम जुदी जुदी द्रष्टिए वांचको समक्ष मूक्यो हतो.

सम्राट काव्य माळा भाग १ लो बीजो भक्ति तरंग अने भक्तिरस काव्यो तथा आत्मचिंतन पदो ए भक्ति रसथाळनी भीन्न भीन्न वानगीओ हती, ते पुर्ण थवा वाद आ "वैराग्य तरंग अने गुरु काव्य गूंजन"मां एकंदरे त्रण विषयो जुदा जुदा स्वरुपे आलेखवामां आव्या छे.

प्रथम वैराग्य पद तरंगमां हरेक जीवात्माने भेदभाव भासे नहि तेवी रीते नाशवंत जगतना वैभवो, चपळ लक्ष्मी, माया अने मोहनां भयानक युद्धो, कुटुंब अने परिवारनी पाछळ पागल बनी अंधदशामां भ्रमण करतो मुसाफीर, जीवन अने मुक्ति, आदी भीन्न भीन्न विषयो द्वारा पदो रची तेना शब्दे शब्दे वैराग्य रस रेडयो छे. जेने एकज वखत वांचवाथी मानवनां रोमे रोम खळभळी उठे. वैराग्य तरंगनीए अणमोल वानगा छे.

द्वीतीय गुरु काव्य तरंगमां गुरु भक्तिनी अखंड ज्योत झळकाववामां आवी छे. गुरु एटले भव समुद्र तरवानी साची दीवादांडी "गुरु एटले जीवन नैयां पार करवानी भक्ति रुप होडी" गुरु एटले आत्मानो साचो मार्गदर्शक "गुरु एटले बळता जीवननी शांत भरी भूमीका" गुरु एटले दुःखन साचो विश्राम "गुरु एटले ब्रह्मा, विश्नु, महेश, महावीर, कृष्ण, क्राईस अने जरथोस्त आदी सर्व गुरुमां ज आवी जाय छे. प्रभु या ईश्वर करतां गुरुने प्रथम द्रष्टिए पूजनीय मनाय छे. कारण के गुरु आत्माना साचा मार्गदर्शक छे. हरेक धर्ममां गुरुपद उंच्च अने जीवन तारक मनाय छे. ए गुरु भक्तिनो अद वैतरस गुरु काव्योमां रेलमछेल वहाव्यो छे जे गुरुभक्तिनी अणमोल वानगी छे.

तृतीय श्री शांतिसूरीश्वर काव्य तरंग आ महान पुरुष के जेओने हुं मारा माण प्रभु तरीके स्वीकारुं छुं ते महान

पुरुषनी त्याग वृत्ति, आत्मधून, विश्वकल्याणनी भावना, आदी विषयोने काव्योमां रची तेओश्री मत्येनी मारी आंत्रिक रोशनी प्रगटावी छे के आ सर्व तेओश्रीनी मारा मनो मंदिरमां रमण करती कृपानो अंकुर छे.

कवीत्व शक्ति शब्दकोष अगर विद्वताना अंश मात्र ज्ञान सिवाय मारा प्राण प्रभुनी कृपापात्रतानोज आ भक्ति रसथाळ छे.

वांचको हर्षथी वांचे अने आत्म मस्तीने खीलावी सत्यना पंथे आ भक्ति रसथाळनी अणमोल वानगीनुं शेवन करी क्षुधा-तुर आत्माने शांतृत्व पहोंचाडी नीरंतर आत्मानुं ज साधे एटली ज अभ्यार्थना.

फतासा पोळ
नवी पोळ
अमदावाद
संवत १९९५
आश्विन कृष्ण

किंकरना जयवंदन

परम कृपाळु श्रीमद गुरुदेव माटे

अभिप्रायो

चमत्कारिक जैन योगी

अठवाडीक गुजराती पंच अमदावाद, ता. ६-१-३६ना अंकमांथी

आबुना जाणीता जैन योगीश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज हालमां मारवाडमां सरस्वती अरण्यमां बीराजे छे. आ योगीराजे एक दिवस एक हजार माणसोने आमंत्रण आप्युं हतुं परंतु पांच हजार माणसो त्यां भेगां थवाथी भोजन करनाराओ फीकरमां पड्या हता परंतु योगीराजे तेमने खात्री आपी हती के रांधेलो खोराक जेटला आवशे ते बधाने पुरो पडशे. आ मुजब ५ हजार माणसोए भोजन कर्या छतां पाछळथी ५०० माणसो धराईने खाय तेटलुं वध्युं हतुं.

आचार्य श्री विजय केसर सूरीजीना अंतिम उदगारो

आत्मोन्नतिकारक वचनामृतोमांथी

पांचमनी सवार थई झाडा बंध थई गया हता. पोते पोताना समुदायने जणाव्युं के आबुथी शांतिविजयजी आवीने मने मळी गया अने तेओए कह्युं छे के हवे जवानी तैयारी करी लो. प्रथम में तेओने एक समय कह्युं हतुं के मारा अंत समये मारी खबर लेजो.

तपस्वी मुनिश्री मिशरीलालजीना आंत्रिक उदगारो

वांचकनी विचारसृष्टी अठवाडीक स्थानकवासी जन अमदावाद तारीख ११-१-३७ मांथी

२५६मा उपवासनी रात्रे मने एक दिव्य प्रकाश देखायो तेमां आबुवाळा योगीराज आचार्यश्री विजयशांतिसू-रीश्वरजी महाराजनां दर्शन थयां तेमणे आदेश आप्यो के तमारी हठ छोडी दई पारणु करो. आथी पूर्ण श्रद्धा थई के गुरुदेवनो जे हुकम छे तेनो कुदरत साथे संबंध छे.

प्रथम ज्यारे आबुथी तारद्वारा ते योगीराज गुरुदेवे पारणु करवानी आज्ञा करी, त्यारे हुं एक विश्वप्रेमी महापुरुष तरी-केनी श्रद्धाथी पर हतो, ज्यारे हुं तेमनी पासे रह्यो, तेमना समागममां आव्यो, त्यारे पण मने संपूर्ण श्रद्धा न हती अने हुं एम समजतो के तेमनो अने मारा धर्म जुदो छे. तेम बीजी अनेक शंकाओ साथे केटलाक माणसो तेमनी विरुद्ध बोलता होवाथी ते पुरुषनी यथार्थतानी मने पुरेपुरी श्रद्धा न हती.

परंतु २५६ मा उपवासे मने तेमनो भास अने प्रकाश थवाथी मारो तेमना प्रत्ये जगतना महात्मा पुरुषो पैकीना एक होवानो विश्वास स्थापीत थयो. अने तेथी तेमनी आज्ञाने कुद-रतनी प्रेरणा समजी में २५८ मा उपवासे पारणु कर्युं छे.

ॐ

कव्वाली

जीवन जादवनाथ मारा, नमन करुं हुं लळी लळीने;
प्राण प्यारा प्रभु अमारा, चरण पडु हुं वळी वळीने. १

आत्मपंथे अजब आंधी, शाम घोर लता छवी;
कर्म दूतो नाच करता, केर काळो करी करीने. २

अगम पंथे प्रयण करवुं, ए वीरोनुं धाम छे;
क्रोध किल्लो तोडवाने, क्षमा कटोरा भरी भरीने. ३

ध्येय मारो एक छे जे, नाम त्हारुं नव भूलुं;
ध्यान त्हारुं नित्य साधुं, भक्ति रसने भरी भरीने. ४

अकळ माया अकळ छाया, अवनवी ज्योती झरे;
अंध नयनो नहि नीरखतां, कर्म कचरो भरी भरीने. ५

परतणुं अंतर दुभावे, एज मोटुं पाप छे;
एज आजे हुं नीरखतो, दिव्य अंजन करी करीने. ६

तार या तुं मार तोपण, तुं अमारो एक छे;
बाळ किंकरदास त्हारो चरण पडे छे वळी वळीने. ७

में मारी जींदगीमां कोई अद्भूत वस्तु जोई होय तो ते योगनिष्ठ महात्माश्री शांतिविजयजी ज छे. तेओ बाह्यतः केवा मामुली देखाय छे, अने ज्यारे पोते वातो करे छे त्यारे एक साधारणमां साधारण माणस बोलतो न होय एम लागे

छे, देखाव पण तेओश्रीनो कुदरती एवोज छे, एटले जगत स्हेजमां भूलथाप खाई जाय छे एमां कांई नवाई नथी. पण मने तो एम लाग्युं के आतो कोई उंच कोटीना महान् आध्यात्मिक ज्ञानना भंडार छे. एवा महान् पुरुषोने आपणे स्हेजे ओळखी शकीए नही. कारण के तेओ पोते योगमां, तेमज आध्यात्मिक ज्ञानमां एटला बधा उंडा उतरेला छे के अढार अढार मास सुधी तेओना पासे रहीने एक विद्वान् माणस पण संपूण समजी शकतो नथी. हालना आटला बधा साधुओमां एओ पोतेज योग क्रिया तथा आध्यात्मिक ज्ञाननी बाबतमां मोखरे छे. " एवा महान् योगीश्वरजीने समजवा माटे महान् शक्तिवाळो आत्मा घणा लांबा टाइमेज कांईक सहेजे समजी शके छे."

आचार्य श्रीमद् विजय केसरसूरीजी

ॐ

महाराज श्रीशांतिविजयजी महाराजना समागममां आववाने तथा तेओश्रीनो उपदेश सांभळवाने हुं भाग्यशाळी थयो छुं. तेओश्री एक उत्तम योगी पुरुष छे, अने तेमनु चारित्र घणी उंची कोटीनुं छे, एवा महर्षिनां प्रवचनो समुदाये सांभळवाथी जेम औषधिथी शरीरनुं दर्द अने मलीनता दूर थई आरोग्य अने निर्मळ बन छे, तेम जन समाजनी मानसिक

मलिनता दूर थई जीवन आरोग्य अने सुखी बने छे. एवा महान पुरुषो आपणामां वधारे अने वधारे थाओ अने तेमना पवित्र जीवन अने आदर्श उपदेशथी जनसमुदायनुं जीवन वधारे नीतिमान अने सुखमय बनो एवी मारी चाहना छे.

महाराजा लखधीरजी, मोरबी

ॐ

योगनिष्ठ मुनि महाराज श्री शान्तिविजयजीना समागममां हुं छेल्ला छ सात वर्षथी आव्यो छुं. ते उपरथी हुं जोई शक्यो छुं के तेओश्री एक उंच्च कोटीना महापुरुष छे. योगाभ्यासथी प्राप्त थती विश्वदृष्टि (Clair doyance) तेओश्रीए मेळवी छे अने तेना बे दाखला मारा अंगत अनुभवथी में जोया छे. तेओश्री सरल प्रकृतिना एक योग–परायण संत पुरुष छे. हुं ईच्छुं छुं के अधिकारी सज्जनो तेमना पवित्र संबंधमां आवी तेमनी आत्मिक उंच्चतानो लाभ मेळवे.

सर दोलतसिंहजी महाराजा, लींबडी

ॐ

में दुनियाना दरेके दरेक देशनी मुसाफरी करी अने घणा घणा महान पुरुषोने हुं मळी छु, अने छेवटमां पूज्य गुरुदेव महाराज शांतिविजयजीने पण मळी. हमारा पाश्चिमात्य लोकोमां एटलुं तो ठीक छे के, हमो बराबर समजीनेज मानीये छीए. अमो अमारा मनने पूजीए छीए के (Doubt) दरेक ...

शुं छे ? मीस मेयोए मधर इन्डीआ नामनी जे बुक लखी छे तेमां लखतां एणे मोटी भूल खाधी छे, कारण के हिंदमां हजीए आवा देवरत्नो छे, तो पछी एणे शुं बुद्धिथी ए पुस्तक लख्युं हशे ? हवे तो हुं एने बराबर जवाब आपीश एटले एनी भूल समजाशे अने जगत सत्य वस्तु सारी रीते समजी शकशे.

(Guruji is a God no doubt)

(गुरुजी परमेश्वर छे, तेमां शक नथी.)

मीस-माइकल पीम

तंत्री, त्रीब्युट हेरोल्ड, (न्युयोर्क)

ॐ

दुनियाना महान् आदर्शमां आदर्श पुरुष होय तो ते एक शांतिविजयजीज छे.

कुदरती शक्तिओ खरेखर पूज्य गुरुदेव शांतिविजयजीनेज प्राप्त थई छे.

जो मनुष्य गुरुजीनो खरेखरो दावो करी शके तो शांतिविजयजी खरेखरा गुरुजी कही शकाय.

लाला लजपतरायना उर्दु वंदेमातरम् पत्रमांथी

ॐ

ओ लोर्ड ! ओ प्रभु ! आपने मळवुं ते आ जगतना तमाम पवीत्र तत्वोने मळवा बराबर छे, आप एक छो ! आप अनंत

छो ! आप शीव छो ! आप कृष्ण छो ! आप देव छो ! आप नीर्गुण छो ! आप सगुण छो ! आप सत्य छो ! आप पवित्र छो ! आप उंच्च छो ! आप सर्वस्व छो ! अने ते सर्वथी पर ते पण आप छो. आपने पुन्य नथी लागतुं तेमज पाप पण नथी लागतुं. आपने ओळखवाने माटे लाखो जन्मनी जरुर छे. जो आपनी कृपा थाय तो स्हेजमां आपने ओळखी शकाय ! आपना जे वचनो छे ते तमाम शास्त्रोनो समावेश छे. आ जगतना कल्याण माटे अद्रश्यथी आप जगतनी चोतरफ दिव्य संदेश पहोंचाडी रह्या छो.

" आप हायर ओफ धी हायर एन्ड गोड ओफ धी गोड छो "

साउथ केनेरा (दक्षिण आफ्रीका)

(ना पत्रमांथी टुंक सार)

धर्माचार्य दर्शननीधी स्वामी रामदास एम. ए.

ॐ

योगीश्री शांतिविजयजीनुं मधुर दर्शन

ए एक उंच्च कोटीना महापुरुष छे छतां बाळकना जेवुं निखालस अने गभरु एमनुं हृदय छे. महात्माओना लक्षण शास्त्रमां तो गमे तेवां लख्यां होय पण बीजे भाग्ये ज जोवामां आवे एवुं बुद्धि अने हृदयनुं विचारबळ अने आवो सरल बाळभाव अने आवो सुंदर समन्वय ए मने तो खरा महात्मापणानुं स्वरुप छे, एम एमना अने मारा परिचयथी मने लाग्युं छे.

ज्यारे ज्यारे हुं एमनी पासे गयो छुं त्यारे त्यारे एमना सानिध्य मगज अने हृदयना भावोनी एकता थई जईने फक्त एमनी सामे जोया करवानी अने एमनुं वक्तव्य सांभळया करवाना भावमात्र सिवाय बीजी कांई वृत्ति उत्पन्न ज थती नथी. दरेक आवनारने एवो भास थई जाय छे एम में जोयुं छे. महात्मा-पणानी एथी विशेष व्याख्या–सामग्री बीजी शुं होई शके ? लोकेषणानी ईच्छाथी तेओ घणा पर छे.......घणा महान् पुरुषोना परिचयमां आववाना प्रसंगो मने बन्या छे, पण एमनुं सानिध्य मने अपूर्व लाग्युं छे. कया अने केटला अभ्यासनुं आ परिणाम हशे ए जो समजाय अने ते प्रमाणे करी शकाय एटली सुगमता जणाय तो तेम करवानुं मन थई जाय एवुं छे.

सर प्रभाशंकर पट्टणी : भावनगर :

ॐ

अलहाबाद, सोमवार
ता. १५ जुलाई १९३५

अलहाबाद लीडर पत्रना
अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजरातीमां ट्रांसलेशन

पाणी तथा भोजननी चमत्कारीक पुरवणी

मारवाडमां आवेल एरणपुरा नजीक बीसलपुर गाममां जैन धर्मने लगती धार्मिक क्रियाओ करवामां आवी हती. (प्रतिष्ठा ओत्सव) जे वखते हजारो जैनो तथा बीजाओए हाजरी आपी हती.

आ प्रसंगे जैन धर्मना ईतिहासमां नोंधवा लायक बनाव बन्यो हतो.

आ नाना गामडामां उनाळाना समये दरेक साल पाणीनी तंगी पडती जेथी आ समये पण आटली वधी मानव मेदनीने पाणी पूरुं पाडवाना उपाय शोधवा माटे गामना लोको चिंतातुर बन्या हता.

आ सर्व क्रियाओ आबू पर्वतनी प्रख्यातीवाळा विश्वोत्पादक, योगीराज, आचार्य सम्राट, जगतगुरु, योगींद्रचुडामणी, गुरुश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराजना शुभ हस्ते थवानी हती. गाम लोको गुरुदेव भगवाननी पासे गया. योगीराजे खात्री आपी के त्हमारे चिंता करवी नहि.

योगीराज वीसलपुरमां पधार्या बाद पाणी पुरुं पाडवानी चिंता संपूर्ण रीते नाश पामी हती अने संभवे नहि तेवी जग्याओए पण पाणीनी भरती थई.

सर्व क्रियानी समाप्ति सुधी अखूट पाणी मळ्या कर्युं. रांधेली रसोईमां गणत्री करतां वधारे मानवीओ आवी जता छतां खूटवाने बदले खोराक वधी पडतो. दरेकने मानवुं पडतुं के आ वध कोई दैवी हाथोथीज थाय छे.

एकत्र थएल मानवसागरे मुर्शीदावादवाळा जगत शेठनी आगेवानी हेठळ जैन धर्ममां युगप्रधाननी महान पदवी छे ते योगीराजने एनायत करी.

दील्ही
ता. ७-१-१९३६

स्टेट्समेन पत्रना अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजरातीमां ट्रांसलेशन

एक अर्वाचीन चमत्कारीक योगी

हीज होलीनेस, योगीराज, जगतगुरु, आचार्य सम्राटश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज मारवाडमां एक सरस्वतीना अरण्यमां विराजे छे. प्रथम ते जगा एक वेरान जंगलरुप हती परंतु गुरु दर्शनभीलाषी हरेक जातना मानवो आववाथी ए भरपुर शहेर जेवुं लागे छे.

एक धनवान वेपारीए ए स्थानमां जमण कर्युं हतुं. जेमां एक हजार मानवना खोराकनी सगवड करी हती परंतु गुरुदेवनां दर्शन माटे सांज सुधीमां पांचेक हजार माणस आवी जवाथी कार्यवाहको मुझवणमां पड्या. परंतु गुरुदेवना आशीर्वादथी तमाम मानवो भोजन करी शक्या अने पछीथी जोतां पांचसें मानव हजु जमे तेटलो खोराक वधी पड्यो हतो.

ॐ

अजमेर
ता. २६-१२-३६

जैन ध्वज पत्रना अंग्रेजी लखाण उपरथी गुजरातीमां ट्रांसलेशन

केटलाक अंग्रेज पत्रोमां जेवा के ईलस स्टेटस वीकलीमां डोक्टर जोसरोड्रीगस पोर्टुगीझ तत्वज्ञानना शोधक छे तेओना

हस्ते श्रीगुरुदेव भगवान महान योगीराज आचार्य सम्राटना विषे नीचेनो लेख फोटा साथे छापवामां आव्यो छे.
(डेली नवयुग दील्ही हीन्दीपत्र ता.१२ जुलाई १९३५ नं.१५९)

महान योगीराज आचार्य सम्राट श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज योगविद्यामां सारामां सारा अभ्यासी छे. योगीओ कुदरती कायदाने अनुसरी केटलाक बनावो बतावी शके छे. जेने साधारण लोको चमत्कार माने छे परंतु ते चमत्कार नथी. योगशक्तिथी अशक्य वस्तुओ पण शक्य बनी शके छे. आगळ चालतां ए पोर्टुगीझ गृहस्थ कहे छे केः—

आथी म्हारा जेवा शोधक तथा पर्यटन करनारा बंधुओनुं सहर्ष आ तरफ ध्यान खेंचु छुं के तेमने सप्रेम सहृदय जोवाथी तथा तेमना आशीर्वाद मेळववाथी विश्व पर्यटननो उद्देश सफळ थशे.

First of all my humble homage and salutation to His Holiness Jagat-guru Acharya Samrat Shri Vijayashantisuriji Bhagvan, the greatest Yogiraj in the world to whose holy feet I present my soul for purification. Raj-yoga or natural yoga is the highest yoga of all the yogas. By direct communion of the individual soul with the universal one Moksha or Salvation can be attained.

By constant devotion or Bhakti to Sad-guru Bhagvan by obeying His orders implicity by loving Him with all your heart then little by little the grace of Sad-guru Bhagvan will be felt in us and the salvation will be realised.

Oh Bhagvan, it takes millions of lives of a soul to know you, through your kindness one can easily recognise you. Your words are the essence of all the Shastras! Universal love is your gospel. You welcome all, irrespective of castes, creeds, cr nationality.

I have personally seen the philosophers and cultured men of the west coming to pay their respect at the holy-feet of His Holiness, the greatest yogiraj in the world.

I therefore gladly draw the attention of all my dear friends, travellers and explores that by seeing with devotion and attaining the benevolence of Sad-guru Bhagvan; all their motto of travelling around the world will be served at this place only.

George Jutzelor.

ॐ

मारुं प्रथम कर्तव्य ए छे के हुं महान जगत गुरु आचार्य सम्राट श्री विजय शांतीसूरीजी भगवान जे दुनीआना मोटामां

मोटा योगीराज छे तेना चर्णोमां मारा आत्माने स्वच्छ बना-ववाने नम्र भक्ति अने नमस्कार पूर्वक धरुं छुं.

राजयोग अगर कुदरती योग ए मोटामां मोटो योग छे. माणसनो आत्मा जो पृथ्वीना आत्मा साथे सीधो सबंध राखे तो ते मोक्ष अगर मुक्तिने पामे छे.

सदगुरु भगवानना उपर अस्खलीत भक्ति अने श्रद्धा राखवाथी अने एना हुकम संपूर्ण अने प्रेमपूर्वक मानवाथी सदगुरु भगवाननी कृपाने पामी शकाय छे अने मुक्ति प्राप्त थाय छे.

हे प्रभु! तने ओळखवाने करोडो जींदगी लेवी पडे छे, परंतु तारी दयाथी तने तुरत ओळखी शकाय छे. तारां वचनो दरेक शास्त्रनुं तत्व छे. भ्रातृप्रेम ए तारु ध्येय छे. तुं दरेकने न्यात, जात के प्रजानो भेदभाव विना मान आपे छे.

में जाते पाश्चिमात्य, मोटा मोटा तत्वज्ञानीओ तथा केळ-वणीकारोने दुनियाना आ मोटा योगीराजना चर्णोमां नमस्कार करता जोया छे.

आथी करी हुं सफर करनारा मारा दरेक मित्रो, तथा शोधकोनुं आनंदपूर्वक ध्यान खेंचु छुं के सदगुरु भगवाननी भक्ति अने परोपकार वृत्तिने पामवाथी एमनो दुनीयामां सफर करवानो ध्येय परीपुर्ण थशे.

ज्योर्ज ज्युट जेलर

अनन्य शरणना आपनार एवाश्री सदगुरु भगवानने
त्रिकाळ नमस्कार हो !

विश्वनी महान विभूतीओ
जीवननी आदर्श रुपरेखा

शार्दूलविक्रडीत छंद

जेने मनथी मोह मान मार्यां तेने सदाये नमु,
जेने मनथी काम क्रोध बाळ्यां तेने सदाये नमु;
जेने मनथी राग द्वेष काढ्या तेने सदाये नमु,
जेने मनथी सर्व एक जाण्या तेने सदाये नमु.

ॐ

भारत वर्षमां हजु पुन्यनो प्रकाष छवायो नथी, परंतु तेना चीरस्मरणीय ईतिहासने उज्वळ बनावे तेवा दिव्य पुरुषो हजु भारतना भाग्यवंत मीनारे यशस्वी छे.

"धन्य हो ! ए पुण्यवंत वसुदेवी माताने अने"
"धन्य हो ! ए पुण्यात्मारायका श्री भीमतोलाजीने"

अहो ! मरुधर देशनी पवित्र भूमिमां आजे एक अलौकिक तान मची रह्युं छे. एना आंगणे आजे एक दिव्य प्रेमनो सागर उभरायो छे. विश्वना चारे खूणामां वसता मानवो ए सागरमां स्नान करवा आनंद मुग्ध बन्या छे. केटलाक स्नान करी पोताना आत्माने पवित्र बनावे छे तो केटलाक लांबा समयनी तृषा छीपावी हृदयने संतुष्ठ करे छे.

अरे ! आवी अदभूतता बतावनार महान विभूती कोण छे ? एना नामथी भारत वर्षमां आजे कोईपण अजाण नथी.

तेओश्रीनुं शुभ नाम तिर्थरुप, महान योगीराज, परम कृपाळु, गुरुदेव श्रीमद् विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज अने तेओश्रीना गुरु तपस्वी महात्माश्री तिर्थविजयजी महाराज अने तेओश्रीना गुरु योगेंद्र महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी महाराज.

जैन धर्म ए विश्वनो ज धर्म छे. भगवानश्री महावीरे जगतना कल्याणार्थेज आत्म रोशनी प्रगट करी हती. भगवानश्री महावीरना काळ धर्म बाद जैनेतर प्रजामांथी ज जन्मेल महात्माओए जैन धर्मनी विजय पताका लगाडी छे.

जेवा के....हरीबळ मच्छी ज्ञातीना चंडाळ हता, मेतारज मुनी ज्ञातीना ढेड हता, सिद्धसेन दिवाकर,

बपभट्टसूरीजी, कळीकाळ हेमचंद्राचार्य आदी अन्य ज्ञातिमांथी जन्मेल महात्माओए जैन धर्मने देदीप्यमान बनाव्यो छे.

प्रस्तुत कथन मुजब आ विभूतीओनी संस्कृति चाली आवे छे. गुरु–गुरुना गुरु–अने दादा गुरुए आहिर (क्षत्रिय) कोममां जन्म धारण कर्यो हतो. दादागुरु महान प्रभावशाळी अने समर्थ आत्मज्ञानी हता. तेओश्रीनी जीवन कथा अति अदभूत छे तेनो टुंक ईतिहास हुं आ स्थळे मुद्रित करुं छुं.

योगेंद्र महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजीनो उज्वळ जीवन परिचय

आजथी एक सैका पहेलां जोधपुर प्रदेशमां जसवंतपुरा परगणामां आवेल। गाम मांडोलीमां एक रायकाश्री दरजोजी करीने वसता हता. मांडोली गाममां जैनदेरासर अने उपाश्रय विगेरे आवेलां छे. दरजोजीने प्रजामां एक कोळोजी करीने पुत्र हतो. पोताना कुटुंबमां आ पुत्रने जीवंत मुकी दरजोजी देहोत्सर्ग पाम्या हता. कोळोजीनो जन्म संवत १८४८ ना असाड सुद १५ ने रोज थयो हतो. कोळोजीने बाल्यवयथीज ईश्वरभजन अने प्रभु भक्ति उपर महान श्रद्धा हती. ज्ञातीना आहिर होई जीवननिर्वाहनुं साधन ढोरोना पालण पोषण उपर ज हतुं. कोई कोई समय जंगलमां ढोर चरतां मुकी ईश्वर-भजन थतुं श्रवण करवामां आवे तो तुरतज तेओ ते तरफ

चाल्या जता. भजननी पुर्णाहुती ना थाय त्यां सुधी त्यांथी पाछा फरता नहि तेमज ढोरोनी जरापण चींता करता नहि परंतु प्रभुभक्तिमां ज शुद्ध हृदये तलीन बनता.

एक समय मारवाडमां एवो सख्त दुकाळ पडयो के अन्न-पाणी अने ढोरोने घास आदी मळवुं मुश्केल हतुं तेवा समये तेओ उचाळो करी देशाटन करवा निकळी गया, साथमां केट-लांक ढोर हतां ते खतम थई गयां अने प्रजामां एक बे वर्षनो पुत्र जेनुं नाम वेलराज हतुं ते जीवंत रह्यो. फरतां, फरतां, तेओ पुना पासे आवेला चोक गाममां आवी पहोंच्या. ते गाममां मारवाड प्रदेशमां आवेल थूळ गामना रहीश एक जैन गृहस्थ जसाजी करीने रहेता हता तेओने त्यां ढारोनुं पालन-पोषण करवा कोळोजी पुत्र साथे नोकर तरीके रह्या. तेओनी अपूर्व प्रभुभक्ति निहाळी शेठे कोळोजीने नवकार मंत्र शीखव्या हता. कोळोजी हरेक समय ते ध्यानमां तलीन रहेता. नोक-रीनां त्रण वर्ष पुरां थतां दरम्यान एक समय पोताना पुत्र वेल-राजने जंगलमां सर्प करडयो, करडतांनी साथेज पुत्र मरणने शरण थयो. कोळोजी ए पुत्रने खोळामां लईने एक वृक्ष नीचे बेसी गया अने अंतरमां एवी प्रतिज्ञा करीके आ पुत्र सजीवन थाय तोज मारे अन्नपाणी गृहण करवां, नहितर नवकार मंत्रना ध्यानमां लय थई मारा देहनो मारे पण त्याग करवो.

आ प्रतिज्ञाथी छुटवाने माटे घणा घणा लोकोए तेओने

समजाव्या, अने एम करतां त्रण दिवस पुरा थवा आव्या. त्रीजा दिवसना उपवासे पोताना ध्यानना प्रबळ प्रतापे कोई देव महात्मानुं रुप धारण करी प्रत्यक्ष आवी उभा, तेओए पण कोळोजीने पोतानी प्रतिज्ञा छोडवा बाबत हरेक कसोटी कर्या बाद पुत्रने हाथ फेरवी सजीवन बनाव्यो. तुरत ज कोळोजीए पोताना पुत्रने महात्माजीना खोळे मूक्यो अने कह्युं के आप एना जीवन पाळक बन्या माटे आप एने साथे लई जाओ. नवकारमंत्रना ध्यान मात्रथी ज्यारे मारो पुत्र सजीवन बन्यो तो ते मार्ग मने आप बतावो के जेथी साधु जीवन प्राप्त करी हुं मारा आत्मानुं श्रेय करुं.

महात्माश्रीए प्रत्युत्तर आप्यो के आ पुत्रने तमो कोई साधु अगर यतीने वोरावी देजो अने तमो पण अमुक समय बाद जैन दीक्षा अंगीकार करशो अने आ जगतमां एक ईश्वरी अवतार तरीके पूजाशो एवो मारो तमने आशीर्वाद छे.

तुरतज महात्माश्री अद्रश्य थईगया बाद कोळोजीए त्रण उपवासनुं पारणुं कर्युं. चारेक मास पछी पुत्र वेलराजने मुंबाईमां एक यतीजीने वोरावी दीधो. जेओ वेलजी यतीना नामथी पालणपुर पासे आवेल गाम मंडारमां मशहुर हता. वेलजी यती आजथी चारेक वर्ष उपरज गाम मंडारमां काळ धर्म पामी गया छे. पुत्र वेलराजने वोराव्या बाद कोळोजी साधु जीवन प्राप्त करवानी धगशमां खंडालाना घाटमां फरता हता.

एक समय तेओए एक वृक्ष नीचे आसन स्थिर वनी एवी प्रतिज्ञा करी के कोई मने साधु बनावे तोज मारे आ स्थान छोडवुं. त्रण दिवसना उपवास पुर्ण थतां पोतानी प्रतिज्ञाने फळीभुत करवा एक मणीविजयजी नामना साधु मळी आव्या. तेओनी पासे कोळोजीए संवत १८७२ ना महा शुद पांचमने रोज जैन दीक्षा अंगीकार करी अने त्यारथी तेओनुं नाम मुनी महाराज श्री धर्मविजयजी स्थापित थयुं. महाराज श्री मणीविजयजी मळया तेमां पण कुदरतनो ज संबंध हतो.

खंडालाना घाटमां अमुक समय व्यतीत कर्या बाद महाराज श्री धर्मविजयजी पोताना जन्म स्थान गाम मांडोलीमां पधार्या. अज्ञान अवस्था होवा छतां तेओश्रीने कुदरती ज्ञान संपादन थयुं. तेओश्री एटला बधा शक्तिशाळी पुरुष हता के एक स्थान पर बिराजमान होवा छतां एकज समये जुदा जुदा स्थानोमां दर्शन आपी शकता हता. जेठ मासना सख्त तापमां पहाडमां टेकरीनी टोच उपर धीख धीखती शील्ला उपर आसन स्थिर बनी बपोरना बारथी चार सुधी ध्यानस्थ दशामां खुल्लां नयनो राखी सूर्यनां कीरणो चक्षु द्वारा ग्रहण करता हता. सख्तमां सख्त ठंडीमां नदी भाठा विगेरे स्थळोमां रात्रीनी रात्रीओ ध्यानस्थ दशामां पसार करता हता. एक समय एवो अभीग्रह कर्यो हतो के हस्ति गोचरी वोरावे तोज आहार करवो, बे मासना उपवास पूर्ण थया बाद पोताना अद्भूत आत्मबळथी जयपुरना बजारमां जई चढया. एक हलवाईनी दुकान पासे

गांडो हस्ति सामेथी आवतो हतो, तेने हलवाईनी दुकानमां सूंढ नांखी मोदक लीधो के तुरत ज गुरुश्रीए सन्मुख पातरुं धर्युं अने हस्तिए मोदक वहोराव्यो, बाद तेओश्रीए पारणुं कर्युं.

एक समय रामसीणगामथी विहार करी आगळ विचरता हता, जेठ मासनो समय हतो, साथे घणां ज माणसो हतां रस्तामां सख्त गरमी होवाथी साथे आवेल माणसो तृषातुर बन्यां आसपास पहाड अने जंगल होई पाणी मेळववानुं कंई पण साधन हतुं नहि जेथी माणसो गभरावा मांड्यां. जमीनमां एक वावडो करावी गुरुश्रीए पोतानी पासे तरपणीमां थोडुं पाणी हतुं तेमांथी थोडुं वावडामां पाणी नांख्युं अने ते उपर कपडुं ढंकावरायुं, तुरत ज जलाशय लब्धीना प्रभावथी वावडामां पाणी भरायुं ने हरेक माणसो पोतानी आंतर तृषा छीपावी शांत बन्यां.

नवकारमंत्रना ध्यानथी ज तेओश्रीए सर्व सिद्धिओ प्राप्त करी हती.

नवकार केरा मंत्रथी ए सर्व सिद्धि पामीया
नवकार केरा मंत्रथी ए आत्मरसमां जामीया
नवकार केरा मंत्रथी ए वीर थईने म्हालीया
नवकार केरा मंत्रथी ए परम पदने पामीया

एक समय गुरुश्री रामसीणमां विराजता हता, चैत्र सुदि पूर्णिमानो दिवस हतो, सवारना दश वाग्या बाद जंगलमां

ध्यानमां पधारी गया हता, अने सांजना चार वागतां गाममां पाछा फर्या हता. तेज दिवसे रामसीण गामना केटलाक श्रावको पालीताणा यात्रार्थे गया हता. तेओए डुंगर उपर आदीनाथ भगवाननां दर्शन करी वहार निकळतां वृक्ष नीचे गुरुश्रीने जोई वंदन करी प्रश्न कर्यो के बावजी आप क्यारे पधार्या.

तेना पत्युत्तरमां ॐ शांतीनो जवाब मळयो. तेज दिवसे ते श्रावकोए रामसीण पत्र लखी दर्शाव्युं के आजरोज अत्रे डुंगर उपर गुरुश्रीनां दर्शन थयां छे तो गुरुश्री रामसीणमां छे के विहार करी गया छे. तेनो जवाब एवो मळयो के चैत्र सुद पूर्णिमाना रोज गुरुश्री सवारना दश वाग्या वाद जंगलमां ध्यानमां पधारी गया हता, ते सांजना चार वागे गाममां पाछा फर्या हता अने हाल अत्रे बिराजमान छे. आवी रीते तेओश्री पोताना आत्मबळ द्वारा अनेक स्थानोमां जई शकता हता. मृत्युना बिछाने सूतेला मानवो तथा असंख्य मुंगां प्राणीओने अभयदान आपी बचावता. मात्र आशीर्वादथी असंख्य मानवोने पावन बनाव्या छे. तेओश्रीना जीवन सबंधमां घणा ज अद्भूत अने अलौकिक दाखलाओ छे के जेनो लखवाथी पार आवी शके तेम नथी.

मृत्युनो समय पण एक मास अगाउथी जाहेर कर्यो हतो, अने दर्शाव्युं हतुं के मारा मृतदेहने जे जगाए अग्निसंस्कार

करो ते जगाए पालखीनी आजुबाजु चार लीमडाना सुका खूंटा दाटजो, अग्नि प्रगटाववानी जरुर नहि पडे, शरीर उपरनां उपकरणो, ओघो, मुहुपत्ती, कपडां विगेरे तथा पालखीनी धजा अखंड रहेशे. मात्र आ शरीरे जेवी रीते जन्म धारण कर्यो छे, ते शरीर ज बळीने भष्म थशे.

चार लीमना जे खूंटा दाटशो ते पण बळशे नहि, परन्तु अखंड रही भविष्यमां चार लीमडानां वृक्ष थशे.

म्हारा काळधर्म बाद भविष्यमां कोई महान आत्मा मारी पाछळ थशे त्यारे एक लीमडानुं वृक्ष अद्रष्य थई जशे.

प्रस्तुत हकीकत मुजब संवत १९४९ ना श्रावण वद छठने रोज प्रभातमां तेओश्री काळधर्म पामी गया. सहस्रगण्य मानवो जातिना भेदभाव वगर तेओश्रीनी पालखीने अग्निसंस्कार माटे जंगलमां लई गया. चार लीमडाना खूंटा दाटी वचमां गुरुश्रीना मृतदेहनी पालखी विराजमान करवामां आवी अने पालखीनी आसपास चंदननां लाकडां गोठववामां आव्यां. ईन्द्रमहाराजाए पण ते समये अतिवृष्टि करी के जळनो पार रह्यो नहि. अग्नि आपोआप जमणा अंगुठामांथी प्रगट थई, शरीर उपरनां उपकरणो पालखीनी धजा अने जमीनमां दाटेला चार लीमना खूंटा विगेरे अखंड रह्यु. मात्र शरीरज बळीने खाख थयुं. उपकरणो अने धजा लोको प्रसादी रुपे लई गया. चार लीमना सूका खूंटानां भविष्यमां लीमडानां वृक्ष थयां.

गुरुश्रीना देवलोक पाम्या बाद जे जगाए अग्निसंस्कार करवामां आव्यो हतो त्यां दाटेला चार लीमडाना खूंटाना चार वृक्षा थया. गुरुश्रीनी देरी मांडोली गामना पाळे करवामां आवेली छे जे देरीमां गुरुश्रीनां चरण पधरावेलां छे. ज्यारे गुरुश्रीनी देवलोक पाम्यानी तिथि आवे छे त्यारे त्यां मोटो मेळो भराय छे, ज्यां सहस्रगण्य मानवो दर्शनार्थे उलटे छे. दर्शन करवा आवनार हरेकने मांडोली गाम तरफथी दर साल जमण अपाय छे. ते दिवसे प्रभातमां गुरुदेवना चरणमांथी अमूक समय गंगाजळ वहे छे अने ते दिवसे तेओश्रीना शिष्यना शिष्य गुरुदेवश्री विजयशांतिसूरीश्वरजी ज्यां बिराजमान होय त्यांथी आखा दिवसमां कोईकने दर्शन आपे छे.

मांडोली गाम तथा तेनी आसपासना गामना मानवो गुरुदेव भगवानना चरणने महान देव तरीके पूजे छे. कोईक समय गुरुदेवश्रीए देवलोक पाम्या बाद तेओश्रीना परमभक्तोने दर्शन पण आप्यां छे.

उपरनी तमाम वस्तु स्थिति हाल मोजुद छे. मात्र एक लीम हाल अदृश्य थइ गयो छे. अहो ! पारसमणी पोतानी पूर्ण ज्योत आ भूमिमां प्रकाषी रही छे. तेओश्रीना अगाध गुणोनुं वर्णन तथा दिव्यताने पार पामी शकाय तेम नथी. गुरुदेव भगवान् श्रीमद् धर्मविजयजीना शिष्य तरीके महान तपस्वी महात्माश्री तिर्थविजयजी थया. तेओश्री पण ज्ञातीना

आहिर हता. जन्मस्थान गाम मणादर हतुं. तेओश्रीए आखुए जीवन तपश्चर्यामां ज पूर्ण कर्युं हतुं. संवत १९८४ ना फागण सुद आठमना रोज मारवाडमां आवेल गाम मूडोतरामां तेओश्री काळधर्म पामी गया छे. तेओना शिष्य तरीके गुरुदेव श्रीमद् विजयशांतिसूरिश्वरजी पोतानो दिव्य प्रकाष आजे विश्वनी चोतरफ फेलावी रह्या छे.

ॐ

गुरुदेव भगवंत श्रीमदविजयशांतिसूरीश्वरजीनो

झळकतो जीवन दिपक

जन्म स्थान अने समय

जन्म समय संवत १९४५ना माघ शुद ५ ए वसंत पंचमीनो शुभ दिवस हतो. वसंतनी दिव्य प्रभाते आ वीरात्माए जन्म धारण कर्यो छे.

जन्म स्थान गाम मणादर

उषानी मंदमंद शितळ ल्हेरो अने झरमर झरमर प्रवाह रेली हती. मोर अने बपैयां तेना हृदयभेदक सूरोथी मधुरा टहुकार करी रह्यां हतां. मुरघो प्रभातना छेल्ला रणकारथी मानवने जाग्रत करतो हतो. सन्नारीओ पोतपोतानी सखीओ साथे जळ भरवा कुवा तरफ सीधावती हती. वसंतनो तहेवार होवाथी आसपासना मानव समूहमां आनंदनां स्मित उभरायां हतां.

आहिरना वास तरफ नयनो फेरवीए

आहिर एटले क्षत्रिय कोम गणाती. पूर्व समयना ईतिहासो विचारीए अने हिंदुस्ताननी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थितिनो ख्याल करीए तो श्री कृष्णना समयमां क्षत्रियोज गौमातानुं पालन करता हता अने तेओ राजवंशी कहाता. लांवा समये परीवर्तन थवाथी रुढवाद पकडायो अने आजे ए क्षत्रिय कोमना ज वंशवारसो रायका अने आहिरना नामथी ओळखावा लाग्या. दीर्घ अवलोकन करवामां आवे तो ए क्षत्रिय कोमना ज वंशवारसो छे.

आहिरना वासमां प्रभातनो समय होवाथी स्त्रीओ छाणवासीदु साफ करी रही हती, त्यारे केटलाक गौमाता अने भेंशोने दोई दूध संकेलवाना कार्यमां गुंथाया हता.

सूर्यनारायण पण पोतानो प्रकाष फेलाववा मधरा मधरा किरणो फेंकी रह्यो हतो. पो फाटवाना समयमां रायकाश्री भीमतोलाजीना आंगणे धीमी धीमी गरबड शरु थई. आसपासना घरमांथी स्त्रीओ एकत्र थई गई अने टुंक समयमां ज वधामणी फरी के वसुदेवीनी कुक्षीए एक पुत्र रत्ने जन्म सांपड्यो छे. साधारण रीते विचारवामां आवे तो युगनो एवो प्रभाव छे के हरकोई ज्ञातना मानवने त्यां पुत्र जन्मे तो आनंदनी वृष्टि थाय छे. तेवी ज रीते आहिरना वासमां आजे आनंदनी सीमा न हती. ए पुत्रनी अदभूत क्रांती, चकोर

नयनो, अने शूरातन तेनी साथे ज जन्म्यां होय तेवी तेनी बालचेष्टा हती. पुत्रनां आवां उत्तम लक्षणो अने सौन्दर्यता नीरखी माता पीतानो प्रेम ए पुत्र उपर अवधि हतो. माता तेना आत्माने घडीभर ककळावतां नहि, परंतु तेनी रडवानी चीस श्रवण करवामां आवे तो बेबाकळां बनी जतां अने अति लाड भाव साथे साचो मातृप्रेम वहावतां. मातापीताना अगाध प्रेम साथे बाल्य वय खीलतां ए पुत्रनुं नाम शुभ दीने सगतोजी पाडवामां आव्युं. तेओनुं नाम सगतोजी होवा छतां घणाज मानवो तेओने संतोकीयाना नामथी संबोधता.

ज्यारे सूर्यनारायण प्रकाष फेंके छे त्यारे तेनी भव्यता अजायब भासे छे. चंपाना वृक्षने फुल आवे छे त्यारे तेनी उत्तम म्हेंक नाशीकाने वासमुग्ध बनावे छे. तेवीज रीते सगतोजीनो जीवन दिपक झळकवा मांडयो.

सगतोजीनी अपूर्व क्रांती, जीवननी अजायब चकोरता, हास्यवदन अने दिव्य नेत्रांजनो अजाण्या मानवीना अंतरने हर्ष मुग्ध बनावतां.

पांच वर्षनी वय सुधी अती लाडभाव अने अगाध मातृप्रेममां उछरतां मातापीतानी साथे जंगल अने वनवृक्षोनी घनघोर घटामां ज जीवन पसार थयुं. मातापीताना उदरनिर्वाहनुं साधन गौमाताना पालण पोषण उपरज हतुं.

वनवृक्षोनी अपूर्व रमणियता अने आबोहवामां कलोल करतां सगतोजीनुं गभरु बाल्यजीवन धीमे धीमे खीलतुं गयुं. एक युवान वये पहोंचेला मानव जेटली बुद्धिमता तेओमां खीली उठी.

पुत्रनां लक्षण पारणामांज हाय तेमज हीरो कदापि पोताना तेजथी चलायमान रहे नहि तेवी रीते सगतोजीनुं आत्मकमळ खीलवा मांडयुं.

"सगतोजी भावीमां कोई विरात्मा थशे तेनी कल्पना पण ते समये केम घडी शकाय?"

"आहिरने त्यां जन्म धारण करनार पुत्र माटे आभावना पण केम रखाय?"

संसारना परीतापमां, कंई मानवी पटकई मुआ,
संसारना परीतापमां, कंई मानवी झकडई मुआ;
संसार खारो झेर छे, माया तणो ए म्हेल छे,
ए सर्वमांथी छुटवुं, ए वीर नरने स्हेल छे.

भावीना भणकारा

आठ वर्षनी वये पवित्र वनवृक्षनी छायामां घूरतां घूरतां पहाडो अने गीरीगुफाओ सामे सगतोजी पोतानां चकोर नयनो तलसात्री रह्या हता, बुद्धिमता तेनुं पूर्णबळ अजमावी रही हती, वीरबळ जीवनने हचमचावी रह्युं हतुं, भावीना भणकारा मंद-

मंद लहेरो प्रसरावता हता, अने भावीमां बनवाना वीर पुरुषनी झांखी भास आपती हती.

वनवृक्षोनी घनघोर घटा अने गीरी गुफाओ सामे नयनो घूरावतां सगतोजीना आत्मामां कोई अनेरु भान थयुं. हुं कोण छुं? ए विचारो आत्म मंदिरमां प्रवेश्या अने आ असार संसारनी नाशवंत मायानो त्याग करी आत्म ध्यान तरफ जीवननी ज्योत प्रकाषवा मांडी.

पूर्वना प्रबळ संयोगे महात्माश्री तिर्थविजयजीनो संसर्ग थयो. तेओश्री संसारीकपणाना सगा काका थता हता. महात्माश्री आ गभरु युवान बाळना दिव्य विचारो अने बुद्धिमता निहाळी चकित बन्या अने घडीभरने माटे विचारमां पड्या.

सगतोजीए पोतानो आत्म निश्चय नियत कर्यो के येन केन प्रकारे आ फानी दुनिआनो त्याग करी आत्मज्योत झळकावी आत्मानुं श्रेय करवुं, ए विचारश्रेणीमां जीवनने प्रवेश्युं अने मातापीताने पोताना विचारोथी वाकेफ कर्या.

मातापीता सगतोजीना आवा उदगारो श्रवण करी वेबाकळां बनी गयां. नयनोए अश्रुनी रेली करी, अने पुत्रनी मोहांधताए जीवनने स्तब्ध बनाव्युं. घणी रीते पुत्रने समजावबा प्रयत्नशील बन्यां, परंतु जेना माटे भावी प्रबळ शक्ति अजमावी रह्युं होय त्यां मानवनुं शुं चाले?

आ प्रेमनी धारा छुटे, आजे नयनमांथी प्रभो,
आ हेतनां हैयां ध्रूजे, आजे हृदयमांथी प्रभो;
ओ! पुत्र त्हारा स्नेहना, सागर हवे खाली थशे,
ओ! पुत्र त्हारा मोहना, माळा हवे भागी जशे;
ओ! पुत्र त्हारी घेलछा, माता पीता नव सही शके,
ओ! पुत्र त्हारी बाल्यातानांओजसो उभरई जशे.

अहो! कीरतार मायाना बंधननी पाछळ जगतनां सर्व मानवो मोहांध बन्यां छे के ए मोहनी धारा मानवना मनोमंदिरने अश्रुपात करावे तेमां शुं नवाई? माता पुत्रनो मोह केम तजी शके?

चक्रवर्ती होय के वासुदेव होय, राजा होय के राणो होय, श्रीमंत होय, के निर्धन होय, परंतु मातानो प्रेम पुत्र उपर तो एकज सरखो होय.

सगतोजीनां मातापीता अती अश्रुनी धारा रेली रह्यां छे. पुत्रनी भावीनी विचारश्रेणी श्रवण करी मोहनीमां वेवाकळां बन्यां छे अने रडता हृदये प्रभुने प्रार्थना करे छे केः—

ओ प्रभु! आ पुत्रनी वियोगता केम सहन थशे!
ओ प्रभु!—आ गभरु बाळनी लाडभावना केम वीसराशे!
ओ प्रभु! आ लाडका पुत्रनी अधीरता केम भूलाशे!
ओ प्रभु! आ पुत्रना अंतरने आप जरा पण कुमळु नहि बनावो?

हती, अने तेओश्रीने लई रामसीण गामनी प्रतिभा सारी वखणाती.

ठाकोरश्री जोरावरसिंहजीने पोताने बेसवानो एक मुख्य घोडो हतो ते घोडा उपर बेसवानी सगतोजीनी खास मांगणी हती. गामना पंचोए ठाकोर साहेबने प्रस्तुत हकीकत भाव-भीना अंतरे दर्शावी. ठाकोर साहेबे पण एक आहिरना पुत्रनी साधु अवस्था गृहण करवानी तालावेली अने उंच भावना निहाळी पोताता हृदयना भावथी पंचोने जणाव्युं के घणी खुशीथी आप ए घोडाने लई जाओ.

ठाकोर जोरावरसिंहजीनो घोडो आव्या बाद सगतोजीना वायणानी शरुआत थई. घोडा उपर अती हर्ष साथे खेलतां खेलतां वायणाना दीननी पूर्णाहुती थतां एकवीस दीवस सुधीनी वायणानी कार्यवाही उत्साहनी अवधि साथे पूर्ण थई.

भागवती दीक्षा

रामसीणगामनी अंदर आ शुं थई रह्युं छे ?
आ भव्य तैयारीओ शाने माटे थई रही छे ?

बहारथी आवतो हरेक मुसाफीर आ भव्यता सामे नयनो तलसावी रह्यो हतो. एटलुं ज श्रवण करवामां आवतुं के एक आहिर कोममां जन्मेल गभरु युवान भागवती दीक्षा गृहण करवाना छे तेनी आ अपूर्व तैयारीओ चाली रही छे.

विश्वनी महान् विभूती

परमकृपाळु, महानयोगीराज, गुरुदेव

श्रीमद् विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज.

रामसीण गामनां पण पुरां पुन्य कहेवाय के आहिरनो एक गभरु युवान एना आंगणे भागवती दीक्षा अंगीकार करे.

मानवनी भरती

रामसीण गामनी पाधरे आजुबाजुना गामोमांथी असंख्य स्त्रीपुरुषोनी मानवमेदनी उल्टी पडी. हरेकना मुखेथी एकज अवाज नीकळतो के अहो ! केवो पुन्यवान आत्मा हशे के आहिर कोममां जन्मेल युवान दीक्षा अंगीकार करशे ! आवा भाव भीना उदगारो साथे असंख्य मानव रामसीणमां प्रवेशवा मांडयां.

अट्ठाई महोत्सव स्वामी वात्सल्यनां जमण वीवीध प्रकारनी पुजाओ भणावतां दीक्षानो दिवस आवी गयो.

दीक्षा समय

संवत १९६१ ना माघ सुद ५ वसंत पंचमीनी प्रभात थई. रामसीण गाममां आजे उत्साहनो धोध वृष्यो हतो. सूर्यनारायण पण पूर्ण स्वरुपे प्रकाशवा मांडयो, स्त्रीपुरुषो रंगबेरंगी आभूषणोथी सजीत थयां. नानां बाळकोने द्रव्यालंकार अने सुशोभीत वस्त्रोथी शणगारवामां आव्यां, वृद्ध मातापीताओ पण पोत पोताना वेषमां तैयार थई चूक्यां, वाजींत्रो अने ढोलना गगन भेदी रणनादो गाजी उठया, गामनी चोतरफ घोषणा फरी वळी के वरघोडो नीकळवानी हवे तैयारीओ छे. सगतोजीने पण कीमती आभूषणो अने अलंकारोथी सजवामां

आव्या, कारण के संसारीक भावना पूर्ण करवानो आ छेवटनो ज प्रसंग हतो. सगतोजीना ललाटे कुमारीकाना शुभ हस्ते तिलक करावी अक्षत दाबवामां आव्या, कंठे भव्य पुष्पोथी गुंथेल पुष्पहार सुहाववामां आव्यो अने बंन्ने हस्तनी हथेलीओ वच्चे श्रीफळ अने चांदीनाणुं मूकी पासे सजीत करेल भव्य शीबीकामां बीराजमान करवामां आव्या. खोळा पासे चांदी-नाणुं अने बदामोनो ढग करवामां आव्यो अने श्री जीनशासन देवनी जयना गगन भेदी जयनादो साथे वरघोडो शरु थयो. मानवमेदनी एटली बधी उभराई हती के सूर्यनारायणनो प्रकाश पण मंद दीसतो हतो. सगतोजी चांदीनाणुं अने बदामोनी वृष्टी करतां हास्यवदने मानवसमूहना पुर सामे पवित्र नयनो फेंकी रह्या हता. गामनी चोतरफ फरी वरघोडो उपाश्रय नजीक आवी गयो. शीबीकामांथी उतरी सगतोजी देरासरमां दर्शन करी उपाश्रयमां आवी गया.

वांचक महाशय! घडीभर विचारजो! हुं प्रथम लखी चूक्यो छुं के पुत्रनां लक्षण पारणामांथी ज होय तेमज हीरो कदापी तेना तेजथी चलायमान थाय नाह, ए कथन अनुसार एक समयना रायका श्री भीम तोलाजीना पुत्र आठ वर्ष सुधी वनवृक्षोमां ढोर साथे फरता हता ते पुत्र सगतोजी आजे सोळ वर्षनी युवान वये भागवती दीक्षा अंगीकार करे छे. जन्मदीन पण वसंत पंचमी हतो अने दिक्षा पण तेज वसंत पंचमीना

चडता पहोरे गृहण करे छे. जन्म अने दीक्षानो एकज दीन नीरखवामां आवे ए पुन्यनी नीशानी नहि तो बीजुं शुं मनाय?

गुरुश्री तिर्थविजयजी पासे सगतोजी आव्या अने जीनेश्वर भगवाननी प्रतिमाने प्रदक्षीणा फरतां भागवती दीक्षानी वीधी शरु थई. अमुक समय बाद वीधी पुरी थतां सगतोजीने स्नान अने पंचमुष्टी लोच करवा लई जवामां आव्या.

शीबीका परथी भूमी पर उतरे,
मदमाया मोह मने विसरे;
शुभ वस्त्र सज्यां नीज देह परे,
अलंकार तजी सहु दूर करे. १

हुं कोण? अने क्यांथी उपन्यो,
ए भान पळेपळ याद करे;
मुज ज्ञात नथी मुज तात नथी,
मुज मात नथी हुं एक खरे. २

गुरु चर्ण पडी वीधी सर्व करी,
शीर लोच चूंटी शुभ वेष धरे;
सहु माफ करो सहु माफ करो,
नहि वेर अने नहि खेद अरे. ३

सभी जीव क्षमा आपो मुजने,
हुं सर्व जीवोने खमावुं अरे;

शुभ वेष सजी प्रभु वीर तणो,
हुं वीर पणुं राखीश खरे. ४

कदी कष्ट पडे मृत शीर परे,
पण शांती कदी न तजीश अरे;
निर्जर वनवस्ती प्रदेश महीं,
मुज आत्मतणुं साधीश खरे. ५

हुं संत बनुं हुं संत बनुं,
संयम व्रत भार वहीश हवे;
दृढ निश्चय भीष्म करुं मनथी,
दुःखथी नहि पीछ करीश हवे. ६

ॐ

शार्दूल विक्रडीत छंद

अंगे वस्त्र सजेल सर्व मूक्यां, आभूषणो अंगथी,
मायाने ममता बधी मन तजी, साधुत्वना रंगथी;
मानवपुर उभयां अती नीरखतां, अश्रु नयनथी वहे,
क्यां ए आहिर पुत्र आज साधु, संन्यास पदने वरे;
संयम भार उठाववो कठीन छे, खांडा तणी धार छे,
कायर नरनुं काम नहि अरेरे, वीरला तणी पार छे;
आशीष आपे वृद्धजन मुखेथी, कल्याणकारी थजो,
वीर बळनी हाकल करी जगतना, कल्याणकारी हजो.

सगतोजी ए पहेरेलां वस्त्रो आभूषणो उतारी स्नान पंच-मुष्टी लोच आदी करी गुरुश्री तिर्थविजयजीना शिष्य तरीके भागवती दीक्षा अंगीकार करी साधुवेष गृहण कर्यो अने गुरुए शिष्य तरीकेनी वासक्षेप शीर उपर नांखी तेओश्रीनुं नाम मुनी महाराज श्री शांतिविजयजी स्थापित कर्युं.

एकत्र थएल मानव समूहे घडी भर प्रेमनां अश्रु वहाव्यां अने वृद्ध स्त्रीपुरुषोए आशीषनो नाद कर्यो के

"हे ! पुत्र तमो कल्याणकारी थाओ !"
"हे ! पुत्र तमो साचा वीर थाओ !"

अहो ! कीरतार त्हारी माया आवा अमोला रत्नोमां ज प्रगट थाय छे के क्यांए सगतोजी अने आजना मुनी महा-राज श्री शांतिविजयजी.

दीक्षा अंगीकार करी ए वीरात्मा श्री मांडोली नगरे वीचर्या. मांडोली नगर ए दाद गुरुनु जन्मस्थान अने काळस्थान हतुं के जेओश्रीनी प्रतीभाशाळा अति अदभूत अने अद्वैत छे. जेओना जीवननुं टुंक अवलोकन हुं आगळ करी गयो छुं.

आ वीरात्माश्री मांडोली नगरथी पाछा रामसीण पधारी गया, रामसीण गाममां दीक्षा महोत्सवना कार्यमां मुख्य भाग लेनार शेठ नोपाजी डाह्याजीनुं एक मकान हतु जेमां कोईपण मानव रही शकतुं नहतु ते मकानमां पोते त्रण दिवस वास कर्यो अने त्यार बाद सर्व कुटुंब त्यां अति आनंदथी रहेवा लाग्युं.

बाद रामसीण गामथी एवीरात्माए गुरुश्रीथी अलख वीचरवा शरु कर्युं.

वसंत पंचमीना रोज जन्मेल आवीरात्माए वसंतनी माफक आत्माने सचेत बनाववा आत्ममस्तिना तानमां गानमां अने ध्यानमां ॐकार मंत्रने स्थापन कर्यो.

"ॐकार आ विश्वनो अमोलो मंत्र छे."
"ॐकार आ विश्वमां कल्याणकारी छे."
"ॐकार सर्व मंगलमां प्रथम मंगल छे."
"ॐकार ए सर्व मंत्रोनो राजा छे."
"ॐकारमां विश्नु, ब्रह्मा, महेश्वर छे."
"ॐकारमां पंचपरमेष्ठी छे."
"ॐकार सर्व सिद्धिनो दायक छे."
"ॐकार कर्म समूहने भष्म करनार छे.
"ॐकार शांतीनो साचो मीनारो छे."
"ॐकार आत्मानो साचो मार्गदर्शक छे."

योगमार्ग अने आत्म मस्तीनी धूनमां आगळ वधी पूर्व समयमां थएल महान आत्माओना पंथे जीवननो विकास करवो एज आ वीरात्मानो दृढ निश्चय हतो. योगमार्गने पीछाणवा घणा लांवा समय सुधी मौन साथे रात्री अने दिवस सतत ध्यान कर्यां छे.

पींडवाराथी एक माईल दूर अजारी गाम आवेलुं छे ज्यां कुमारपाळ राजानुं बंधावेल बावन जीनालयनुं मंदिर छे.

अजारी गामथी अडधा माईल दूर जंगलमां एक मारकंड रुषीनुं आश्रम अने अत्यंत पुराणु सरस्वती देवीनुं मंदिर आवेलुं छे. मारकंड रुषी लांबा समय दरम्यान थई गया जेओने अन्य धर्मवाळा अमर माने छे. जेवी रीते गोपीचंद, भ्रातृहरी आदीने मानवामां आवे छे तेवां ज रीते तेओने पण माने छे. मारकंड रुषीना आश्रमनी लगोलग सरस्वती देवीनुं पुराणु स्थान छे. ज्यां प्रथमना पूर्वाचार्योंए ध्यान करी जीवन-नौका आत्ममार्गे दीपावी छे.

जेवा के वसीष्ठ रुषी, विश्वामित्र, भोज राजा, पंडीत काळीदास, बपभट्ट सूरी, हेमचंद्राचार्य, सिद्धसेन दिवाकर, अभयदेवसूरी, आदी अनेक महात्माओए आ पवित्र स्थानमां ध्यान करी आत्म मार्ग दीपाव्यो छे. तेवीज रीते आ वीरा-त्माए पण आ पवित्र स्थानमां घणा लांबा समय सुधी मौन व्रत आदरी रात्रि अने दिवस सतत ध्यान करी पोतानी मनो-कामना सिद्ध करी छे. जे समये केवरली गामना रहीश एक ब्राह्मण लक्ष्मीशंकर आ वीरात्मानी साथे भक्तिमां रहेता हता तेओने कुदरती संस्कृतनुं ज्ञान संपादन थयुं अने गीताना ८४००० श्लोक आठ दिवसमां कंठ स्वरे थई गया. जेओ हाल विद्यमान छे अने भक्तिनी नीजानंद मस्तीमां ज जीवन वीतावे छे.

पहाडोनी भेखडो अने घनघोर वनवृक्षोनी घटा अने पांचसेंह खजुराना वृक्षथी भरचक भूमीनी वचमां ए स्थान आवेलुं छे के

जेनो देखाव एटलो बधो रमणीय अने शांती स्वरुप छे के महा-
त्माओना माटे तो ए एक असीम शांतीनुं पवित्र स्थान छे.

नीकळ्या अरे ए वन विषे, मृत्यु तणो भय छोडीने,
माया अने ममता तणां, सहु बंधनोने तोडीने.

मारकंड रुषीना आश्रममांथी वीचरी आ वीरात्मा पवीत्र आबू गीरीराजमां आव्या. आबूना पहाडमां पूर्व समयमां अ-संख्य रुषी मुनीओए ध्यान करी मुक्तता प्राप्त करी छे ए पवीत्र आबूगीरीमां आवेलां भयानक स्थानो के ज्यां हिंसक पशु सिवाय मानव भाग्ये ज मळी आवे. जेवां के वसी-ष्ठाश्रम, पाटनारायण रुषीकेष, गुरुशीखर आदी निर्जर भयानक स्थानोमां आ वीरात्माए रात्री अने दिवस मौन व्रत अने तप-श्चर्या साथे मृत्युने हथेलीमां राखी ध्यान कर्यां, मीठा वगरना अडदना बाकुळा उपर छ छ मास सुधी रही रसेन्द्रीयनो निग्रह कर्यो, अने अडोल आसने ध्यानस्थ दशामां रही जीवन ज्योतने झूकावी मृत्युनी सामे झझुम्या.

साधु संयम वेलडी, तीक्ष्णधार कहेवाय;
ए धारे जे नाचता, ए नरवीर कहाय.

आ वीरात्माए घोर अभीग्रहो अने मरणांत उपसर्गो सहन कर्या छे के जेनो एकज दाखलो हुं आ स्थळे मुद्रीत करुं छुं.

पींडवाराथी वेकोस आगळ वामणवाडजी तिर्थ आवेलुं छे के ज्यां भगवान श्री महावीरना कानमां खीला टोकवामां

आव्या हता. जे तिर्थमा बावनजीनालयनुं भगवानश्री महा-वीरनुं भव्य अने अलौकीक मंदिर छे. ते पवीत्र स्थानमां आ वीरात्मा बीराजता हता. एक समय दरवाजाना उपरना मेडे रात्रीना ध्यानस्थदशामां हता ते मेडो जमीनथी लगभग पंदर फुट उंचो हशे, जेनी नीचेनी जमीनमां पत्थर शिवाय कंई ज न हतुं. उपरोक्त मेडानी बारी पासे बेसी आ वीरात्मा ध्यान करता हता त्यां अचानक उपसर्ग थवाथी नीचे पत्थरोमां पट-काया, जे समये मस्तकमांथी लोहीनी धारा वही हती परंतु तेओश्री तो ध्यान मुग्धज हता. अमुक समय बाद कारखानाना माणसोने खबर पडी, बाद योग्य सेवा करी उपरना मेडे बीराजमान करवामां आव्या. आवो भयानक उपसर्ग होवा छतां तेओश्रीए पोतानी शांती जरा पण गुमावी नहोती ! आवा अनेक उपसर्गो सहन करी तेओश्री आत्म मार्गमां आगळ वध्या छे.

भगवान श्री महावीरे जेवी रीते एकीका जंगलो, पहाडो अने वस्ती वगरना निर्जर स्थानोमां वीचरी आत्म ज्योतने दिपावी छे. तेवी ज रीते आ वीरात्माए वर्षों सुधी ध्यान करी तेज पंथे आत्मज्योतने प्रकाषी छे.

अहींसा अने सत्य ए तेओश्रीना मुख्य सिद्धांत छे. भग-वानश्री महावीरनो महामंत्र क्षमावीरस्य भूषणम्‌ने आ वीरा-त्माए पोताना रोमेरोममां स्थापन कर्यो छे.

एक समय संवत १९७३नी सालना अरसामां आ वीरात्मा जोधपुर प्रदेशमां आवेल जसवंतपुरा परगणामां सुदानो पहाड आवेलो छे त्यां बीराजता हता. सुदाना पहाड उपर एक जगमशहुर चामुंडादेवीनुं मंदिर आवेलुं छे. ज्यां सहस्त्रगण्य मानवो दर्शनार्थे आवे छे. जोधपुर ईलाकामां आ मंदिरनी प्रतिभा सारी गणाय छे. दशेरा अने नवरात्रीना तहेवारमां धर्मना व्हाने पशु वधनो त्यां भोग अपातो हतो. नवरात्री अने दशेराना तहेवारमां घणाज मुगा पशुओनी त्यां हिंसा थती जे समये ते पहाड उपर सुदा नामनुं एक सरोवर आवेलुं छे जेनुं पाणी लोही समु बनी जतुं. आ कटर जीवहिंसा बंध करावबाने आ वीरात्माए पोताना आत्मबळ द्वारा घणी ज जहेमत उठावी अने मंदिरना पूजारी वर्गने सदुपदेश करी जोधपुर स्टेट द्वारा मंदिरमां थती जीवहिंसा बंध करावी.

धीमे धीमे आत्म कमळ खीलतुं गयुं अने आत्म मस्तीना अद्वैत प्रभावथी विश्वमां वसता असंख्य मानवो आ वीरात्माना चरणमां लोटता थया. जातीनो भेदभाव अगर कोईपण धर्मना मतमतांतर वगर विश्वप्रेमना अदभूत आत्मबळथी हरेक कोमना मानवो जेवा के पारसी, युरोपीअन, मोमेडन, भील, मेणा, हरगडा ईत्यादी मानवो तथा भारतना सेंकडो राजा महाराजाओ आ वीरात्माना चरणे झूकाया. जेम जेम तेओ संसर्गमां आवता थया तेम तेम जीवदयानां सूत्रो तेओश्री

हरेकने पढावता गया. असंख्य मानवो भील, मेणा, हरगडा आदी अनेक जीवात्माओने दारु, मांसाहार बंध करावी पुन्य मार्गे प्रवेश्या. भील अने मेणानी ए तरफ एवी क्रूर जात वसे छे के कपडांनी खातर धोळे दीवसे मानवना प्राण हरी ले छे. तेवी अज्ञात अने हिंसक कोममां आत्म प्रकाष फेलाव्यो अने हिंसाथी बचावी तेओना बाळकोना शिक्षण माटे अगाउ हुं लखी चूक्यो छुं ते मारकंड रुषीना आश्रममां आवेल सरस्व-तीजीना स्थानमां अज्ञात कोमना छोकराओने विद्यादान आपवा विद्यामंदिर खूल्लु मूक्युं छे.

अहींसानो जयघोष

भगवानश्री महावीरे अहिंसा सूत्रनी रोमे रोममां भट्ठी सळगावी हती. भगवानश्री महावीरे आखाए जीवनमां प्रथम अहिंसाने ज स्वीकारी हती अने जगतभरमां अहिंसा अने सत्यनो विजयध्वज फरकाव्यो हतो. पोते गृहस्थाश्रममां एक राजवंशी नबीरा होवा छतां अढळक लक्ष्मी अने वैभवोने ठोकर पर मारी त्याग मार्गमां प्रवेशी घनघोर वनवृक्षो अने एकीका पहाडोमां फरी बार वर्ष सुधी घोर परीसहो अने मर-णांत उपसर्गो सहन करी कैवल्यज्ञानने पाम्या हता. भगवानश्री महावीरे विश्वना कल्याणार्थेज जीवन ज्योत झूकावी हती. आखाए जीवननो विकास भगवाने वीरता अने क्षमा साथेज उदभव्यो हतो.

भगवानश्री महावीरनी झांखी पूरनार वीरात्मा आ समयमां भाग्येज मळी आवे !

आ वीरात्मा भगवानश्री महावीरना पंथेज प्रयाण करी पोतानो जीवनविकास उदभवी रह्या छे. आ वीरात्माए पोताना रोमे रोममां अहिंसानी भट्ठी जलावी छे.

डंको बजाव्या विश्वमां, हींसा बचावाते प्रभो,
जगव्या खरेखर राजवी, हींसा बचावा त्हें प्रभो;
हाकल करी आ विश्वमां, हींसा बचावा त्हें प्रभो,
मेणा अने भील ज्ञातीनां, मानव बुझायां त्हें प्रभो.

एक समय संवत १९८८नी सालमां आ वीरात्मा माउन्ट आबू उपर देलवाराना पवित्र स्थानमां चातुर्मास वीराजता हता ते समये आसो मास शरु थतो हतो. एटले के दशेरा नवरात्री आदीना तहेवारो नजीकमां ज आवता हता. दशेरा अने नवरात्रीना तहेवारोमां धर्मना व्हाने घणाज अज्ञान मानवो मुंगा पशुनां वळीदान आपे छे. गुजरात अने तेनी आसपास एवां घणां देवी अने माताओनां मंदिर आवेलां छे के ज्यां घणा ज मुंगा पशुओनी भोग यात्रा करवामां आवे छे. जोधपुर ईलाकामां पण आवां मावडीओनां घणां ज स्थान छे के त्यां पण घणाज जानवरोनां वळीदान अपाय छे.

अहिंसाना ध्येयने वनती त्वराए सिद्ध करवा पोते संकल्प कर्यो के हिंदुस्तानना तमाम देशी राज्योमां उक्त तहेवारोमां

थती मुंगा पशुनी हिंसा बंध कराववी. आ वीरात्माए पोताना संकल्पने श्रेय करवा हिंदुस्ताનना तमाम देशी राजाओने तार द्वारा प्रतिबोध्या, जेना परीणामे केटलाके कायमने माटे तो केटलाके अमुक समयने माटे जीवहिंसा बंध करवाना पोत-पोताना राज्यमां कानुन पास कर्या अने जेटली बनी शके तेटली सख्ताईनो उपयोग कर्यो.

आ वीरात्माए आखाए हिंदभरमां थती दूधाळा ढोरनी कतल अटकाववा नरेंद्र मंडळ अने वडीधारासभामां कानुन कराववा प्रचंड ध्वनी सळगाव्यो छे.

आजे पण आ वीरात्माना सदुपदेशथी माउन्ट आबू उपर जानवरोना खास रक्षण माटे वेटरनरी होस्पिटल खूल्ली छे ज्यां सेंकडो मुंगा प्राणीओनी सारवार करवामां आवे छे. जेनी देखरेख अने मेनेजमेंट युरोपीअन गृहस्थोना हाथे थाय छे, अने दर साल अंग्रेजी अने हिंदी भाषामां तेना हिसाबना स्पष्ट रीपोर्ट जनसमूहमां प्रसिद्ध थाय छे. ते होस्पिटलनी जगा पण आ वीरात्माना ज सदुपदेशथी ते वखतना एजंट टु-धी गवर्नर जनरल सर रेनोल साहेबे कायमना पटे होस्पि-टलना सारु अर्पण करी छे. माउन्ट आबूमां प्रवेशतां खरेखर मोखरा उपर ज प्रथम आ वेटरनरी होस्पिटल आवे छे. माउन्ट आबू प्रदेशने माटे एवो पण हुकम करवामां आवेलो छे के कोईपण जानवरने झेरनी पीचकारी आपवी नहि तेमज खसी-

पण करवुं नहि परंतु वेटरनरी होस्पिटलना खर्चे पोलीसे होस्पिटलमां मोकली आपवुं.

एक समय आ वीरात्मा आबूनी आसपास विचरता हता. शीवगंजनी पासे एक पोमावा करीने गाम आवेलुं छे त्यां फरता फरता आवी गया. आ वीरात्माना पधारवाथी गाम लोकोमां अति उत्साह थयो अने अति अति आग्रह साथे रोकावा प्रार्थना करी. गाम लोकोनो आग्रह अने उत्कृष्ट भाव नीरखी आ वीरात्मा त्यां बीराज्या. ते समये पोमावा गाममां एक मारवाडी गृहस्थ रतनचंद करीने हता जेओनां धर्मपत्नीने वीश स्थानकनी ओळीनुं व्रत उच्चरवानुं हतुं तेओने रात्रीना एकाएक विचार थयो के आ वीरात्मा समक्ष अति धामधूम साथे अट्ठाई महोत्सव आदरी व्रत उचरवुं अने मारी शक्तिनु-सार द्रव्यनो सदव्यय करवा. सवारना आ वीरात्मा समक्ष आवी रतनचंद शेठे पोतानी आंत्रिक जीज्ञासा दर्शावी. गाम लोको पण एकत्र थई गया अने अति धामधूम साथे अट्ठाई महोत्सव आदी शुभ कार्यनी गोठवण नक्की करवामां आवी. आजुबाजुना गाममांथी हजारोना प्रमाणमां मानवोने नोतरवामां आव्यां. अट्ठाई महोत्सव विविध प्रकारनी पूजाओ भणावतां आठ दीवस सुधी नवकारशीनां जमण करवामां आव्यां. जेमां बीन गणतीनां हजारो मानवो जम्यां अने अति हर्ष साथे व्रत उचरवामां आव्युं. अने आ वीरात्माना शुभ प्रभावथी सर्व कार्य निर्वीघ्नपणे समाप्त थयुं. रतनचंद शेठे पण घणी ज सारी

लक्ष्मीनो सतप्रयोग कर्यो अने मनना मनोरथ सफळ कर्या. गाम लोकोमां पण रतनचंद शेठनी वाह वाह थई अने पोमावा गाममां जय जयकार वर्तायो. गाम लोको पण रतनचंद शेठनी उदारता निहाळी चकित बन्या. महान पुरुषोनी गती अकळ होय छे के ए ज्यां पधारे त्यां न बनवानी लीलाओ बनी जाय अने जीवनमां निहाळ्युं ना होय ते प्रत्यक्ष नीरखाय.

मारवाडमां एक चामुन्डेरी करीने गाम आवेलुं छे. जे गामनी प्रतीभा घणी सारी छे. गाममां भव्य देरासर उपाश्रय आदी आवेलां छे तेमज जैनोनी वस्ती पण सारा प्रमाणमां छे. चामुन्डेरी गाममां देरासरनी प्रतिष्ठा करवानी हती जेनुं महुरत नक्की थयुं हतुं. महुरतनो टाईम नजीक आवतां गाममां उपद्रव फाटी नीकळयो जेथी गामना मानवो गभराया अने विचारमां पड्या. ते समये आ वीरात्मा अजारी मुकामे वीराजता हता. आसपासना मानवोमां तेओश्रीनी पीछाण ते समये जाहेरमां न हती. कारण के पोतानी आत्ममस्ती अने निझानंदे ज जीवनने वीतावता. चामुन्डेरीमां तेओश्रीना केटलाक परम भक्तो हता तेओए आ वीरात्मा पासे जई तेओश्रीने आग्रह करी आपणा गाममां पधरावी तेओश्रीना शुभहस्ते सर्व वीधी करवामां आवे तो जल्दी शांती थशे तेवा विचारो गामलोकमां दर्शाव्या. गामलोको तो गभराएला हता अने शांती माटे ज फांफां मारता हता तेओए आ सर्व हकीकत कबुल करी अने अमुक माणसो आ वीरात्माने विनंती करवा अजारी मुकामे

आवी गया. आवेल श्रावकोनी हकीकत श्रवण करी तेमज खास आग्रह होवाथी अजारीथी विहार करी आ वीरात्मा चामुन्डेरी तरफ वीचरवा मांडया. चामुन्डेरी गाममां आ समाचार आवतां गाम लोको खुशी थया अने मुग्ध हृदये राह जोवा लाग्या. नियत समये आ वीरात्मा चामुन्डेरीथी दूर एक कोस उपर आवी गयानी खबर पडतां गाम लोको अनहद उछरंग साथे वाजते गाजते सामैयुं करवा आगळ वध्या. गाममां पण आजना प्रभातथी सर्वत्र शांती फेलाई हती एटले आनंदनी अवधि न हती.

चामुन्डेरीथी एक कोस उपर ज्यां आ वीरात्मा पधार्या हता त्यां चामुन्डेरी गामनी मानवमेदनी आवी पहोंची. अती हर्ष साथे वंदन कर्या बाद आ वीरात्माए प्रश्न कर्यो के गाममां हवे शांती थई छे के केम? गाममां तो प्रभातथी ज शांतीए साम्राज्य स्थाप्युं हतुं के कहेवानुं होय ज शुं? सर्व मानवोए जणाव्युं के आपनी दयाथी आनंद मंगल वर्ताय छे.

चामुन्डेरी गामना अती उत्साह साथे आ वीरात्मा चामुन्डेरी गाममां पधार्या. पधारतानी साथे ज आ वीरात्माए आदेश कर्यो के प्रतीष्ठा महुरत आदीनी उछामणीनी बोली बोलवा जाजम बिछावो. हालनो समय घणो ज सारो छे अने घणी ज सारी आवक मंदिरमां थई जशे. आ वीरात्माना आदेशने स्वीकारी जाजम बीछावी बोली बोलवानी शरु करी जेमां एकी

टाईमे अेंशी हजार जेवी मोटी रकमनी आवक थई अने त्यार-बाद सर्व कार्यनी छुटक छुटक बोलीओ मळी एकंदर एक लाख अने अेंशी हजार रुपैयानी चामुन्डेरी जेवा नाना गामडामां आवक थई, अने आ वीरात्माना शुभ हस्ते प्रतिष्ठा आदीनुं कार्य संवत १९८४ ना जेठ बद ५ ना रोज जय जयकार अने आनंदनी नोबतो गगडावतां संपूर्ण थयुं. चामुन्डेरीनी आसपासना गामोमां स्नेह करावी नोकारशीनुं जमण करवामां आव्युं जेमां धार्या करतां वधु मानव थई जवाथी गामलोको गभराया परंतु ए वीरात्मानी लब्धीना अद-भूत प्रतापथी स्नेह स्वामी वात्सल्य संपूर्ण रीते समाप्त थयुं अने आनंदनो घोष वहायो. आ सर्व ए वीरात्मानी ज अकळ लीला हती.

आ विश्वमां प्रसरी गई छे, दिव्यता त्हारी प्रभो,
आ विश्वमां घर घर विषे, ज्योती झघी त्हारी प्रभो.

संवत १९८९ नी सालमां आ वीरात्मा अचळगढ मुकामे बीराजता हता. जे समये श्री बामणवाडजी मुकामे अखील भारतीय जैनश्वेतांबर पोरवाल ज्ञातीनुं संमेलन एकत्र थवानुं हतुं ते संमेलनना अग्रगण्य कार्यकर्ताओ तथा श्री मारवाडना संघनी आ वीरात्माने बामणवाडजी मुकामे पधारवाने अती आग्रह भरी विनंती हती जेनो स्वीकार करी श्री बामणवाडजी मुकामे पधारवा आ वीरात्माए आदेश कर्यो हतो.

पोरवाल संमेलन

संमेलन एकत्र थवानो कार्यक्रम चैत्र वद एकम बीज अने त्रीजनो हतो. आ वीरात्माए पण अचळगढथी विहार शरु कर्यो. रस्तामां हजारो मानवोने पोतानी दिव्य वाणीथी पावन बनावतां आगळ विचरता हरेक गामना लोको रस्ता वच्चे आडा पडता अने पोतपोताना गाममां लई जवा सख्त हठ पकडता. लोक समूहना मनने रंजन करता करता चैत्र सुद बारशना अरसामां आ वीरात्मा श्री बामणवाडजी मुकामे पधारी गया ज्यां तेओश्रीना सामैया माटे सातसें मणना आशरे घीनी बोलीनी आवक थई हती.

बामणवाडजीमां एक अलौकीक भगवान महावीरनुं बावनजीनालयनुं देरासर अने फक्त धर्मशाळा ज छे, तेनी आजुबाजुमां गाम आवेलां छे. आ समये बामणवाडजी एक विराट नगर बनी गयुं अने देशोदेशथी मानवनां जुथ तेना आंगणे उतरी पड्यां. आ समये हर्षनी सीमा न हती. पोरवाल संमेलननुं तमाम कार्य शांतीथी पूर्ण थतां चैत्र वदी त्रीजना दिवसे पोरवाल संमेलन तथा श्री संघ अने पधारेल असंख्य मानव मेदनी समक्ष पोरवाल संमेलन अने मारवाडना श्री चतुर्वीध संघे आ वीरात्माने, योगलब्धी संपन्न, राज राजेश्वर अने अनंत जीव प्रतिपाळ आदी बिरुद अर्पण कर्यां. जे समये मारवाडमां वपराता चुडा बंध करवा अनेक स्त्रीओने आ वीरात्माए प्रतिज्ञाओ करावी हती.

आ वीरात्माना दर्शन माटे एक मास सुधी बामणवाडजीमां

असंख्य मानवमेदनी चालु रही के रात्री अने दिवस मानवनां जुथ वीखरातां ज नहि.

एक समय शिरोही ईलाकाना ८८ गामना वयोवृद्ध अढीसों रायकाओ आ वीरात्माना दर्शनार्थे पधार्या हता तेओने सदुपदेश करी शुद्धा चार पाळवा प्रतिज्ञाओ करावी अने हरेक गामे ते पाळवा माटे रायका ज्ञाती द्वारा नक्की करवामां आव्युं हतुं. बामणवाडजी मुकामे आ वीरात्माना बीराजवाथी असंख्य मानवो पुन्य मार्गे प्रवेश्यां अने कुसंप, क्लेशो, आदी नाश थई आनंदनां झरणां वह्यां. एक समय शिरोहीना देरासरमां ध्वज दंड चढाववा घणा ज मानवो मथी रह्या हता परंतु नहि चढवाथी आ वीरात्मा ते समये त्यां होवाथी देरासरमां पधारी ध्वजदंड पर हस्त मूक्यो के तुरत ज ध्वजदंड चढी गयो.

संवत १९९० ना कारतक सुद पुनमना रोज दुजाणा गाम नीवासी मारवाडी गृहस्थ तरफथी छररी पाळतो नानी पंच तीर्थीनो संघ बामणवाडजीथी काढवामां आव्यो हतो जेमां पांचेक हजारना आशरे मानवमेदनी उलटी हती. गामोगाम फरी अती हर्ष वहावतो ए संघ श्री वीरवाडा मुकामे मागशर सुद बीजना रोज पधारी गयो. ज्यां गाम बहार एक वृक्ष नीचे आ वीरात्मा वीराज्या हता ते समये श्री संघे आ वीरात्माने जगतगुरु, सूरीसम्राटपद अर्पण कर्युं. ते समये कलकत्ताना

सुप्रसिद्ध शेठ जगतसींहजी तथा बीजां घणां ज प्रतीष्ठीत कुटुंबो त्यां हाजर हतां.

ईन्द्रतणी वृष्टी थई, झरमर आयो मेह,
महान पुरुष भावी तणा, थयो दिव्य संदेह.

सूरीसम्राटपद

सूरीपदनी क्रिया मागशर सुद त्रीजना रोज वामणवाडजीमां करवामां आवी हती. आ दिव्य संदेश चोतरफ फरी वळतां शीरोही नरेश, बीकानेर नरेश, लींबडी नरेश, जामनगर नरेश, पालणपुर नवाब साहेब, वावठाकोर, राजपुतानाना ए. जी. जी साहेब तथा बीजा घणाज राजा महाराजाओ ठाकोरो, युरोपीअन गृहस्थो, पारसी सज्जनो, प्रोफेसरो आदीए आ वीरात्माने अर्पेल पदवीओने सहर्षे वधावी लीधी अने गोलवाड प्रांतीय कोन्फरन्से पण ठराव पास कर्यो. एटलुंज नहि परंतु विश्वनी चोतरफ वसता मानवोए आ पदवीने सहर्षे वधावी लीधी.

तरुवर सरोवर संतजन,
चाथा बरखा मेह;
प र मा र थ के का र णे,
चारे धरीया देह.

महान पुरुषो हंमेशां जगतना उपकार माटे ज जन्म धारण

करे छे. अने ज्यारे ज्यारे आवा टाइटलोथी या पदवीओ अगर बिरुदोथी बीभूषीत करवामां आवे छे त्यारे तेओ पोतपोतानी योग्यता प्रमाणे कंईपण करी बतावे छे. पूर्व समयमां एवा अनेक दाखलाओ बनी गया छे, जेवी रीते हीरविजयसूरीए शत्रुंजय तिर्थ रक्षा माटे राजा अकबरने प्रतीबोध्या हता. हेमाचार्य महाराजे गुजरातना छेल्ला राजा कुमारपाळने प्रतीबोधी जैन बनाव्या हता.

आ वीरात्माना उपकारो अने तेना सबंधनी लीलाओ घणी ज अदभूत छे के ते सर्वने प्रसिद्ध करवानुं आ स्थळे स्थान नहि होवाथी मुख्य मुख्य बाबतो ज चर्चवामां आवी छे.

आ वीरात्माना अद्भूत प्रभावथी असंख्य मानवो पुन्य मार्गे प्रवेश्यां छे. अने हद उपरांतना मानवोए आ वीरात्मानां दर्शन करी मानवदेहने पावन बनाव्या छे. आजे विश्वनी चोतरफ घरो घरमां तेओश्रीनो जयघंट वागी रह्यो छे. अहींसा सूत्रने उज्वळ बनावी मुंगा जानवरोने अभयदान आपी तेना किल-किलाटमां कलोल पूर्यो छे.

पूज्य बनवानो दावो नहि करतां पूजक बनवानी साची अभीलाषा, गुरु बनवानो दावो नहि करतां शिष्य बनवानी साची मनोदशा, आत्मानी अनहद शांती अने जगत कल्याणनी आदर्शभावना आ वीरात्माना रोमेरोममां गुंजार करी रही छे जे जगत आजे मुग्ध कंठे श्रवण करी प्रत्यक्ष निहाळी रह्युं छे.

आ वीरात्मा ज्यां ज्यां विचरे छे त्यां त्यां चोथो आरोज वर्ताय छे. गाम मटीने शहेर बने छे अने जंगल मटीने विराट-नगर बनी जाय छे. जींदगीमां नीरखी शके नहि तेवां शुभ कार्यो बनी जाय छे अने केवळ आनंद, आनंद, आनंद ने आनंद ज वर्ताय छे.

मेवाड प्रदेशमां उदेपुर नजीक श्री केशरीयाजी तिर्थ करीने एक जैनोनुं महान् यात्रानुं स्थान आवेलुं छे. ते तिर्थमां पंडा लोको मंदिरमां पूजन तथा जजमानवृत्ति करी मंदिरना पूजारीओ तरीके त्यां रहे छे ते श्री केशरीयाजी तिर्थमां पूजन —प्रक्षाल आदिनी घीनी बोली बोलाय तेनी वार्षिक आवक रुपिया दश हजार उपरांतनी हती ते आवक मेळववा पंडा-ओए कोषिश करेली अने वधारामां ते जैनतिर्थने वैश्नवनुं बनाववानी तैयारीओ चाली रही हती. जैनोनो ए तिर्थमां स्वतंत्र हक्क नथी, तेवुं जाहेरनामुं पण मेवाड राज्य तरफथी प्रसिद्ध थइ चूक्युं हतुं अने घणीखरी वैश्नवरीतिनी शरुआत पण थइ हती. वर्षो थयां चढावेल ध्वजदंड ते वखतना दिवान पंडित सरसुखदेवप्रसादजीनी पूर्ण मदद अने स्टेटनी पोलिसना रक्षण द्वारा देरासरमां होम आदि करी पंडाए ध्वजदंड उतारी नांखी त्रिकोणी ध्वजा चढावी हती. मेवाड राज्य अने जैनो वच्चे आ एक महान क्लेशाग्नि उत्पन्न थयो हतो, तेने शांत करवा आ वीरात्माने जे पदवीओ अर्पण करवां आवी तेना वीजा दिव-

सेज बामणवाडजी मुकामे तेओश्रीए पोतानो अभिग्रह जाहेर कर्यो हतो के फागण सुद तेरश सुधीमां मेवाड राज्य अने जैनो वच्चे शांती स्थापन नहि थाय तो उदेपुरनी हदमां जई फागण सुद १४ थी हुं उपवास आदरीश. आ सर्व घटना जाहेर पेपरोमां प्रसिद्ध थई चूकी हती.

प्रस्तुत हकीकत मुजब फागण सुद आठमना अरसामां बामणवाडजी मुकामेथी तेओश्रीए उदेपुर तरफ विहार कर्यो. जे समये असंख्य मानवमेदनी तेओश्रीने भावभीनी विदाय आपवा उलटी पडी हती. आ हकीकतनी मेवाड राज्यना दिवानने खबर पडतां त्रण दिवस अगाउथी मेवाडनी हदमां तेओश्रीने दाखल नहि थवा देवा सारु रात्री अने दिवस मेवाडनी चोतरफ पोलिसपेरो गोठववामां आव्यो हतो.

आ वीरात्मा पोताना ध्यानना अद्‌भूत बळथी फागण सुद तेरशना रोज बपोरना उदेपुरथी सात–आठ माईल दूर आवेल गाम मदारमां पधारी गया. आ हकीकतनी खबर पडतां पोलिस अमलदारो दिग्मूढ बनी गया अने आ वीरात्माना चरणमां शीर झुकाव्यां.

पोताना अभिग्रह मुजब फागण सुद १४ थी ए वीरात्माए उपवासनी शरुआत करी दीधी. बे एक दिवस बाद स्टेटना केटलाक प्रतिष्ठित ओफिसरो साथे दिवान पंडित सर सुखदेव-प्रसादजी गाम मदारमां तेओश्रीना दर्शनार्थे पधार्या. जे समये

दिवानने आ वीरात्माए घणा ज कडक शब्दोमां कह्युं के मारा एक साधुने माटे त्रण–त्रण दिवस सुधी आपे महान तकलीफ उठावी पोलिस आदिने अति कष्ट आप्युं. आजे हुं आप समक्ष बेठो छुं.” आप मने ज़ेलमां पूरी शको छो.

“ दिवानजी ! हवे तो वाळ सफेद थई गया छे, डाचां मरी गयां छे, मृत्यु आपनी आसपास भमी रह्युं छे, मात्र टुंक समयना ज आ दुनियाना आप महेमान छो, माटे आत्मानो कंईक पण ख्याल करी सत्यने ओळखतां शीखो.

दिवानजीनुं मृत्यु टुंक समयमां छे ते हकीकत केशरी-याजीना अभिग्रह सबंधमां जाहेर पेपरोमां प्रसिद्ध थयुं ते साथे प्रसिद्ध थई हती.

दिवानजी तुम हृदयमां, करो हवे कंई ख्याल,
दिवान दिव्य दीपक करी, करते पर कल्याण.

मनुजन्म महापुन्यथी, नर भव मळीयो सार,
फेर फेर ए नहि मळे, घटमां करो विचार.

मृत्यु फरीयुं चोदिशे, त्राप करे जीम वाज,
मरण सपाटो आवतां, डूबी जशे आ झाझ.

सत्य धर्म विण कोई नहि, जूठी जगत जंजाळ,
टुंक समय छे जींदगी, करशे काळ शिकार.

वाळ सफेद थया हवे, नैयां डगमग थाय,
करवानुं बहुधा कर्युं, शांती नहि लेवाय.

फना थशे आ जींदगी, कंई नव आवे साथ,
शरण एक ईश्वर तणुं, साचा छे जगनाथ.

सत्ता सहु रहेशे अहीं, कुटुंब ने परिवार,
त्यां नहि चाले कोईनुं, शरण एक कीरतार.

कीधां कर्म नहि छोडशे, न्याय थशे दरबार,
शांतिसूरी योगी कहे, भजो हवे कीरतार.

आ वीरात्माना दर्शनार्थे आवेल ओफीसरोए प्रस्तुत बाबतमां जल्दीथी शांती करवा पोताना आंत्रिक विचारो दर्शाव्या अने तेओश्रीने त्यां सुधी छाश वापरवा माटे अत्यंत आग्रह कर्यो. ओफीसरोना वचनने मान आपी तेओश्रीए छाश लेवा निश्चय कर्यो. बे–एक दिवसमांज आ बाबत उपर तेओ-श्रीने वजूद नहि जणावाथी छाश लेवानी बंध करी.

त्रीस दिवस सुधी मदार गाममां आ वीरात्मा एक जैन-गृहस्थनी झुंपडीमां विराजमान थया हता. एक नानी मेडीमां तेओश्री बिराजता अने नीचेना भागमां आसपास ढोर वंधातां. जरुर आ स्थळे मारे जणाववुं जोईए के ए जैनगृहस्थनां पण महद् धनभाग्य अने अनेक जन्मनां पुन्य कहेवाय के आवी महान तपश्चर्या साथे आ वीरात्मा तेओनी झुंपडीमां विराज-मान थया.

मदार गाम जेमां सोएक घरांनी वस्ती भाग्ये ज हशे ते मदार गाम एक विराट नगर बनी गयुं, अने आखा मेवाडनो मुलक तेओश्रीना दर्शनार्थे उलटयो. ज्यां असंख्य मानवोने दारु, मांसाहार बंध करावी पावन बनाव्या. उपवास चालु होवा छतां सवारथी सांज सुधीमां बीनगणतीनां मानव तेओ-श्रीना दर्शनार्थे आवतां ते तमामने दर्शन आपता अने सत्य पंथे दोरता.

आ वीरात्मा त्यां पधारवाथी सेंकडो अनाथ मानवोने रोजी मळी, तथा टांगावाळाओने छ छ मास सुधीनी पेदाश थई.

त्रीसमा उपवासना दिवसे ए वीरात्मा पोताना अद्‌भूत आत्मबळथी उदेपुरथी बे गाउ दूर आवेल गाम देवाली मुकामे प्रभातना पधारी गया. मदारथी देवाली गाम आशरे त्रण गाउ थतुं हशे. देवाली गाममां राज्यनो एक मोती महेल आवेला छे जेने अगाउथी साफ करी तैयार राख्यो हतो. आ वीरात्मा देवाली नजीकमां थूरना वाड वच्चे विराजमान थया हता त्यांथी असंख्य मानव मेदनीना जयनाद साथे मोती महेलमां पधार्या.

उदेपुरना महाराणा भोपालसिंहजीने पण कोई दिव्य संकेत थयो के तेओ पण ते ज दिवसे सवारना पोताना राज-महेलमांथी दूधनी खीर करावी साथे लई देवाली मुकामे मोती-महेलमां पधार्या अने आ वीरात्माना चरणमां शिर झुकाव्युं, अने शांती स्थापन करवा एक सूर्यवंशी महाराणा तरीके पोते

वचन आपी पोताना स्वहस्ते गुरुमहाराजने त्रीस उपवासनुं पारणुं कराव्युं अने हर्षनां पुर उभरायां.

दिव्य भास अंतर थयो,
भोपालसिंह महाराय.
शांति प्रभो ! चरणे पडी,
अंतरमां हरखाय.
वचन दीधुं गुरु देवने,
सूर्यवंशी महाराय.
मोती महेलमां पारणुं,
महाराणाथी थाय.
त्रीस उपवास पूरा कर्या,
आनंद त्यां वर्ताय.
शांतिसूरी गुरुदेवना
सकळ लोक गुण गाय.

प्रस्तुत घटनामां जे जे दिव्य लीलाओ वनत्रा पामी छे तेनुं कंईपण दिग्दर्शन आ स्थळे करवुं असंभवित छे.

जैनोना सेंकडो वर्षोना इतिहासमां एक जैन साधुने महाराणा पोताना स्वहस्ते पारणुं करावे ते द्रश्य आ चालु जमानानो अंदर तो प्रथम ज छे.

मेवाड राज्य तरफथी एवुं जाहेरनामुं वहार पाडवामां

आव्युं के केशरीयाजी तिर्थमां जैन कोम शिवाय बीजा कोईनो स्वतंत्र हक नथी. मात्र श्वेतांबर अने दिगंबरना हक सबंधमां राज्य तरफथी कमीशन नीमवामां आव्युं.

नव भेद छे ज्ञाति तणो, नव भेद छे जाति तणो;
नहि भेद ज्यां उंचनीचनो, नहि भेद रंकश्रीमंतनो.
ज्यां विश्व आखुं एक छे, साचो प्रभुनो टेक छे;
नीज आत्मने पावन बनावो, ए ज अहीं संदेश छे.

संवत १९९१नी सालना वैशाख मासमां एरणपुर नजीक आवेला विसलपुर गाममां प्रतिष्ठामहोत्सव हतो. आजुबाजुना गामना मानव मळी वीस हजार उपरांत मानवमेदनी एकत्र थई हती. जे समये आ वीरात्मा विसलपुर पधार्या हता. वीस हजार उपरांत मानवमेदनीने पाणी पूरुं पाडवानुं कंईपण खास साधन न हतुं. मारवाड जेवो प्रदेश अने गरमीना दिवसमां पाणी केवी रीते पूरुं पडशे, ते बाबत गामलोकोने घणी ज मुझवण हती, परंतु आ वीरात्मानी अद्भूत आत्मशक्ति अने लब्धीना प्रतापे कुदरती पाणीनां झरणां फुटयां अने पाणीनी छोळो वही रही.

झरणां फुट्यां पाणी तणां
गुरुदेवना सुपसायथी
आनंद मंगळ थई रह्यां
गुरुदेवना सुपसायथी

जे कल्पना उरमां नती, ते सर्वे शुभ हर्षे थयुं,
पासा बधा सवळा पडया, गुरुदेवनुं शरणुं फळयुं.

आठ दीवस सुधी बीन गणत्रीनुं हजारो मानव जम्युं परंतु खोराकमां कोई पण दीवस टांच नही पडतां ए वीरात्मानी लब्धीना प्रतापथी आनंद मंगळ वर्तीयां. प्रतिष्ठा महोत्सवना शुभ दीवसे एकत्र थएल मारवाडनो श्री संघ तथा कोन्फरन्स अने देश परदेशथी आवेल प्रतिष्ठीत मानवोए मळी आ वीरात्माने युग प्रधानपद अर्पण कर्युं. जेमां कलकत्ताना सुप्रसिद्ध जमीनदार "जेओना कुटुम्बने जगत शेठनो इल्काब वर्षो थयां चाल्यो आवे छे ते शेठ जगतसिंह पण पोताना कुटुम्ब साथे ए शुभ अवसरे पधारेल हता. ते शीवाय केटलाक राजकुमारो तथा जोधपुर स्टेटना अग्रगण्य ओफीसरो साथे असंख्य मानवमेदनी उलटी पडी हती. ते समयनुं द्रष्य कोई अलौकीकज हतुं के जेनी दिव्यतानो नजरे जोनारने ज ख्याल आवी शके.

जे समये आ वीरात्माने युग प्रधानपद अर्पण करवामां आव्युं ते शुभ प्रसंगे केटलाके सोनामहोरो, अने केटलाके चांदी नाणानी ए वीरात्माना मस्तक उपर वृष्टि करी अने स्त्रीओए साचा मोतीनो स्वस्तीक कर्यो.

अहो! कीरतार तारी माया अति अद्‌भूत छे. आठ वर्षनी उमरमां दुनियादारीने ठोकर पर मारी त्याग वृत्ति अने साधु

जीवन प्राप्त करवा नीकळेल सगतोजी क्यां ? अने आजनो आ वीर पुरुष क्यां ?

उज्वळ बनावी आत्मने, ए वीर साचो नीवडयो;
जंगल अने पहाडो फरी, ए धीर साचो नीवडयो.
मृत्यु तणो भय छोडीने, मस्ती जगावी आत्ममां,
हींसकपशु नीज सम्रगणी, धूनी धखावी आत्ममां;
ॐकारना शुभ ध्यानथी, सिद्धी खरेखर पामीया,
वर्षो थकी तप आचरी, ए आत्मरसमां झामीया.

आ वीरात्मानी अद्‌भूत शक्ति अने अलौकिकतानुं वर्णन करवामां कोई विद्वान माणस तेओश्रीना विचारो लखवा विचारे तो पुस्तकोना थोकेथोक भराय तो पण पुरी रीते तो लखी शके ज नहि. तेओश्रीना अगाध गुणोनुं वर्णन करवुं अशक्य छे. तेओश्रीने ओळखवा ते ईश्वरने ओळखवा बराबर छे. तेओश्रीनी आत्म शक्तिनो जेओने अनुभव थयो छे तेओज केटलाक अंशे तेओश्रीने पीछाणी शके छे. उपरना शांति-विजयजी जुदा छे अने अंदरना शांतिविजयजी ते जुदा छे. जो अंदरना शांतिविजयजीने ओळखवामां आवे तोज साचा शांतिविजयजीने ओळखी शकाय.

"दुनिआनी सामे एने सत्यनी दीवालो खडी करी"
"विश्वंभरनो वारसो यशस्वी बनाव्यो"

" ॐकारनी अखंड ज्योतमां कर्म समूहने खाख करी शांतीनुं सिंहासन स्थाप्युं "

" असंख्य जीवात्माओने सत्य पंथे दोरी पुन्य यज्ञमां प्रवेश्या "

" सेंकडो राजवीओने दारु मांसाहारनी बदीथी शुद्धि करी मुगा पशुओना किलकिलाटमां हर्षनी नोबतो गगडावी "

" भारत मातानी गोदनो जयघोष करी विश्वनी चोतरफ सत्यनो संदेश पहोंचाडयो "

" युनीवर्सल लवना पवित्र सिद्धांतथी हरेक मानवोना मनने आनंद मुग्ध बनाव्यां "

" आजे ज्यां निहाळो त्यां एना जयनादनो झणकार थई रह्यो छे "

वंदन हो ! वंदन हो ! ए वीरात्माने कोटानु कोटी वंदन हो !

लखनार
किंकर

परम कृपाळु श्रीमद गुरुदेवनां बोधवचनो

कंगालमां कंगाल मनुष्यमां पण दिव्यता गुप्तपणे बेठेली छे हुं अंदरने पूजनारो छुं.

वस्तुनुं पीछान करवानुं पुस्तकोद्वारा थई शके पण पुस्तकोनुं ध्येय तेज आत्मज्ञान, ज्ञाननी हद ते परमपद.

ॐ

तत्वने समज्यो नथी त्यां सुधी उपर उपरनी बधी एक-टींग छे.

ॐ

जे सत्य छे ते मारो धर्म छे. बहारनी तकलीफ शी वीसादमां ? अंदरनी शांती वगर बधु नकामुं छे.

विवेकानंद ए पंडित हता अने स्वामी राम ए जबरजस्त आत्मार्थि हता.

ॐ

प्रवृत्तिमांथी निवृत्ति ल्यो एटले निवृत्तिमय प्रवृत्ति करो.

ॐ

बनी शके तो तमारा जीवनथी ने छेवटे तमारा विचारोथी बीजाने पवित्र करो.

महानुभाव ! मारे जे जोईए छे ते तारी पासे नथी अने तुं कृपा करीने मने आपवा मागे छे, तेनी मने परवा नथी.

ॐ

विश्व मारुं मित्र छे ने हुं सौनो मित्र छुं.

ॐ

हुं त्यागी छुं ए भावनानो त्याग तेज साचो त्याग कही शकाय. शांतीमय जीवन एज खरुं जीवन छे एकान्तमां आनंद छे ॐ अर्हम्‌मां परम सुख छे.

मनुष्यनुं जीवन एवुं होय के जेनी देवताओ पण यात्रा करवा आवे, एटलुं जीवन जीवजो.

ॐ

भांग पीधेला मनुष्यने जेम छाश पीतां नीसो उतरे छे. तेम आ संसारमां संसारनी भावनाथी खरडाएला आत्माने शुद्ध करवा ॐकार मंत्रना जापनी जरुर छे सहु आत्माने शुद्ध करवा मथजो.

लघुतासे प्रभुता मळे, प्रभुतासे प्रभु दूर,
लघुता बीन प्रभुता नहि, लघुता घटमां पूर.

परम कृपाळु श्रीमद गुरुदेवने त्रिकाळवंदन हो !

ॐ

आत्मभावना

श्री सद्गुरु भगवानना पवित्र चरण कमळमां

ओ ! प्रभो !

शुं लखुं ? शुं बोलुं ? शुं वदुं ?

लखतां कलम कंपाय छे, बोलतां जीभ धूजवाट करे छे अने वदतां विषयकषायमां मस्त बनेल आत्मा नशामंध दशामां गोथां खाई रह्यो छे.

ओ ! प्रभो !

तुं त्यागी अने हुं रागी ! तुं खाखी अने हुं स्वाखी ! तुं सद्गुणी अने हुं दुर्गुणी ! तुं परमात्मा अने हुं पापात्मा ! तुं निरंजन अने हुं रंजन ! तुं नीराकार अने हुं आकार !

आ जीवनो अंत केम आवे ? महासागरमां हींडोळे चडेलुं आ न्हाव पार केम पामे ?

ओ ! प्रभो !

आशा अने तृष्णाना गाढ बंधनमां घवायो छुं, संसार समुद्रमां झोलां खाउं छुं, मोह सैन्यमां झपाझपी करी रह्यो छुं, विषयनी अंध मस्तिमां क्षणे क्षणे कर्म बांधी रह्यो छुं, पळे पळे दोषीत बनतो जाउं छुं, नर्कनी नराधम वेदी उपर अनेक नृट-कांड भजवी रह्यो छुं, भव भ्रमणानी दुष्ट खाईमां पटकायो छुं, पुत्रमित्र अने कुटुंबमां पागल बन्यो छुं, मारुं मारुं करी वेल बनी रात अने दिन चक्की पीसी रह्यो छुं, नीजनुं भान भूल्यो छुं,

काळचक्रना पंजामां फसेलो होवा छतां नाशवंत मायानी पाछळ गेबी पासा खेली रह्यो छुं.

हुं अती दुष्ट छुं ! महा क्रूर छुं ! कलंकी छुं ! निष्ठुर छुं ! नराधम छुं ! निर्लज छुं ! आ पापीनो उद्धार केवी रीते थाय ?

त्हारा शिवाय हवे कोई शरण नथी. तुं अशरण शरणाधार, दीनपाळक, दीनदयाळ, दीनकृपाळ, दीनबंधु, दीनदातार, दीनानाथ, कृपासिंधु, परब्रह्म परमात्मा छुं.

ओ ! प्रभो !

तुज माता तुज पीता तुज कुटुंब तुज लक्ष्मी अने तुज सर्वस्व छुं.

दयाकर ! दयाकर ! मारा अनंत दोषोने माफ करी त्हारो चरण स्पर्शी बनाव.

हवे क्यां जाउं ? क्यां पोकार करुं ? क्यां जईने रडुं ? त्हारा शिवाय मारां अश्रु कोण लूसे ? त्हारा शिवाय हवे नयनमां मार्ग नथी सूझतो ! कोई हवे शरणांगत अने आश्रयदाता नथी. त्हारा विना कोण तारे ? कोण पार उतारे ? हवे तो आ दीन दुःखी पामर नीराधार आश्रीत बाळकनो हाथ पकड, घणुं कहुं थोडामां मानी सत्य पंथे दोर अने रहेम दीली दृषावी मने त्हारा शरणमां ज राख.

ॐ शांती ॐ शांती ॐ शांती

त्हारो नीराधार दीन दुःखी बाळक

किंकरना त्रिकाळ नमस्कार नमस्कार

श्री मांडोली नगर
अने
मंगल महोत्सव
अपूर्व उत्साह अने दैवी प्रतिभा

मारवाडना मध्य प्रांतमां जोधपुर प्रदेशमां आवेल मांडोली गाममां एक दिव्य महोत्सव थवाना भेदी गगननादो छवाया हता. गामनी चोतरफ वसता मानवसमूहमां आनंदनी अवधि न हती. विविध प्रकारनी कल्पनाओ अने भिन्न वातावरणो चर्चाई रह्यां हतां. लखलूट लक्ष्मीना खर्चे महोत्सव उजववानी जोसभेर तैयारीओ चालो रही हती. जेम बने तेम महोत्सवनी मनोरम शोभानो अनुपम चितार घडवा मांडोली गामना पंचो भेदी विचार श्रेणी गुंथी रह्या हता. दश दश वर्ष पूर्वनी आ अपूर्व सामग्रीओ हती. आजे एनो उदय थवाना मधरा, मधरा, सूरो गाजता हता. मनोहर भव्य मंडप, पंच पहाडोनी अद्भूत रचना, हस्ती, रथ, पालखी, घोडा, निशान, बाजींत्रो, तंबु, रावटीओ, कीटसनलाइटो आदि सज करवानी तमन्नामां मांडोली गामना मानवो कम्मर कसी पोतानो जावी भोग आपवा पोत-पोताना कार्यमां मशगुल बन्या हता.

सो घरोना मांडोली गामना महाडमां आजे शुं बनवानुं छे? अने शुं बनशे? तेनी कल्पना सरखी पण ते समये घडाती न हती. बस एकज धून अने एकज तानमां मांडोली गामनां

मानवो हर्षघेलां बन्यां हतां. फळीए फळीए हर्षनां पूर उभरायां हतां. गाममां वसतो प्रत्येक मानव आ अपूर्व अवसरनी घडी- ओ गणतोचकोर नयनो तलसावी रह्यो हतो. आनंदनी उर्मीओ अने हर्षनी सीमा न हती.

एक रात्रि किंकरना आत्ममंदिरमां आ दिव्य भणकाराए प्रवेश कर्यो अने घडीभरने माटे किंकरनो आत्मा विविध प्रकारना विचार समुद्रमां बेशुद्ध बन्यो. एना मानस अंतरमां एक दैवी स्वप्न थयुं. अनेक प्रकारनी कल्पनाओ अने भेदी विचारो साथे किंकरना आत्माए मांडोली गाममां प्रवेश कर्यो. आसपासना मानवसमूहमां चर्चातो वार्तालाप अने कल्पनाना सूरो श्रवण करतां किंकरनो आत्मा हर्षघेलो बन्यो अने सर्व वार्तालापनुं मनन कर्या बाद किंकरे प्रश्न कर्यो !

"अरे! भाईश्री? आपना आ नाना गामना महाडमां चालतो वार्तालाप श्रवण करतां मने तो आ बधुं अलौकीक भासे छे. मारो आत्मा तो आ सर्व कल्पनाओ श्रवण करी चकित बन्यो छे.

"अरे! भाईश्री? आ शुभ कार्य कोना माटे थवानुं छे?"

"सांभळो—अमारा गाममां एक दिव्य महोत्सव उज- ववानी अपूर्व तैयारीओ चाली रही छे जे समये त्रण प्रसंगो उजववाना छे."

"१ अमारा गाममां नवीन बंधावेल भव्य जिनालयमां

पंचम तीर्थंकर भगवान श्री सुमतिनाथ स्वामीनी मूर्ति बीराजमान करवा सारु अंजनशलाका अने प्रतिष्ठा महोत्सव थवानो छे."

"२ त्रिकाळदर्शी महात्मा, गुरुदेव, भगवंत, श्रीमद् धर्मविजयजी तथा तेओश्रीना शिष्य महान तपस्वी, महात्मा, गुरुश्री तिर्थविजयजीनी मूर्तिओ बहारना शिखरबंधी भव्य गुरु-मंदिरमां बीराजमान करवानी छे तथा ध्वजदंड, कळश आदि चढाववानी शुभ क्रियाओ थवानी छे."

"३ अमारा मारवाड देशना जैनोनी एक कोन्फरन्स एकत्र थवानी छे."

प्रस्तुत हकीकत श्रवण करी किंकरे फरी प्रश्न कर्यो. "अरे! भाईश्री? आ त्रिकाळदर्शी महात्मा, गुरुदेव, भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी ते कोण?"

"सांभळो—अमारा मांडोली गाममां आजथी एक सैका पहेलां आहिर (क्षत्रिय) कोममां जन्मेल एक कोळोजी नामना मानवे जैन दीक्षा अंगीकार करी हती. तेओ महासमर्थ आत्म-ज्ञानी, त्रिकाळदर्शी पुरुष हता, तेओनुं जीवन अति अद्भूत हतुं, अने देवलोक पण अहींयां ज थया हता. जे जगाए तेओश्रीना देहने अग्निसंस्कार कर्यो हतो ते जगाए कुदरती लीला लींमनां वृक्ष उग्यां हतां. हाल त्रण लीमनां वृक्ष ते जगाए मोजुद छे. तेओनुं नाम श्रीमद् धर्मविजयजी महाराज अने तेओश्रीना शिष्यनुं नाम तपस्वी महात्मा श्री तिर्थविजयजी. तेओ मणादर

गामे आहिरज्ञातीमां जन्मेल हता अने मुडोतरा गामे देवलोक पाम्या हता. आ बन्ने गुरुनी मूर्तिओ अमारा गामना नाके जे जगाने अमे पेसकु कहीए छीए ए नजीक मनोहर, सुशोभीत, भव्य गुरुमंदिर तैयार करेल छे तेमां गुरुमूर्तिओ बिराजमान करवानी छे."

"अरे! भाईश्री? आ बधुं कोना हस्ते थशे? ते शुभ क्रियाओ करावनार पण कोई महान पुरुषज होवा जोइए."

"सांभळो–अगाउ आपने समजाव्युं ते त्रिकाळदर्शी महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजीना शिष्यना शिष्य जेओश्री हाल माउन्ट आबू देलवारा मुकामे बिराजे छे, तेओना नामथी भारतवर्षमां आजे भाग्ये ज कोई अजाण हशे! तेओ-श्रीनुं शुभ नाम विश्वोपकारी, जगतवंदनीय, महान योगीराज, गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी. तेमना हस्ते आ शुभ क्रियाओ सिद्ध थवानी छे."

किंकरनो आत्मा आ घटना श्रवण करी आनंदसागरमां स्तब्ध बनी गयो. एना आत्ममंदिरमां हर्षनी सीमा न रही अने हर्षघेला अंतरे बोली उठयो!

"अरे! भाईश्री? आपनी आ दिव्य वाणीए मारा आत्ममंदिरमां कोई अनेरुं तान मचाव्युं छे अने अपूर्व स्नेहमां तरबोळ बन्यो छुं, के हवे शुं बोलुं तेनुं पण भान भूल्यो छुं."

"अरे! भाईश्री! आपे जे महान पुरुषनुं नाम मने श्रवण

कराव्युं तेओने तो हुं मारा आत्मोद्धारक प्रभु तरीकेज स्वीकारुं छुं. ए मारा हुं एनो. मारा मन तो एज पिता, एज माता, एज कुटुंब, एज धन, एज वैभव अने एज सर्वस्व. अहो! ए दीनानाथ, दीनबंधु, दीनदयाळ, दीनरक्षक, शांतीना साचा उपासक, पर ब्रह्म परमात्म स्वरूप सदगुरु भगवान.

"अरे! भाईश्री ? हवे तो कहेवानुं ज शुं होय! आपना गामनां अति पुन्य कहेवाय के आवा दिव्यपुरुष आपना आंगणे पधारशे अने तेओश्रीना शुभ हस्ते सर्व कार्यनी सिद्धि थशे.

"वाह! भाई वाह! हवे तो आनंद आनंद ने आनंद ज मनाववानो.

"अरे! भाईश्री! आनंदनी समृद्धि अने आपनी दिव्य कल्पनाओए मारा आत्माने बेशुद्ध बनावी मूक्यो. परंतु हवे मने कंईक ख्याल आवे छे के आपे मने प्रथम श्रवण कराव्युं ते त्रिकाळदर्शी महात्मा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी ते तो मारा आत्मोद्धारक गुरुदेव भगवंतना दादागुरु थाय. तेओना अद्भूत जीवन संबंधी केटलीक हकीकत मने पण अगाउ जाणवाने मळेली छे, जेनी में मारी नोंधपोथीमां अगाउ केटलीक नोंध करेली छे."

आटला संवाद वाद किंकरनुं स्वप्न पूर्ण थयुं.

संवत १९९४ना फागण सुद एकमनी सवारे श्री मांडोली गामथी कंकोत्री आवी पहोंची. अति लांबी अने पहोळी विशाळ

कंकोत्री, रंगबेरंगी शाही अने सोनेरी अक्षरोथी मुद्रित थएली मनन करी अति हर्षवंत बन्यो. तेनी अंदरना लखाणनी लीटी लीटी वांचतां मारा प्रत्येक रोममां विशुद्ध स्नेहनी सरिता वहेवा मांडी अने ए दिव्य उत्साह साथे मांडोली गाम तरफ प्रयाण करवानी तैयारीमां मशगुल बन्यो.

मारे आ स्थळे मारा आत्मप्रिय शेठजी वकील श्रीयुत हिंमतलाल प्रभाशंकरनो पुनः आभार मानवो जोईए के वखतोवखत आवा मांगलिक प्रसंगोमां अति उत्साहपूर्वक तेओ मने रजा आपे छे अने तेओना मारा परत्वेना अपूर्व प्रेमभावने लईने ज हुं आवा अपूर्व अवसरोनो भोगी बनुं छुं. आ सर्वमां ए मारा आत्मोद्धारक गुरुदेव भगवंतनी कृपानो धोध वृषी रह्यो छे.

आ समये गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी माउन्ट आबू देलवारा मुकामे बीराजता हता. तेओश्रीना मांडोली आगमन माटे मांडोली गामना पंचो सख्त दोडधाम करी रह्या हता. तेनुं कारण मात्र एटलुंज हतुं के प्रथम प्रतिष्ठा महोत्सवनुं मुहूर्त संवत १९९४ना फागण सुद बीजनुं निश्चित थयुं हतुं. परंतु श्री गुरुदेवभगवंते पाछळथी फागण सुद दशम जाहेर करवाथी पंचो अधीरा बन्या हता. श्री गुरुदेवभगवंते आगमननी चोक्कस आगाही आप्या बाद सर्व पोतपोताना कार्यमां लागी गया.

मांडोली गाममां आवनार मानव समूह माटे मांडोली

गामना नाके एक विराट नगर रचवामां आव्युं, ज्यां पाल, तंबु अने रावटी आदिनी सुंदर सगवडो नियत थई चुकी. रात्रिमां भव्य प्रकाशने फेलाववा गाम अने नवा रचेल नगरनी आसपास कीटसन लाईटोनी हार गोठववामां आवी. एक माइल दूरथी आवनार मानवने नीरखतांनी साथेज कोई अनुपम दृश्य भासे एवी योजनाओ साथे हरेक पाल अने तंबु उपर त्रीरंगी ध्वजो मनोहर सौन्दर्यता साथे ऊडवा लाग्या. गाममां प्रवेश करवाना तमाम रस्ताओ उपर कलामय, रंगीन, अति मनोहर अने शोभानुं अंजन करावता आकर्षक दरवाजा गोठवाई चूक्या, दरवाजे दरवाजे चोघडियां माटे नानी मढुलीओ शणगारवामां आवी अने आखुंए गाम ध्वजापताकाथी सुशोभित बनी गयुं.

महोत्सवना समारंभमां नियत थएल वरघोडाने शोभाववा मनोहर पालखी, रथ, घोडां, हस्ती अने अमदावादनुं जाणीतुं बुलंद अवाज पोकारतुं शीख–बेन्ड आदि आवी पहोंच्युं.

आ अपूर्व महोत्सवना समारंभना अंगे वधु आकर्षक तो एकज हतुं के एक मनोहर भव्य मंडपमां पंच पहाडोनी रचना करवामां आवी हती, जेनी शोभा अने रचना मानवसमूहनां मनने रंजन करे तेवी हती. गामना नाके भव्य गुरुमंदिर अने गामनी वचमां भव्य जिनालय अपूर्व शोभा दिपावी रह्यां हतां.

आजुबाजुना गाम अने देशोदेशमां आ अपूर्व महोत्सवनो

संदेश पहोंची वळ्यो. संवत १९९४ना फागण सुद त्रीजना प्रभातथी महोत्सवनी शरुआत हती.

संवत १९९४ना फागण सुद त्रीजनुं प्रभात थयुं. आजे महोत्सवनो प्रथम दिवस हतो. कुंभस्थापना आदि विधिनुं शुभ मुहूर्त पण आजे हतुं. जेम जेम सूर्यनारायणे पोतानो प्रकाश फेंकवा मांड्यो तेम तेम मांडोली गामनी प्रतिभा खीलवा मांडी. चोघडियां अने बुलंद वाजींत्रोए गगनचुंबी घोषणाथी मानवसमूहना अंतरने आनंदमुग्ध बनावी दीधां. आजना प्रभातथी मांडोली गाम एक विराट नगर बनवा मांड्युं. एना आंगणे मानवनां पूर उभरावा मांडयां अने व्यवस्थापको पण पोतानी हर्षभरी मुराद पार पाडवा आवनार मानवसमूहनी सगवड करवा पोतपोताना कार्यमां लागी गया. असंख्य मानवसमूहना भोजनने माटे नवकारशीनां जमण तथा पाणीनी घणीज सुंदर योजनाओ करवामां आवी हती. विविध प्रकारनी पूजाओ भणाववा सारु याचक मंडळीओ पण आवी गई हती. घोडा, उंट, गाडां, मोटर आदि वाहनोए गामनी आजुबाजुना मार्गने घेरी लीधो अने ए दिव्य आनंदनां संस्मरणो गामनी चोतरफ फरी वळ्यां. आजुबाजुना गाममांथी वोलींटयरोनी सेंकडोना प्रमाणमां टुकडीओ आवी गई. तेओ पण सेवाभावनाना आदर्शने शिरोमान्य करी पोतपोताना कार्यमां लागी गया.

गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीए पण

आबू माउन्ट देलवाराथी फागण सुद त्रीजना रोज विहार शरु करी दीधो अने फागण सुद छठनी बपोरे मांडोली गामथी एक कोस दूर आवेल गाम रामसीणमां पधारी गया. आ शुभ समाचार फेलातां असंख्य मानव मेदनी रामसीण मुकामे गुरु-दर्शनार्थे पहोंची वळी. रामसीण अने मांडोली गाम वच्चेनो मार्ग मानवसमूहथी एटलो बधो भरचक रह्यो के फागण सुद सातमनी सवार सुधी आ सर्व घटना विद्यमान रही.

फागण सुद सातमना रोज सवारमां श्री गुरुदेव भगवंत मांडोली गाममां प्रवेश करवाना हता. सातमना प्रभाते तेओ-श्रीना सामैया माटे दबदबाभर्यो भव्य वरघोडो नीकळवानो हतो. आ हकीकत पंचोए प्रथमथी नक्की करी हती.

सातमना प्रभातथी मानवसमूहमां कोई अनेरो आनंद फेलायो अने मांडोली गामना पंचो जे अधीरा बनी कार्य करी रह्या हता ते पगभर बन्या अने वरघोडानी सामग्रीओनी शरु-आत थई. प्रथम घोडा उपर सुशोभित वस्त्रोथी सज्ज थएल मानव निशान डंकाना भेदी पडघा पाडतो निशान डंका साथे खडो थयो, तेनी पाछळ वोलीटयरोनी टुकडीओ अने तेनी पाछळ मनोहर अंबाडीथी सुशोभित हस्ती अने तेनी पाछळ बुलंद अवाज पोकारतुं अमदावादनुं शीख-बेन्ड पोताना भव्य ड्रेसोथी सज्जित थई खडुं थई चूक्युं अने तेनी पाछळ ए दिव्यपुरुष, गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांति-सूरीश्वरजी पोताना दिव्य प्रकाश द्वारा मानवसमूहनां मन

हरी रह्या हता. आसपास एक माईलना घेरावा सुधी मानव-सेना अपूर्व उत्साह साथे 'जगदगुरुदेवनी जयना भेदी गगन नादोनो गुंजार करी रही हती. आ दिव्य पुरुषना अपूर्व सामैयानो आनंद लूंटवा हरेक मानव पोतानी शक्ति अनुसार आ दिव्य पुरुषना शीर उपर नाणांनी वृष्टि करी रह्यां हतां. बदामो अने नाणांनी वृष्टि साथे तथा जयजयनां गान अने वाजींत्रोनी गगनचुंबी घोषणाओ साथे आ दैव वरघोडाए मांडोली नगरमां प्रवेश करवा मांडयो. मानवसमूहनी असंख्य मेदनीने लई लांबो टाईम पसार करी मांडोली नगरमां आ दिव्य वरघोडो प्रवेशी गयो. मानवसमूह एटलो बधो उलटयो हतो के सूर्यनारायणनो प्रकाश पण मंद दीसतो हतो.

असंख्य मानव मेदनीए गुरुदेव भगवंतना निवास स्थानने घेरी लीधुं के रात्री अने दिवस मानव मेदनीनां जुथ त्यांथी विखरातां ज नहि.

फागण सुद त्रीजथी सुद नोम सुधीमां विविध प्रकारनी पूजाओ साथे अंजनशलाकानी विधि पूर्ण थई. फागण सुद दशमनो दिन ए आखाए महोत्सवना माटे मुख्य हतो, कारण के ते दिवसे प्रतिष्ठा आदि कार्य सिद्ध थवानुं हतुं. फागण सुद दशमनुं प्रभात थतां मांडोली गाम एक विराट नगर बनी गयुं. आजनी प्रतिभा अपूर्व हती. सो घरनी वस्ती-वाळुं मांडोली गाम कल्पनामात्र न आंकी शकाय तेवुं आजे एक भव्य विराट नगर बन्युं अने चढता पहोरे ए प्रभाव-

शाळी दिव्य पुरुष, गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीना शुभ हस्ते पंचम तीर्थंकर भगवान श्री सुमतिनाथस्वामी तथा गुरुदेव भगवंत श्रीमद् धर्मविजयजी तथा तपस्वी गुरु श्री तिर्थविजयजीनी मूर्तिओ, ध्वजदंड, कळश आदि स्थापन करवामां आव्यां अने जय जयकारना भेदी गगननादो साथे एकत्र थएल असंख्य मानव मेदनीए अपूर्व महोत्सवने हर्षभर्या उद्गारो साथे वधावी लीधो. आ शुभ दिवसे जोधपुर स्टेट तरफथी विमान आववानुं हतुं परंतु तेना आगला दिवसथी हवानुं वधु प्रमाणमां जोर होवाथी विमानमांथी पुष्पनी वृष्टि करवानी हती ते कार्य बंध करवुं पडेलुं.

फागण सुद अगियारशना रोज शांतिस्नात्र भणावी महोत्सव विसर्जन करवामां आव्यो. सर्व कार्य ए दिव्य पुरुष, विश्वोपकारी, जगतवंदनीय, महान योगीराज, गुरुदेव, भगवंत, श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीना दिव्य प्रभावथी आनंद मंगल साथे समाप्त थयुं.

भारतवर्षमां हजु आवा दिव्य पुरुषो जीवंत छे तोज आवा मांगलीक प्रसंगो उद्भवी शकाय छे, जेनो आ एकज अलौकीक दाखलो छे, के एक सो घरना नाना गामडामां एक भव्य विराट नगर वस्युं अने नजरथी नहि नीहाळेल अद्भूत प्रसंगो अने दिव्य घटनाओ नीरखवा मळी. अने ए दिव्य पुरुषे पोताना स्वमुखे जयघोष कर्यो के मांडोली गाम

भविष्यमां एक नगरी बनी जशे अने आवो अपूर्व महोत्सव मांडाली गाम अने एनी आसपास अद्यापि सुधी थयो नथी अने थशे नहि.

मांडोली गामना सो घरनी वस्तीवाळा मानवसमूहे पोताना तन, मन अने धनना अपूर्व भोगे रात्री अने दिवसना सतत परिश्रमो सहन करी एक लाख जेवी मोटी रकमना द्रव्यनो सन्मार्गे व्यय करवानी झुंबेश उठावी पोतानी मनोकामना सिद्ध करी छे. अने असंख्य मानवमेदनी तेना आंगणे उलटी पडी तेओने माटे अति अने श्रेष्ठ भावनाथी नवकारशीनां जमण-उतरवाने माटे सुंदर सगवड आदि अनेक प्रकारनी श्रीसंघे जे अपूर्व भक्तिथी सेवा बजावी छे, ते बदल तेओ सर्वने आ स्थळे पुनः पुनः धन्यवाद घटे छे अने तेओनी आ अपूर्व धर्मभावनाने माटे तेओनो जेटलो आभार मानवामां आवे तेटलो ओछो छे.

आ उपरांत जेओश्रीनो अंतकरणथी उपकार अने गुणा-नुवाद गावाना छे ते दिव्यपुरुष, विश्वोपकारी, जगत्वंदनीय, महान् योगीराज, अनाथोनाथ, दीनबंधुभगवान, परब्रह्म, परमात्म स्वरुप, शांतीना साचा उपासक, प्रभावशाळी, कृपा-निधान, प्रातःस्मरणीय, अध्यात्मज्ञान दीवाकर, सर्व जीवोने समभावथी नीरखनार, तिर्थरुप, गुरुदेव श्री विजयशांतिसूरी-श्वरजीनो आ नानकडा मांडोली गाम उपर दिव्य प्रभाव न होत तो आ सर्व घटना बनवी असंभवित हती. तेओश्रीना

अद्‌भूत प्रभावने लईनेज असंख्य मानवमेदनी मांडोली गामना आंगणे उलटी पडी.

आ सर्वमां अंतःकरणथी उपकार तो श्री गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरीश्वरजीनो ज मानवानो छे के हजु भारत-वर्षमां आपणा महद् पुन्य प्रतापे ज आवा दिव्य पुरुषो जन्म धारण करी अंधकारमां डूबता जगतने सन्मार्गे प्रेरवा पोतानी अलौकीक शक्ति अने अद्‌भूततथी अनेक जीवात्माओने तारी पोतानो जीवनविकास शुभ मार्गे दिपावी रह्या छे.

दादागुरुनी जन्मभूमि पण मांडोली गाममां हती अने स्वर्गवास पण त्यां ज पाम्या हता.

अंतमां मारी एटली ज प्रार्थना छे के श्री गुरुदेव भगवंतनी कृपाथी मांडोली गाम अने तेमां वसता प्रत्येक मानवसमूहनी दिनप्रतिदिन वृद्धि थाओ अने आवा मांगलिक प्रसंगो तेना आंगणे वधु अने वधु उजवाओ तथा श्री गुरुमंदिरनी ज्योत सदाने माटे तेजस्वी रहो.

दुहा

मंगल महोत्सव उजव्यो, धन्य मांडोली गाम;
संघतणी सेवा कीधी, रह्युं अविचळ नाम. १

गाम मटी नगरी बनी, मानवनो नहि पार;
देश देशथी आवीया, बीन गणतीनी हार. २

पंचम तीर्थंकर प्रभु, सुमतिनाथ कहाय;
धर्म, तिर्थ, गुरुवर तणां, बिंब रूडां देखाय. ३

पंच पहाड रचना करी, शोभानो नहि पार;
हस्ती रथ ने पालखी, पूजा विविध प्रकार. ४

अंजनशलाका उजवी, शांतिसूरीश्वर राय;
शुभहस्ते सर्वे कर्युं, जय जयकार गवाय. ५

ओगणीसस्हें चोराणुने, फागण शुक्ल वदाय;
दशमीने चडते दिने, मूर्ति स्थापन थाय. ६

अहो ! प्रभो आ शुं बन्युं, दिव्य लीला देखाय;
बन्युं नहि बनशे नहि, आनंद अवधि थाय. ७

संघ जमण दवलां थयां, लब्धि जळ उभराय;
शांतिसूरी गुरुदेवना, सकळ लोक गुण गाय. ८

देशमहीं डंको थयो, दीनानाथ कहेवाय;
अवधूत योगीश्वर प्रभो, घरघर नाम पूजाय. ९

आहिर कुळमां उपन्या, जन्म मणादर गाम;
पिता भीमतोला अने, मात वसु छे नाम. १०

जननी कुक्षी दिपावीने, कुळ तार्युं गुरुराय;
आठ वरसमां निसर्या, संयम भार वहाय. ११

सोळ वरसे दीक्षा लीधी, गाम रामसीणमांय;
विश्व तणा साधु बन्या, तिर्थविजय गुरुराय. १२

धर्म तिर्थ गुरु पाटना, पटधर ए कहेवाय;
आत्मज्ञान घटमां वर्युं, अर्हं जाप जपाय. १३

महान पुरुष पूर्वे थया, एह पंथ लेवाय;
एकीका पहाडो फर्या, भक्ति सुधा उभराय. १४

घोर घटा वन वृक्षनी, गुफा खीणो गुरुराज;
रात दिवस लय ध्यानमां, साध्युं आतम काज. १५

मृत्यु भय अळगो कर्यो, सोहं सोहं ध्यान;
विश्व बधुं एकी दीसे, समता रसनुं पान. १६

शांती सरोवर नित्य वहे, करे कंईक जन स्नान;
रोग शोग भय भागीने, वरे भक्तिनुं तान. १७

सूत्र अहिंसा आदर्युं, बुझव्या कंई राजन;
भवसिंधुथी तारीया, पतित कर्या पावन. १८

अभयदान आप्यां अति, बच्या पशुना प्राण;
असंख्य जन उद्धारता, तज्यां मोह ने मान. १९

विश्व हमारुं मित्र छे, विश्व तणो हुं मित्र;
क्षाम्य करो आपु क्षमा, एज जीवननी प्रीत. २०

लक्ष चोराशी योनीमां, नथी कोईथी वेर;
पूर्व सबंधे सांपडे, प्रभुभक्तिनी लहेर. २१

गुणो अति गुरुदेवना, लखे न आवे पार;
भाग्यवान नर पामशे, सफळ करे अवतार. २२

धन्य मांडोळी गामनां, अति पुन्य कहेवाय;
सो घर केरा म्हाडमां, उत्सव भारे थाय. २३

लक्ष रूपैयो वापर्यो, भक्ति तणो नहि पार;
पंच मळी सघळुं कर्युं, पुरण कर्यो नीरधार. २४

तन मनथी सेवा करी, हर्ष तणो नहि पार;
गुरुभक्तिना तानमां, वर्त्यो जय जयकार. २५

अनुपम रचना आदरी, शोभा दिव्य अपार;
मानवपूर उभर्यो अहीं, भाग्यवंत नर नार. २६

दिव्य दीपक झळकयो अहीं, मणीमय रूप देखाय;
रवि शशि रळीयामणो, पूर्ण रूपे प्रगटाय. २७

मनवांछित फळ पामीया, पूरा मनोरथ थाय;
नगर मांडोळी गाममां, अमृत जळ वरसाय. २८

रात दिवस श्रम सेवीने, सहन कीधो परिताप;
क्षमा धैर्य हृदये धरी, भक्ति करी अमाप. २९

पंच मांडोली गामना, चरणे करुं प्रणाम;
मानव जन्म सफळ कर्यो, कर्युं संघसन्मान. ३०

वृद्धि होजो गामनी, रहो सर्व आबाद;
महेर थजो गुरुदेवनी, वर्तो जय जयनाद. ३१

अनेक भवना पुन्यथी, मल्यो गुरुनो योग;
नमन करी पावन बन्या, नाश थयो सहु रोग. ३२

किंकर कहे आ शुं बन्युं, मुखे न वर्णन थाय;
कृपा पुरण गुरुदेवनी, पार कदी न पमाय. ३३

ॐ शांती ॐ शांती ॐ शांती

अनुक्रमणिका

द्वीतीय गुरु काव्य तरंग

तृतीय श्रीशांतिसूरीश्वर काव्य तरंग

॥ ॐ श्री सद्गुरुभ्यो नमोनमः ॥

॥ प्रथम वैराग्य पद तरंग ॥

ॐ

वसंततिलकावृत

ओ ! विश्वनाथअभ्युदय आप लावो,
ओ ! सृष्टिना सृजनहारो कंइ बचावो;
ओ ! विश्वना रुषीवरो कंइ आपध्यावो,
योगेश्वरो मुनीवरो पंथे चढावो.

ॐ

१

आरती

जय त्रिभुवन स्वामी.

अजर, अमर, अविनाशी, शीवपुरना गामी. जय. १

आप अखंड अरुपी, अक्षय सुख पामी;

चर्णपडुं शीरनामी, दीनपाळकस्वामी. जय. २

भीन्नरुपे भजवाता, घटघटमां स्वामी;

आखर एक स्वरुप छो, अकळकळा गामी. जय. ३

आप विना जगमांहे, शरण नहि स्वामी;

रोग, शोग, भयनाशक, छो अंतर्यामी. जय. ४

ओ! जगत्राता दाता, विश्वेश्वर ज्ञानी;

बाळक अर्ज स्वीकारो, अंतरमां आणी. जय. ५

विश्वमहीं वसीया छो, जग वंदन स्वामी;

शुद्ध मने भजवाथी, तरशे सहु प्राणी. जय. ६

किंकर कहे प्रभु विण नहि, जग तारक स्वामी;

शांति! प्रभो दील वसीया, छे आतमरामी. जय. ७

ॐ

२

कवाली

हवे आ जिंदगीमां हे, निराशाने निसासा शा;

समर्प्युं सर्व भावीने, पछी खोटा दिलासा शा. १

जगत वैभव भले सारा, थवाना ए नथी त्हारा;
छतां ए अल्प मायामां, विवादोने विलापो शा. २

ललाटे लेख अंकाया, बुरा सारा निभाववाना;
पछी आ जिंदगीमांहे, कडापाने बळापा शा. ३

जीवन जे चर्णमां मुक्युं, जरूर ए पार करवाना;
तने जे माहरो जाणे, पछी अहींआं विसामा शा. ४

हृदय धीखतुं सदा त्हारुं, नथी शांती पलकमां हे,
छतां आ जिंदगीमां हे, अमाराने त्हमारा शा. ५

नथी आशा जणाती तो, करे छे आश शा माटे;
सफळ आशा जडी छे तो, जगतना भ्रम खोटा शा. ६

त्हमारुं मानशो जेने, कदापि ए थवानुं नहि;
छतां ए छेलबाजीमां, प्रपंचोने तमासा शा. ७

कर्यो निरधार अंतरमां जीहां निजनुं तमे भासो;
पछी आ विश्वनी मांहे, परायाना भरोंसा शा. ८

मरे जीवे रडे कुटे, जवाना सर्व ए पंथे;
छतां व्यवहारना फंदे, जीवनना मोह खोटा शा. ९

फना ये जिंदगानी छे, जुठा छे जग्तना पाशा;
परार्थे अर्पवा काजे, पछीथी वायदा शा शा. १०

त्हमारा प्राणने श्वासो, पराधिन पींजरे पूर्या,
पछी आ जिंदगीमां हे, दिवाळीने दिवासा शा. ११

शरण जेनुं स्वीकार्युं छे, पुरो विश्वास निरधार्यो;
प्रीतम ए एक जीवनना, पछीथी व्यर्थ फांफां शां. १२

त्हमे क्षण एक नहि भूलो, पछी ए केम विसारे;
तफडतां ने फफडतां पण, प्रभोनी एक छे आशा. १३

फकिरीमां अमिरी छे, अमिरी एज छे साची;
फकिरी जिंदगी मांहे, खुशाली ने दशेरा शां. १४

त्हमे पण एक दिन किंकर, जवाना जिंदगी त्यागी;
पछीथी आ जीवनमां हे, निराशाने निसासा शां? १५

॥ २ ॥

गझल

सरिता नीरना जेवुं, जीवन मानवतणुं एवुं;
पलकमां सर्व सुकातुं, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. १

भले धनवान के राजा, कदापी होय महाराजा;
प्रभुनां बाळ सर्वे छे, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. २

भले सत्ता तणा मदमां, अनाथोने रीबावे तुं;
समय पण आवशे त्हारो, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ३

भले हो ! योगी के भोगी, करे सहु डोळ डाह्यानो;
कदापी एह पण भूलता, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ४

रुषीवरने मुनीवर सहु, गणाता सृष्टीना दाता;
चढेला ते कदी पडता, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ५

कुकर्मो घोर आचरतां, डर्यो नहि तुं अरे ! भाई;
रडे छे तुं पछी शाने, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ६

दुःखो ज्यारे तने घेरे, पछी तुं इष्ट संभारे;
बुरुं करतां न विचारे, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ७

अरे ! लक्ष्मी तणा मदमां, कर्यां अपमान तें कंइनां,
थशे इन्साफ़ दरबारे, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ८

मर्यो तुं कंइ नजर भासे, तीहां तुं अश्रु सारे छे;
पलकमां सर्व तुं भूलतो, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ९

नथी कंइ साथ लाव्यो तुं, नथी कंइ लइ जवानो तुं;
छतां तुं मोहमां भटके, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. १०

करी ले कार्य उपकारी, जीवन म्हारुं सफळ करवा;
कहे शांति चरण किंकर, जुठुं संसारनुं स्वप्नुं. ११

ॐ

४

गझल

जगतना खेल छे खोटा, फुटे जळ मांहे परपोटा;
छतां मानव नहि समजे, वधो संसार बुरो छे. १

मळी आ जिंदगी मोंघी, जीवन मानव अमोलुं छे,
समय तुं व्यर्थ ना गणतो, वधो संसार बुरो छे. २

सूतो शैय्या महीं ज्यारे, सगां सहु मन विषे धारे,
अमारुं शुं थशे त्यारे, बधो संसार बुरो छे. ३

अहो ! आ जिंदगी पामी, अरेरे ! शुं कर्युं एने;
विचारे कोई नहि एवुं, बधो संसार बुरो छे. ४

रडे सहु स्वार्थने माटे, दुःखो एनां विचारे नहि;
पछी पोको मूके मोटी, बधो संसार बुरो छे. ५

जगतनी कारमी बाजी, जीते वीरला प्रभो कोई;
सजे छे आत्मनुं थोडा, बधो संसार बुरो छे. ६

करी आ विश्वनी सेवा, भलाई कर अरे ! भाई;
भरी ले आत्मनुं भातुं, बधो संसार बुरो छे. ७

अरे ! आ सर्व बंधनथी, जीवनने मुक्त करवाने;
शरण गुरु देवनुं साचुं, बधो संसार बुरो छे. ८

हजुं तुं चेत कंइ भाई, जीवन त्हारुं सफळ करवा;
भजी ले सदगुरुवरने, बधो संसार बुरो छे. ९

कमाणी कर अरे ! एवी, बनेलां पाप धोवाने;
कहे शांति चरण किंकर, बधो संसार बुरो छे. १०

ॐ

५

गझल

दशानां चक्र उंधां त्यां, सूझे साचुं नहि भाई;
लखाया लेख भावीमां, टळे नहि कोईथी भाई. १

दशा उंचे चढावे छे, दशा पळमां गीरावे छे;
दशानां दुःख भोगवतां, बचावे कोई नहि भाई. २

दशाथी कंई बने डाह्या, दशाथी कंई बने राया;
दशाथी कंईक दुनीआमां, दीवाना थई फरे भाई. ३

दशा सारी अने बुरी, नडे छे सर्व मानवने;
फसातां नव छुटे कोई, दशाना चक्रथी भाई. ४

सुखी बननार गुण गावे, दुःखी जन अश्रु उभरावे;
दशा त्यां भान भूलावे, रडावे कंईकने भाई. ५

दशानां चक्र दुनीआमां, फरे छे चोदीशा मांही;
छुटया नहि कोई एनाथी, भजीलो ईष्टने भाई. ६

हकीमो डोकटरो ज्ञानी, छुटया नहि कोई विज्ञानी;
श्रीमंतो रायने राणी, घणा पळमां बन्या फानी. ७

अजब ! मस्ति जगावीने, धूनी घटमां धखावे छे;
रुषीवर एह पण कोई, दशाथी नहि छुटया भाई. ८

महा मुनीजन रडावे ए, फना पळमां बनावे छे;
वीराओ सत्य समजीने, भजे छे ईष्टने भाई. ९

पूकारे धर्मना ज्ञाता, सदा ज्ञानी वीरो गाता;
दशाना दुःखथी बचवा, भजीलो ईष्टने भाई. १०

निरंतर ईष्टने भजलो, नथी एना विना कांई;
कहे शांतिचरण किंकर, भजीलो ईष्टने भाई. ११

६

गझल

अमारा ने त्हमारामां, बधो वहेवार जुदो छे;
त्हमारुं जो तमे समजो, पछीथी पंथ सीधो छे. १

त्हमाराने अमारामां, रडे छे विश्वना प्राणी;
नहि समजे अरे निजनुं, तीहां वहेवार जुदो छे. २

समजदारो नहि समजे, मरे छे सर्व मायामां;
भींतर निजनुं पीछाणे तो, पछीथी पंथ सीधो छे. ३

जगतना नाश सुखोमां, लडे छे भाईने भांडु;
अरे ! ए सत्य समजे तो, पछीथी पंथ सीधो छे. ४

लडावे स्वार्थ सर्वेने, मरावे स्वार्थ सर्वेने;
हृदयनो स्वार्थ समजे तो, पछीथी पंथ सीधो छे. ५

श्रीमंतो सज्जनो राया, नवीरा सर्व दुनीआना;
मरे छे मोहमां सर्वे, तीहां वहेवार जुदो छे. ६

हकीमो डोक्टरो ज्ञानी, जगतना वैद्य विज्ञानी;
वने अंतर नहि ज्ञानी, तीहां वहेवार जुदो छे. ७

भण्याथी नव मळे भाई, नथी इल्कावथी कांई;
हृदय निजनुं भणे त्यारे, पछीथी पंथ सीधो छे. ८

जगतनी छे अजब ! माया, अरेरे कंईक सपडाया;
भजीलो सद्गुरु राया, पछीथी पंथ सीधो छे. ९

हृदय धोया विना भाई, नहि समजाय निज केरुं;
कहे किंकर करो भक्ति, पछीथी पंथ सीधो छे. १०

ॐ

७

गझल

मल्युं मानवजीवन मोंघुं, अरेरे ! कंईक करतोजा;
प्रभुना पंथ जावाने, सडक तुं साफ करतो जा. १
चोराशीलाख फेरामां, अनंति वार तुं भमीयो;
थवाने मुक्त एमांथी, सडक तुं साफ करतो जा. २
धूनी भक्ति तणी साची, मूकी तुं क्यां भुंडा भटके.
जीवनने पार करवाने, सडक तुं साफ करतो जा. ३
जगतनी चोतरफ जोतां, घटा घनघोर भासे छे;
नथी कंई मार्ग देखातो, सडक तुं साफ करतो जा. ४
मायाने मोहनां बंधन, नयनमां तें कर्युं अंजन;
मूरख ए सर्व छोडीने, सडकतुं साफ करतो जा. ५
फस्या सौ मोह मायामां, प्रभो ! आ विश्वना प्राणी;
भजी जगदीशने भाई, सडकतुं साफ करतो जा. ६
मदीरा पान पी नाचे, अभागी त्यां पुरो राचे;
नरकनी खाण ए साचे, सडकतुं साफ करतो जा. ७
तर्यो नहि कोई मायामां, नहि तरशे अरे ! भाई;
मूरख ए सर्व मिथ्या छे, सडक तुं साफ करतो जा. ८

जीवन मृत्यु नहि आवे, अमर आनंद ज्यां पावे;
अरे ! ए शोध करवाने, सडक तुं साफ करतो जा. ९

रडे तुं जेहना माटे, नथी त्हारुं थवानुं ए;
कहे शांति चरण किंकर, सडक तुं साफ करतो जा. १०

ॐ

८

गझल

अजब ! मस्ति जीवन केरी, अखंडानंद साचो छे;
नथी त्यां कोईनी परवा, अरेरे कंईक करतो जा. १

झूकावे आत्म मस्तिमां, वीरो एवा घणा थोडा;
मरणनो भय विचारीने, अरेरे ! कंईक करतो जा. २

जगत जंजाळने छोडी, जीवनने जे समर्पे छे;
धरावी धून अंतरमां, अरेरे ! कंईक करतो जा. ३

निशानी स्वर्गनी साधे, प्रभुनो मार्ग ए बांधे;
जीवनथी सर्व आराधी, अरेरे ! कंईक करतो जा. ४

मथ्या जे मुक्तीना माटे, जवाना एह जन नक्की;
जीवन उज्वळ बनावाने, अरेरे ! कंईक करतो जा. ५

नथी ज्यां डाघ अंतरमां, कलेजां साफ जेनां छे;
करीने आत्ममां शुद्धी, अरेरे ! कंईक करतो जा. ६

फर्यो तुं वेल चक्कीमां, सगांने स्नेहीओ माटे;
विचार्युं नहि कदी त्हारुं, अरेरे ! कंईक करतो जा. ७

जवानुं पंथ लांबा छे, विकट छे मार्ग ए भाई;
जीवन रक्षक इहां शोधी, अरेरे! कंईक करतो जा. ८

जीवन निर्दोष जेनुं छे, नथी ज्यां भेद अंतरमां;
शरण एनुं स्वीकारीने, अरेरे! कंईक करतो जा. ९

कहे शांति चरण किंकर, भजी ले सद्गुरुवरने;
नथी एना विना साचुं, अरेरे! कंईक करतो जा. १०

९

गझल

सळगती आग कर्मोनी, वसे त्यां मानवी भाई;
बुझावी शांत करवाने, शरण गुरु देवनुं साचुं. १

जगतनी चोतरफ भाळो, भभकती कर्मनी ज्वाळा;
अरे! ए नाश करवाने, शरण गुरु देवनुं साचुं. २

करेलां कर्म भोगवतां, बचावे कोई नहि भाई;
हृदयमां हाम भरवाने, शरण गुरु देवनुं साचुं. ३

भले हो रंक के राजा, कदापी होय महाराजा;
छुटया नहि कोई कर्मोथी, शरण गुरु देवनुं साचुं. ४

अजब! छे कर्मनी माया, हजारोने नचावे छे;
उगरवा एहथी भाई, शरण गुरु देवनुं साचुं. ५

रुषीवरने मुनीवर सहु, छुटया नहि कोई कर्मोथी;
वदे छे एह अंतरमां, शरण गुरु देवनुं साचुं. ६

बने छे जेह जन मोटा, नमे छे कंईक चरणोमां;
अरे ! ए सर्व जुठुं छे, शरण गुरु देवनुं साचुं. ७

भिखारी भीख मागे छे, नयनमां अश्रुसारीने;
पूकारे एह अंतरमां, शरण गुरु देवनुं साचुं. ८

उंडा उतरी निहाळोतो, बधो संसार बुरो छे;
कहे शांति चरण किंकर, शरण गुरु देवनुं साचुं. ९

ॐ

१०

गझल

अजब ! दुनीआतणी बाजी, गजब करनार माया छे;
बने सहु कर्मने आधीन, अजब ! छे कर्मनी माया. १

बने छे कर्मथी सर्वे, श्रीमानो रंक के राजा;
बधी ए कर्मनी बाजी, अजब ! छे कर्मनी माया. २

पलकमां शेठ बननारा, घडीकमां भीख मागे छे;
नचावे कर्म सर्वेने, अजब ! छे कर्मनी माया. ३

ग्रहो ज्यारे नडे त्यारे, बिचारो कर्म संभारे;
रडे त्यां अश्रु सारीने, अजब ! छे कर्मनी माया. ४

मोटरमां म्हालतो त्यारे, गरीबनुं त्यां नहि हाले;
वधुमां गाळ वे आले, अजब ! छे कर्मनी माया. ५

नीशो लक्ष्मीतणो चडतां, मरे मदमां पुरो मानव;
मूरख त्यां भान भूले छे, अजब ! छे कर्मनी माया. ६

पूकारे आंगणे आवी, अनाथो चर्णमां पडतां;
दया अंतर नहि आवे, अजब ! छे कर्मनी माया. ७

करे संदेश आवीने, जीवननुं श्रेय करवाने;
अघोरी नींदमां ऊंघे, अजब ! छे कर्मनी माया. ८

समय पलटाय छे ज्यारे, पछी अंतर विचारे छे;
कहे शांति चरण किंकर, अजब ! छे कर्मनी माया. ९

ॐ

११

गझल

अति तें पुन्य कीधां तो, मल्युं मानवजीवन भाइ;
अमालुं रत्न समजीने, जीवन नौका तरी ले तुं. १

चोराशी लाख फेरामां, जीवन मानव अति दुलहुं;
भूल्यो तो हाथ नहि आवे, जीवन नौका तरी ले तुं. २

उतारी केफ अंतरथी, भजी ले इष्ट तुं भाइ;
करी भक्ति हृदय साची, जावन नौका तरी ले तुं. ३

चडयुं छे वहाण चंटोळे, अरे ! संसार सागरमां;
सुकानी शोधीने साचो, जीवन नौका तरी ले तुं. ४

भम्यो भवसागरे बहुधा, छतां कंइ पार नव आयो;
टीकीट जल्दी खरीदीने, जीवन नौका तरी ले तुं. ५

करे तुं श्रम हवे शानो, चढयुं छे नाव तोफाने;
डूब्युं तो सौ व्यथा जाशे, जीवन नौका तरी ले तुं. ६

हजु छे हाथमां बाजी, सुकानी शोध तुं जल्दी;
मदद जगदीशनी मागी, जीवन नौका तरी ले तुं. ७

मुसाफीर सर्व दुनीआना, अमरपद कोइ नहि लाव्युं;
जवानुं एक दीन नक्की, जीवन नौका तरी ले तुं. ८

अरे ! तुं एकलो आव्यो, जवानो एकलो भाइ;
नहि त्यां साथ कंइ आवे, जीवन नौका तरी ले तुं. ९

तजी तुं मोहने माया, भजी ले सद्गुरु राया;
कहे शांति चरण किंकर, जीवन नौका तरी ले तुं. १०

१२

गझल

मीला नर भव महा पुन्ये, जीवन तुं पार करतो जा;
पीछेसे हाथ नहि आवे, मुसाफीर ख्याल करतो जा. १

बनी अंधा फीरा जगमे, विषयकी नींदमें सोता;
विचारा नहि कभी तेरा, मुसाफीर ख्याल करतो जा. २

मर्यो तुं इश्कबाजीमें, अरेरे ! रोझ सम भटके;
जीवन तेरा पीछाना नहि, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ३

मूरख नीज भानको छोडी, फसायो नर्क वारेमें;
पीधी विष्टा मुखोसे त्हें, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ४

बुरी हे ईश्ककी बाजी, पूकारे सज्जनो भाई;
सूनाते धर्म के ज्ञाता, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ५

अंधेरा चोतरफ घेरा, गगन वादळ चडा भारी;
फसाया उनबीचो में तुं, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ६

तजी दइ इश्कका खेलो, भींतरमें भक्ति रस रेडो;
सफळ मानवजीवन तेरा, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ७

कहे शांति चरण किंकर, बीना भक्ति नहि जगमें;
सहारा कोइ भी सच्चा, मुसाफीर ख्याल करतो जा. ८

ॐ

१३

गझल

विषयनी अंध मस्तीमां, मुसाफीर कंइ फसाया छे;
बनी ए केफमां पागल, अरेरे मानवी भटके. १

विषयनी वास छे झेरी, बनावे ए कदी व्हेरी;
छतां पागल भमे छे त्यां, अरेरे मानवी भटके. २

मळी जो एक समये तो, कदी छोडी नहि छूटे;
अजब ! ए मोहनी मानी, अरेरे मानवी भटके. ३

विषयमां कंइ बने अंधा, भूलीने भान भटकाता;
विषय रस चाखवा माटे, अरेरे मानवी भटके. ४

समज दारो नहि समजे, महामुनीओ फसे छे त्यां;
बुरी ! छे इश्कनी माया, अरेरे मानवी भटके. ५

चढेला उंच्च कोटीमां, तपस्वी ए गीरावे छे;
करे पळमां फना सर्वे, अरेरे मानवी भटके. ६

पत्नीव्रत छोडीने भाइ, अरेरे कंइक रखडे छे;
पतीव्रत पाळवुं दुल्हुं, अरेरे मानवी भटके. ७

फसावे मस्त त्यागी तो, छुटे क्यांथी अरे! मानव;
पूकारे ज्ञानीओ विष्टा, अरेरे मानवी भटके. ८

कहे शांति चरण किंकर, वीराओए तजे भाइ;
गजब छे इश्कनी माया, अरेरे मानवी भटके. ९

१४

कवाली

बतादो यह प्रभो! मुझको, मेरा उद्धार कैसे हो;
दीखादो यह प्रभो! मुजको, मेरा उद्धार कैसे हो. १

भयानक युद्ध कर्मोका, चला भवसिंधु में भारी;
मेरा संसार सागरमे, मेरा उद्धार कैसे हो. २

जुठी माया जगतकेरी, फसाया जाण हो कर में;
कुकर्मों घोरही कीधां, मेरा उद्धार कैसे हो. ३

वनिता पुत्रके कारन, वनी पागल ढुंडा जगमे;
पडा में मोह कीचडमें, मेरा उद्धार कैसे हो. ४

अतीशय जुल्म हे मेरा, कीया सब शेरसम होके;
सताया रंक मानवको, मेरा उद्धार कैसे हो. ५

बुरी ये जिंदगानी हे, गुन्हा अगणीत प्रभो मेरा;
मूरख में क्या करुं वर्णन, मेरा उद्धार कैसे हो. ६

अमोलां आप के वचनो, भूली मे नींदमें सोता;
नहि शोचा कभी घटमें, मेरा उद्धार कैसे हो. ७

बीना भक्ति नहि जगमे, सहारा कोइ भी सच्चा;
गुजारूं नाथ चरणोमे, मेरा उद्धार कैसे हो. ८

दयाकर ओ दयासिंधु, शरण सच्चा तुमारा हे;
कृपालु नाथ बतलादो, मेरा उद्धार कैसे हो. ९

पीडा हरते त्रिभुवनकी, वहां पर तुच्छ में तो हुं;
बता दो अब क्षमाकरके, मेरा उद्धार कैसे हो. १०

प्रभो! शांति बीना जगमे, नयन भासे नहि मुजको;
पूकारे बाळ दीनकिंकर, मेरा उद्धार कैसे हो. ११

१५

हरिगीत छंद

कीरतारना दरबारमां, जावुं बधाने छे खरे;
भाख्युं हशे भावी महीं, ए तो कदापि ना फरे. १

दुनिआ तणा किचड महीं, तें मोज मन मानी पुरी;
भातुं हशे नहि संग तो, भमवुं थशे निश्चय खरे. २

जाना पडेगा एक दीन, अपना मुसाफीर देशमें;
खर्ची हशे नहि साथ तो, साचो मुकानी नहि मळे. ३

इश्वर तणा दरबारमां, इन्साफ छे साचो अरे;
करणी करे तेवुं मळे, ए वात तो निश्चय खरे. ४

थेली हशे जो पापनी, तो सुख साचुं क्यां मळे;
करतां विचारे नहि पछी, रोया करेथी शुं वळे. ५

परमार्थ कार्य कर्युं हशे तो, कंइक साचुं सांपडे;
बाकी वधुं सहु जुठ छे, रोया करेथी शुं वळे. ६

भक्ति सुधा घटमां भरो, परमार्थ सहु प्रीते करो;
किंकर कहे छे शांतिनो, तो आत्मनुं सार्थक खरे. ७

१६

हरिगीत छंद

संसारना अवधि दुःखोमां, सुख साचुं क्यां मळे;
ज्यां युद्ध चाल्यां कर्मनां, त्यां मानवीनुं शुं वळे,
अंगार सळग्या रोममां, ए आगमां सर्वे वळे;
सद्गुरु साचा मळे तो, कंइक पण शांती वळे. १

माया धुतारी मानवीने, मोहमां पटके खरे;
माया तणी महा जाळमां, मानव फसाया छे अरे,
माया महा विकराळ छे, माया अधम करनार छे;
माया छुटे ए नर तणो, जगमां ऊंचो अवतार छे. २

मोह सैन्य फरी वळ्युं, त्यां मार्ग साचो क्यां जडे;
आंधी चढी चारे दिशामां, पंथ साचो ना जडे,
मारा अने त्हारा महीं, झकडइ मुवा मानव खरे;
ए मोहनीमां मुग्ध थइने, विश्वमां भटक्या करे. ३

माया तणा घा वागतां, पोकार सहु मोटा करे;
निज कर्म भोगवतां अरे, अश्रु नयनमांथी खरे,
प्रभु भक्तिमां लय थाय तो, शांती अहो ! साची मळे;
किंकर कहे निज आत्मनुं, ए कंइक पण साधे खरे. ४

१७

हरिगीत छंद

दुःखो तणा डुंगर पडे, सुख साहीबी कदी सांपडे;
तो पण अरे ! आ देहथी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. १
वैभव मळे लक्ष्मी मळे, माया तणा महेलो जडे;
ए बे घडीनी मोज छे, प्रभुने कदी भूलशो नहि. २
मंगळ अमंगळ गृह तूठे, कर्मो कदी निज पर वूठे;
ज्वाळा उठे तो पण अरे, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ३
झोला हिंचोळा खाटमां, म्हाल्या करे आनंदथी;
ए बे घडीनी साहीबी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ४
बागो बगीचा पुष्पना, सुखमां सुवास लीधा करो;
ए वासना स्वप्ना समी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ५
मोटर अने गाडी महीं, आरामथी फरता फरो;
ए पळ महीं फानी थशे, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ६
राज्य रिद्धिवंत नर, पळमां भ्रूजावे कंइकने;
ए पण घणा फानी थया, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ७

भीख मागवी जगमां पडे, अपवाद लोको बहु करे;
तो पण अरे आ देहथी, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ८

जगसुख साचुं दुःख छे, सुख सत्य न्यारुं छे खरे;
ए सत्य सुखने शोधवा, प्रभुने कदी भूलशो नहि. ९

साची कृपा कीरतारनी, तृणने तजी मेरु करे;
किंकर कहे पळ मात्र पण, प्रभुने तमे भूलशो नहि. १०

१८

हरिगीत छंद

प्राण जावे तोय गुरुनुं, हुं भजन छोडीश नहि;
जगत जड व्यवहारने हुं, जीवनमां जोडीश नहि. प्रा० १

आफत पडे कदी शीर परे, अन्नपान खावा नव रहे;
लोको भले नींदा करे, पण भक्ति हुं मुकीश नहि. प्रा० २

जगत साथे भगतने, वनतुं नथी ए जाणजो;
ए जगत मुजने शुं करे, ए हृदयमां आणीश नहि. प्रा० ३

शूरवीर सद्गुरु ओळखे, पागल विचारो शुं करे;
परवा करे नहि प्राणनी, ए वीरता चूकीश नहि. प्रा० ४

आशा नथी आ हृदयमां, धनमाल के दोलत तणी;
जरुर छे जे अखूट धननी, जगतमां शोधीश नहि. प्रा० ५

परमार्थ तो प्रीते करी, मुज आत्मनुं भातु भरीः
सद्गुरु संगत करी, सेवा कदी भूलीश नहि. प्रा० ६

आशीष मागुं छुं प्रभो, भक्ति अने नीती तणी;
किंकर कहे छे हर्षथी, हिंमत कदी हारीश नहि. प्रा० ७

ॐ

१९

हरिगीत छंद

एक दिन चाल्या जवानुं, मोतना पंथे खरे;
मृत्यु न छोडे कोइने, ए वात तो निश्चय खरे. १
राजा गया चक्री गया, कोइ जगमां ना रह्या;
लाखो गया दुनिया तजीने, मोतना पंथे खरे. २
वैदो हकीमो डोक्टरो, विज्ञानीओ मोटा भले;
ए पण जवाना ए दशामां, मोतना पंथे खरे. ३
धनवान हो के रंक हो, विद्वान के पंडित हो;
ए पण अरे ! चाल्या जवाना, मोतना पंथे खरे. ४
सत्ताधीशो न्यायाधीशो, सत्तातणा मदमां मरे;
सत्ता तजी ए पण जवाना, मोतना पंथे खरे. ५
लाखो लूंटावे पळ महीं, जीववा तणी आशा ग्रही;
ए पण बधा चाल्या गया छे, मोतना पंथे खरे. ६
डोक्टरो जग ना मळे, उपचार त्यां बहुधा करे;
आखरे रडता गया छे, मोतना पंथे खरे. ७
त्रिकाळ ज्ञान धरावनारा, ज्ञानीओ मोटा भले;
ए पण कहे एक दीन जवुं छे, मोतना पंथे खरे. ८

परमार्थ कार्य कर्युं हशे तो, कंइक साथे आवशे;
पाप पुन्य भरी जवानुं, मोतना पंथे खरे. ९
लक्ष्मी अने वैभव हशे, ते सर्व अहींआं रही जशे;
जनम्या हता तेवा जवानुं, मोतना पंथे खरे. १०
परिवार सहु रडतो रहे, अश्रु नयनमांथी वहे;
काळ हरण करी जवानो, मोतना पंथे खरे. ११
परमार्थ सहु प्रीते करो, निज आत्मनुं भातु भरो;
किंकर कहे निश्चय जवानुं, मोतना पंथे खरे. १२

२०

हरिगीत छंद

लक्ष्मी अने वैभव तजीने, कंइक जन चाल्या गया;
नारी अने परिवार सहु, पोको मूकी रोता रह्या. १
मुछो परे लींबु ठरे, फक्कड बनी जगमां फरे;
परवा न करता कोईनी, ए पण अरे! चाल्या गया. २
मारा अने त्हारा महीं, मगरुर थइ म्हाल्या करे;
ए पण अरे! माया मूकीने, एकदीन चाल्या गया. ३
जे शीरपरे चमर ढळे, खमा, खमा, सेवक करे;
ए पण बधा वैभव तजीने, एकदीन चाल्या गया. ४
नोबत गगडती गृहपरे, पहेरेगीरो पहेरो भरे;
ए महेल ने मोटर मूकीने, एकदीन चाल्या गया. ५

गरमी पडे हील पर जता, सुख साह्यबीमां फालता;
ए मोजने आराम छोडी, एकदीन चाल्या गया. ६

हाकल थतां जी जी करे, मानव घणां चरणे पडे;
ए शेठ, शेठ, कहावनारा, एकदीन चाल्या गया. ७

डाघ नहि कपडे पडे, अंगे सदा अक्कड रहे;
ए शरीरने संभाळनारा, एकदीन चाल्या गया. ८

आ जिंदगी फानी थशे, शुभ कृत्य साथे आवशे;
आत्मनुं साध्या विनाना, मानवी रोता रह्या. ९

भक्ति सुधा अंतर भरो, निज आत्मनुं सार्थक करो;
भक्ति विनाना मानवी, दुनिआ तजी रोता रह्या. १०

माया तणा आ महेल छे, भक्ति जीवननी व्हेल छे;
ए व्हेलमां वीरला सजीने, मुक्तिमां चाल्या गया. ११

चेतो मुसाफीर जग्तना, हरदम भजो कीरतारने;
किंकर कहे एना विना, भवसागरे भमता रह्या. १२

ॐ

२१

वंदन तो कर रहा हुं चाह्य तारो या न तारो-ए राग

एसी दशा ही आवे, कबही मीलेगा भगवंत;
जब आत्म शुद्ध थावे, तबही मीलेगा भगवंत. १

निज देह भान छोडा, मायासे प्रीत जोडी;
डूबने लगी हे होडी, कबही मीलेगा भगवंत. २

भगवंत नाम भारी, प्रभु मोक्ष के धिकारी;
पडो चर्ण वारी वारी, तबही मीलेगा भगवंत. ३

भगवंत नाम अपना, बाकी सबी हे सपना;
हरदम हृदयमें जपना, तबही मीलेगा भगवंत. ४

भगवंत ज्योत जागे, मद मोह मान भागे;
घटमांहे घंट वागे, तबही मीलेगा भगवत. ५

निश्चय कभी न छोडो, चीत्त एक मांहे जोडो;
मृत्यु पडे न छोडो, तवही मीलेगा भगवंत. ७

सब विश्व एक जाणो, उरमां न भेद आणो;
समभाव को पीछाणो, तवही मीलेगा भगवंत. ८

लघुता महीं प्रभुता, लघुता प्रभु बतावे;
घट मेल साफ थावे, तवही मीलेगा भगवंत. ६

किंकर कहे में राचुं, गुरुतान मांहे नाचुं;
शांति प्रभो! कुं याचुं, मुजको मीला ए भगवंत. ९

ॐ

२२

राग-वंदन तो कर रहा हुं

अव तो दया कृपा के, करुणा करो ए भगवंत;
प्रभो! आप महेर करके, करुणा करो ए भगवंत. १

महा घोर कर्म कीधां, दुःखीआ को दुःख दीधां;
सव आप ही पीछाणो, करुणा करो ए भगवंत. २

मुख को दीखा शकुं नहि, असा जीवन हमेरा;
सब आप माफ कर के, करुणा करो ए भगवंत. ३

भमीयो हुं अंध हो के, नयनो बनाये कातील;
सब जान के फसा हुं, करुणा करो ए भगवंत. ४

मुंसे न बोल शकता, हस्तोंसे लीख शकुं नहि;
कुछ आपसे न छाना, करुणा करो ए भगवंत. ५

कपटों की जाळ रच के, निर्दोष जन फसाया;
सब स्वार्थ से कीया हे, करुणा करो ए भगवंत. ६

कादव की खाइ दीसतां, कीडा अति पडा हे;
उन्मेका एक में हुं, करुणा करो ए भगवंत. ७

में नीच घोर कर्मी, सबसे बडा अधर्मी;
अब हे शरण तुमारा, करुणा करो ए भगवंत. ८

वचनो तुमारा भूल के, में क्रूर हो के भमीया;
शोचा नहि जीवनमें, करुणा करो ए भगवंत. ९

गुरुवर प्रभो! कृपाळु, दीन पर बडे दयाळु;
तुम बीन सहु अकारुं, करुणा करो ए भगवंत. १०

गुरुशांति बीन जगतमें, नयनोमें कोइ भासे;
किंकर पूकार करते, करुणा करो ए भगवंत. ११

ॐ

२३

राग—वंदन तो कर रहा हुं

मानव बधा जगतमां, माया महीं मरे छे;
जाण्या छतां बिचारा, भमरा थइ फरे छे. १

माया हसावे सहुने, माया रडावे सहुने;
माया लडावे सहुने, माया गजब करे छे. २

माया अति बुरी छे, माया अजब छुरी छे;
कर्मों महीं वींधावा, माया खरे शुळी छे. ३

माया ए कंइक मार्या, मायाथी कंइक हार्या;
मायाथी कंइक जगमां, बेहाल थइ फरे छे. ४

माया तजीने वीरला, कंइ आत्म धून धरवे;
कहे शांति चर्ण किंकर, ए नर पुरा तरे छे. ५

२४

वंदन तो कर रहा हुं—ए राग

लक्ष्मी विना जगतमां, कींमत नथी गणाती;
लक्ष्मी वीना जगतमां, बुद्धि नथी मनाती. १

लक्ष्मी लीला बतावे, लक्ष्मी सूता जगावे;
लक्ष्मी वीना जगतमां, हीकमत नथी मनाती. २

लक्ष्मी तणा नीशामां, कंइने अरे! रडावे;
लक्ष्मीमां अंध थइने, आंखो नथी खुलाती. ३

लक्ष्मीमां मोज माने, प्रभु रुप पोते जाणे;
परवा न कोइनी छे, ए वात त्यां वदाती. ४

अडबोथ भोट होवे, बुद्धि न होय तोये;
लक्ष्मी वडे जगतमां, कीर्ती पुरी मनाती. ५

लक्ष्मीनी सर्व माया, लक्ष्मीनी सर्व छाया;
पळमां बने भिखारी, त्यारे नजर कराती. ६

बहु लोभ थाय त्यारे, पळमां हे नाश वाळे;
पछी हाय लागे त्यारे, पोको घणी मूकाती. ७

लक्ष्मीथी पुन्य करवा, महा ज्ञानीओ पूकारे;
कंइ पुन्यशाळी नरनी, परमार्थमां लूंटाती. ८

लक्ष्मी चपळ कहाती, पळमां फना ए थाती;
कहे दास जाय त्यारे, नव कोइथी रखाती. ९

२५

राग–गुरु शांतिसूरीश्वर स्वामी रे गुण गाउं आपना

हुं भान भूली अथडायो, जगमां हवे थशे शुं नाथ!
में हसते हसते कीधां, दुःखीआने दुःख बहु दीधां;
विषपान मुखेथी पीधां, मारुं हवे थशे शुं नाथ! हुं–१

मायामां खेल गुमायो, महाक्रूर वनी भटकायो;
जुल्मी नर हुं कहेवायो, मारुं हवे थशे शुं नाथ! हुं–२

प्रभु नाम हृदय नहि आयुं, निजकेरुं भान भूलायुं;
आत्मीक हीत नहि समजायुं, मारुं हवे थशे शुं नाथ ! हुं-३

करतां नहि कोइ विचारे, भोगवतां त्राय पूकारे;
पछी प्रभु, प्रभु, संभारे, रडतां मूके मस्तके हाथ. हुं-४

सुत मात पिताने यारी, जुठी सहु दुनीआदारी;
प्रभु नित्य भजो भयहारी, साचा अनाथना ए नाथ. हुं-५

आ अरजी नाथ स्वीकारो, तुम अनाथ बाळ उगारो;
किंकर कहे डूबता तारो, झालो हवे अमारो हाथ. हुं-६

६

राग-हे रंगभीना नेमनगीना

अंध बनी आथडीया जगमां, मळे अरे क्यांथी भगवान.

प्रभु पंथ भाई जगथी न्यारो, अलख वासमां ए वसनार;
दिव्य चक्षु प्रगटे साचां तो, पछी मळे स्हेजे भगवान. अंध-१

प्रभु पंथ भाई अति विकट छे, कायर नरनुं त्यां नहि काम;
मृत्यु तणा भयने विसरे तो, पछी मळे स्हेजे भगवान. अंध-२

टीलां करता माळा जपता, मुखे करे प्रभुनां गुणगान;
तप करवाथी जप करवाथी, कदी नथी मळता भगवान. अंध-३

भस्म लगावे धून धखावे, राम रामनुं करता तान;
नदी तटे जइ स्नान करे छे, छतां नथी मळता भगवान. अंध-४

रुषी बने कंई संत बने छे, फकिर बनी करता गुलतान;
घट मंदिर जोसाफ बने तो, पछी मळे स्हेजे भगवान. अंध-५

आत्म पीछाणे जोतुं त्हारो, सदा करे समता रस पान;
विश्व बधुं निज सममाने तो, मळे पछी स्हेजे भगवान. अंध-६

किंकर कहे प्रगटी अंतरमां, ज्योत प्रभुनुं साचुं तान;
मस्त मही लखतो हुं सर्वे, मळ्या प्रभो शांति गुणवान. अंध-७

२७

राग-हे रंगभीना नेमनगीना

नाथ निरंजन भवभय भंजन, नित्य हृदयमां ध्यावो रे;
भव दुःख भंजन पाप निकंदन, दुःखडां दूर भगावो रे. नाथ-१

अकळ अरुपी ब्रह्म स्वरुपी, झघमग ज्योत जगावो रे;
दिव्य स्वरुप ओ ! नाथ त्हमारुं, बाळकने बतळावो रे. नाथ-२

दुःखडां टाळो नाथ निहाळो, तुम वीन नहि आधारो रे;
मार्ग भूलेला दीन बाळकने, रस्ते आप चढावो रे. नाथ-३

अमृत जळ अमपर वरसावो, साचो स्नेह वहावो रे;
भक्त तणी भीड दूर करीने, ज्योतिसे ज्योत मीलावो रे. नाथ-४

अकळ कळाओ ! नाथ तुमारी, मूर्ति मुज मन प्यारी रे;
त्रिलोक केरानाथ प्रभुश्री, दीन दातार कहावो रे. नाथ-५

पाय पडुं छुं नाथ तुमारा, अर्ज हृदयमां ध्यावो रे;
किंकर कहे आ दीन बाळकने, डूबतो आप बचावो रे- नाथ-६

२८

राग-धन्य भाग्य अमारां आज पधार्या मोंघेरा महेमान

कृपा करी ओ ! नाथ अमारा अंतरमां वसजो.

सदा हुं जाप जपुं त्हारा, प्रभो मुज प्राणथकी प्यारा;
घट घटनी सहु आप पीछाणो, अंतरमां वसजो. कृपा-१

मने आधार पुरो त्हारो, भूलोथी नाथ सदा वारो;
नाथ निरंजन भवदुःख भंजन, अंतरमां वसजो. कृपा-२

नयनमां नाथ तने भाळुं, दीसे नहि कोइ हवे वारुं;
परम कृपाळु आप दयाळु, अंतरमां वसजो. कृपा-३

प्रभो हुं दीन बाळक त्हारो, दीसे नहि कोइ हवे आरो;
त्रिभुवन नायक नाथ अमारा, अंतरमां वसजो. कृपा-४

वस्या छो विश्वमहीं स्वामी, धूनी तुम भक्ति तणी जामी;
बाळक किंकरदास तणा, घटमंदिरमां वसजो. कृपा-५

ॐ

२९

राग-में बनकी चीडीयां बनमे बनबन बोलुं रे

ओ ! नाथ तुमारो बाळ गणीने तारो रे;
भान भूली भटकातो आप उगारो रे. ओ ! १

रडवडीयो मानवसंसारे, जन्ममरणनां दुःख बहु भारे;
तुम बीनकोन उगारे मुजने तारो रे. ओ ! २

चोराशी चक्करमां भमीयो, मानव भव बहु दुलहो मळीयो;
अंध बनी आथडीयो मुजने तारो रे. ओ ! ३

घोर घटा नयनोमां भासे, जीवन दुःखोथी मानव त्रासे;
तुम बीन शांती न थाशे मुजने तारो रे. ओ! नाथ ४

बाळक आ निरधार तुमारो, तुम बीन नाथ दीसे नहि आरो;
डूबतो आप उगारो मुजने तारो रे. ओ! ५

नाथ निरंजन घटमां प्यारो, प्रभु बीन कोई नहि आधारो;
किंकरदास कहे छे जन्म सुधारो रे. ओ! ६

ॐ

३०

राग-मेटे झुले छे तरवार

त्रिभुवन तारण हार, नाथ आप हैडे वस्या छो;
नाथ केरां दर्शन भविक जन पावे,
पुन्यवान नरथी पमाय. नाथ १

नाथ नाम त्हारुं अधिकगुण वाळुं,
विश्व मही सघळे गवाय. नाथ २

मुक्तिपुरीमां नाथ आसन जमावो,
विश्व मही ज्योती झघाय. नाथ ३

नाथ आप त्यागी ने बाळ हुं अभागी,
केम करी पारे पमाय. नाथ ४

विश्व गुण गावे आनंद उभरावे,
ध्यान त्हारुं साचुं कहेवाय. नाथ ५

काम क्र ध त्याग्यां ने भवदुःख भाग्यां,
अष्टकर्म तोडयां कहेवाय. नाथ ६

नाथ आप साधीने शीवसुख पाम्या,
मोक्ष सुख वाध्युं कहेवाय. नाथ ७

अजर, अमर पद आप धरावो,
नाथ नाम सघळे पूजाय. नाथ ८

मोहमान त्यागे तो भव दुःख भागे,
ज्ञान कंईक अंतरमां थाय. नाथ ९

नाथ गुण गावो आनंद उलटावो,
प्रेम तणी छोळो वहाय. नाथ १०

जुठुं जगत वधुं चेतीने चालजो,
जुठ महीं सर्वे लूंटाय. नाथ ११

जुठ मही म्हालोने जुठ मही फालो,
भक्तिना अंतर वहाय. नाथ १२

माया खातर भाई सघळा रडे छे,
नाथ नाम कंईए ना थाय. नाथ १३

नाथ नाम खातर तुं साचो रडे तो,
नाथ तने अहींआं भेटाय. नाथ १४

नाथ नाम साचुं ए विण वधु काचुं,
भजवाथी भवदुःख जाय. नाथ १५

किंकर बाळनाथ चरणोमां विनवे,
नाथ त्हारी साची छे स्हाय. नाथ १६

ॐ

३१

राग—नागरवेलीयो रोपाय

निरंजन नाथ प्रभो भगवान, करो मन मंदिरीयामां स्थान.
त्रिलोक केरानाथ गवाया, त्रिभुवन तारण हार रे;
वृषावी अमृत रसनुं पान, करो मन मंदिरीयामां स्थान. नि–१
आत्म अखंडानंदनां, झरण पीलावो आप रे;
मचावुं अंतरमां हुं तान, करो मन मंदिरीयामां स्थान. नि–२
आप अखंड स्वरुप छो, अविनाशी पद धार रे;
करु हुं नित्य तमारुं ध्यान, करो मन मंदिरीयामां स्थान. नि–३
पीडा हरो त्रण लोकनी, विश्व तणां दुःख कापो रे;
त्हमारां सर्व करे गुणगान, करो मन मंदिरीयामां स्थान. नि–४
नाथ अनाथ सनाथ छो, साचा सर्जन हार रे;
प्रभो! मुज अंतरना छो प्राण, करो मन मंदिरीयामां स्थान. नि–५
दीन बाळक हुं आपनो, किंकर उरमां धारो रे;
चरणमां शीर मूक्युं भगवान, करो मन मंदिरीयामां स्थान. नि–६

ॐ

३२

राग–देश

राचो नाथ नगीना मुक्तिपुरीना वासमां रे.
मुक्तिपुरीमां तान मचावो, विश्व तणां मानव हरखावो;
रमण करो छो शीवसुख केरा वासमां रे. रा–१

छप्पन दीग कुमरी गुण गावे, इंद्र मळी हर्षे हुलरावे;
नाथ बिराजो आप सदा उल्लासमां रे. रा–२

आश्रय छे ओ ! नाथ तमारो, ए विण कोई नहि आधारो;
पुरण करो प्रभु आप अमारी आशने रे. रा–३

नाथ प्रभो दीन दुःख दातारी, विश्व तणा साचा हितकारी;
पर उपकारी शांत करो मुज प्यासने रे. रा–४

साचा सुखना भोगी बनावो, अरजी आप हृदयमां ध्यावो;
किंकर राखो आप चरण निवासमां रे. रा–५

ॐ

३३

राग–सिद्धा चलके वासी जीनने क्रोडो प्रणाम

मुक्ति पुरीना वासी विभुवर कोटी नमन !
त्रिभुवन ज्योत प्रकाशी विभुवर कोटी नमन !

विश्व उद्धारक आप कहाया, अजर अमर पदवीने पाया;
दीन के नाथ कहाया विभुवर कोटी नमन ! मु–१

अविचळ भूमीमां आप बीराज्या, जन्म जराना भयने भाग्या;
वचना मृत तुम गाज्यां विभुवर कोटी नमन ! मु–२

आप अनंत रुपे भजवाया, वाणीमां अमी रस वरसाया;
त्रिलोक नाथ कहाया विभुवर कोटी नमन ! मु–३

भव दुःख भंजन आप कहावो, भक्ति सुधा जगमां प्रगटावो;
घटघटमां पथरावो विभुवर कोटी नमन ! मु–४

अनाथनी आ अर्ज स्वीकारो, भव सागरथी डूबता तारो;
किंकर बाळ उगारो विभुवर कोटी नमन ! मु–५

३४

राग–कल्याण

नमन करो श्री प्राण प्रभुवर;
विश्व महीं साचा जगदीश्वर. नमन–१

त्रिभुवन तारक शीव सुखधारक,
अष्ट कर्म प्रभु आप निवारक;
शासन नायक धर्म धुरंधर. नमन–२

तुंही, तुंही, त्राता विश्वविख्याता,
घटघट महीं प्रभु गुण गवाता;
विश्वतणा साचा परमेश्वर. नमन–३

अकळ अरुपी ब्रह्मस्वरुपी,
दिव्य दिपकनी ज्योत झळकती;
नाथ ! दयाळु दीन दानेश्वर. नमन–४

विश्व हसावो विश्व रीझावो,
विश्व महीं आनंद वरसावो;
दीन दुःख भंजन जय जगदीश्वर. नमन-५

किंकर आ निरधार तुमारो,
तुम विण कोई नहि आधारो;
लळी लळी लागुं पाय प्रभुवर. नमन-६

ॐ

३५

राग-कल्याण

नमन करो त्रिभुवन नायकने, विश्व उद्धारकने. नमन
आत्म उद्धारक कर्म निवारक, विश्व वीशारदने. नमन
बाळ उगारो भव भयटाळो, जग प्रतिपाळकने. नमन
शीवसुख वासी ज्योत प्रकाषी, शांत सुधारसने. नमन
भक्ति उल्लासे भवदुःख नासे, भव जळ तारकने. नमन
किंकर तारो पार उतारो, दीन दुःख वारकने. नमन

ॐ

३६

राग-हार हीरानो हैये मढावजो

प्रभु नाथ ! निरंजनने ध्यावजो,
भक्तिरस उरमां वहावजो. प्रभु

दिव्य स्वरुपनां दर्शन करावजो,
अति आनंद उरमां भरावजो. प्रभु

आत्म ओजस तणां झरणां वहावजो,
नयन बाणोथी क्रोधने हणावजो. प्रभु

प्रेम पुष्प थाळ भरी हर्षे वधावजो,
सहु मोतीडाना चोक पूरावजो. प्रभु

आत्म कल्याण केरी भावना दीपावजो,
सहु अंतरमां ज्योती जगावजो. प्रभु

दर्शन करी सहु पापने पखाळजो,
नरनारी मळी गुणगावजो. प्रभु

नाथ आप बाळकने डूबतो बचावजो,
दया दास परे वरसावजो. प्रभु

ॐ

३७

राग-पहाडी

प्रभुजी मागुं हुं ते आप;
गुरुजी मागुं हुं ते आप.

ना मागु धन माल खजानो, आप तणा गुणवाद;
शेवा करतां नित्य तुमारी,
आवे नहि संताप. प्रभुजी–१

तुज भक्तिमां मस्त बनीने, सदा रहुं आबाद;
निश दीन घटमां नाम त्हमारुं,
सदा जपुं हुं जाप. प्रभुजी-२

दुःखडां सर्वे दूर करीने, शांती वहावो नाथ;
तुज खातर हुं शीर समर्पुं,
हींमत धरुं अमाप. प्रभुजी-३

शब्द पडे आ रोमरोममां, त्रिलोक केरा नाथ;
सदा रहो मुज मन मंदिरमां,
मूर्ति त्हारी स्थाप. प्रभुजी-४

नयन उघाडुं चोदीश भाळुं, आप अखंड सनाथ;
किंकर कहे आ दीन बाळकना,
भवना दुःखने काप. प्रभुजी-५

३८

राग-पहाडी

प्रभुजी दोष करो सहु माफ;
गुरुजी दोष करो सहु माफ.

अंधारे अथडाया जगमां, मार्ग भूलीने आप;
अज्ञानी आश्रीत छुं त्हारो,
कीधां कर्म अमाप. प्रभुजी-१

धर्म ना जाण्यो मर्म ना जाण्यो, जाण्यो नहि तुम नाद;
भक्ति सुधा प्रगटी नहि घटमां,
एळे गई सहु जात. प्रभुजी-२

मानव भव मळीयो महापुन्ये, हृदय थयुं नहि भान;
मायामां सहु खेल गुमायो,
करुं हवे बूमराण. प्रभुजी-३

अनाथने निरधार त्हमारो, बाळ उगारो नाथ;
आप विना प्रभु जग सहु जुठा,
महेर करो शीरताज. प्रभुजी-४

बाळक लाड करे पीतु पासे, तीम करुं हुं नाथ;
करगरतो किंकर तुम विनवे,
मागुं हृदयथी माफ. प्रभुजी-५

ॐ

३९

राग-पहाडी

मुसाफीर अब तुं हो तैयार;
अब तुं हो तैयार. मुसाफीर-१

दुनीआदारीमें वोत फीरापण, कीया नहि कुछ काम;
आत्म पीछाणा नहि तें तेरा,
शोधा नहि विश्राम. मुसाफीर-२

एक दीन आना, एक दीन जाना, जगका खोटा प्यार;
देश मुसाफीर अपना न्यारा,
जुठा सब संसार. मुसाफीर–३

आज चले, कोई काल चलेगा, जाना हे निरधार;
आखर सबको एक ठीकाना,
प्रभु भज वारंवार. मुसाफीर–४

काया जुठी, माया जुठी, जुठा सब परीवार;
प्रभु भक्ति विण कोई नहि तेरा,
एही जीवनका सार. मुसाफीर–५

भजन करी ले जगदीश केरुं, ए वीन नहि आधार;
करगरता किंकर विनवे छे,
जावुं जरुर एक वार. मुसाफीर–६

४०

राग–पहाडी

प्रभुजी वेडली मारी तार;
तुज विण नहि आधार. प्रभुजी–१

भवसिंधुमां भमीयो वहुधा, फर्यो अनंतिवार;
त्रिभुवन नायक शीव सुखदायक,
साचो तुं अधार. प्रभुजी–२

शरण एक छे साचुं त्हारुं, ज्ञानी परम कृपाळ;
दीन दुःख भंजन पाप निकंदन,
मुज हैयाना हार. प्रभुजी–३

आंगणे आवी अर्ज पूकारुं, सूणो सूणो ओ नाथ;
तान त्हमारुं ध्यान त्हमारुं,
अनाथना छो नाथ. प्रभुजी–४

नाथ निरंजन घटमां प्यारो, स्मरण करुं वारंवार;
तुज विण जगमां कोई नहि मारु,
दीन बंधु दातार. प्रभुजी–५

आप अरुपी, ब्रह्म स्वरुपी, ज्योत जगावणहार;
किंकर कहे आ दीन बाळकनां,
भवभयनां दुःखवार. प्रभुजी–६

ॐ

४१

वैश्नव जन तो तेने कहीए–राग

मोत किनारे हसतां जावुं,
एह वीरोनी वाणी रे;
शूरा होय ते हसतां भेटे,
प्रभुपद उरमां आणी रे. मोत–१

मृत्यु नव छोडे जगमांही,
मृत्यु चोदीश फरतुं रे;

प्रभु भक्ति विण कोई नरोनुं,
जन्ममरण नहि टळतुं रे. मोत-२

राय न छाडे, रंक न छोडे,
मद मानवनो तोडे रे;
अमर नथी रहेवातुं जगमां,
मृत्यु रणमां रोळे रे. मोत-३

जग बंधनने उर नव लावे,
हरदम गुरुगुण गावे रे;
पळ पळ एनी धून धरावे,
ए नर हसतां जावे रे. मोत-४

मरण तणो भय नाश करीने;
मस्त जीवनमां म्हाले रे;
एह वीराओ निजनुं साधी,
रोग शोग भय टाळे रे. मोत-५

बहीयातम सहु जुठ पीछाणो,
अंतर ज्योत जगाडो रे;
प्रभु मूर्तिने उरमां स्थापी,
घटमां घंट वगाडो रे. मोत-६

किंकर कहे ए सत्य वचन छे,
एक दीन सहुने जावुं रे;

नाथनिरंजन भवदुःखभंजन,
नित्य हृदयमां ध्यावुं रे. मोत-७

ॐ

४२

राग-वैश्नव जन तो तेने कहीये.

जगमां नाम हरीनुं साचुं,
ए विण सर्वे काचुं रे;
हरी नामविण सब जग जुठा,
हरदम घटमां याचुं रे. जगमां-१

परमातम पद एक जगतमां,
भिन्नरुपे भजवातुं रे;
घट मंदिरमां वीधवीध रीतीए,
निशदीन स्मरण करातुं रे. जगमां-२

अजर अविनाशी पद प्रभुनुं,
नाम अमर पूजवातुं रे;
विश्वमहीं साचो जगदीश्वर,
आखर एक कहातुं रे. जगमां-३

राम भजे रहेमान भजे,
कोई कृष्ण तणा गुण गातुं रे;
वीर भजे वेदांत भजे,
कोई अंतरमां हरखातुं रे. जगमां-४

घटमंदिर जो साफ बने तो,
भिन्न नथीं देखातुं रे;
परमातम पद प्राप्त करे तो,
सघळुं एक जणातुं रे. जगमां–५

आत्म पीछाणे एह वीरोनुं,
अंतर निर्मळ थातुं रे;
भेद नहि भासे ए जगमां,
एकरूपे समजातुं रे. जगमां–६

किंकर कहे प्रभु एक जगतमां,
नित्य हृदयमां याचुं रे;
भजन करीलो शुद्ध हृदयथी,
एज जीवनमां साचुं रे. जगमां–७

ॐ

४३

राग–जाओ जाओ के मेरे साधु रहो गुरुका संग

भजलो भजलो, ओ! जगना प्राणी, भजो सदा कीरतार.
एह विना भाई कोई नहि जगमां, साचो परम दयाळ;
त्रिभुवन नायक शीव सुखदायक, प्रभु भज वारंवार. भजलो १

अनेक भवना पुन्ये पायो, मानव भव अति सार;
फेरफेर ए मळवो दुलहो, प्रभु भज वारंवार. भजलो २

जग सहु जुठा मतलब केरा, मतलब का संसार;
प्रभु भक्ति विण कोई नहि तेरा, प्रभु भज वारंवार. भजलो ३

पुत्र मित्र सहु पंखी मेळो, उडी जशे एक वार;
नाथ निरंजन भव दुःख भंजन, साचो तारणहार. भजलो ४

एक दीन हंस जशे घटमांथी, रडतो रहे परीवार;
किंकर कहे अणधार्या जावुं, मालीकना दरबार. भजलो ५

ॐ

४४

राग–नथी जगतमां साथ सबंधी विना त्रिभुवननाथ

फोगट फांफां मार मूरखडा नथी जगतमां सार,
भजीले झट कीरतार प्रभु विण कोई नव तारणहार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. १

कुटुंब कबीलो कोई नहि त्हारुं, नारी अने परीवार,
स्वार्थ सबंधे मळीयां सर्वे, प्रभु भज वारंवार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. २

काया जुठी, माया जुठी, जुठो जग व्यवहार,
दुनीआदारी सब हे जुठी, जुठा सब संसार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ३

मायामां त्हें खेल गुमायो, फर्यो अनंतिवार,
शरण एक जगदीशनुं साचुं, ए विण नहि आधार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ४

भमतां, भमतां, पुन्ये मळीयो, मानव भव अति सार,
भजन करी ले जगदीश केरुं, ए विण नहि तरनार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ५

त्रिभुवन नायक शीव सुखदायक, साचो छे कीरतार;
भवभय भंजन पाप निकंदन, भज तुं वारंवार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ६

किंकर कहे भवसागर तरवा, स्मरण करो वारंवार,
एह विना भाई कोई नहि जगमां, दीन बंधु दातार;
मूरखडा नथी जगतमां सार. ७

४५

राग-आशावरी

राखो अमारी लाज, प्रभुजी राखो अमारी लाज.—गुरु
भ्रमण कर्युं मे सव दुनीआमे, कोई न मळीयो साथ;
सव देवोकुं देख लीया पण, मीलो न कोई सनाथ. प्र. १

माता भमीयो, महादेव भमीयो, भमीयो सहु संसार;
गोमती तीरे स्नान कर्यां पण, मीलो न तारणहार. प्र. २

टेके फळे छे टेके मळे छे, निश्चय वळ हो अपार;
शीर जावे श्रद्धा नहि जावे, कवही न तूटे तार. प्र. ३

सव दोषोकुं आप निवारो, महेर करो शीरताज;
भूल चूक सघळी माफ करीने, उरमां आणो दाझ. प्र. ४

दीन बाळक आ नाथ त्हमारो, करगरतो वारंवार;
पाय पडीने किंकर विनवे, तारो अमारुं झाझ. प्र. ६

ॐ

४६

राग–आशावरी

छोड विषयनी जाळ, मुसाफीर छोड विषयनी जाळ.
विषय जाळ भाई अति बुरी छे, कदी चढावे आळ;
कदी बनावे कुत्ता जेवो, कदी बने विकराळ. मु. १
कंचन कामीनां अवधि दुःखो, नर्कतणी ए खाण;
झेरी कीडानो चेप थशे तो, अति करीश बूमराण. मु. २
विषयवासना झेर समी छे, झेरतणो कर ख्याल;
पीतां पहेलां चेत मुसाफीर, पछी बनीश बेहाल. मु. ३
पत्नीव्रत कोई भाग्ये पाळे, पतीव्रता रहेनार;
कळीयुगना आ विषम समयमां, जुज हशे नरनार. मु. ४
कंचन कामीनी त्याग करे तो, सदा रहे गुलतान;
किंकर कहे ए वीर नर त्यागे, करे प्रभुनुं ध्यान. मु. ५

ॐ

४७

राग काफी–ताल दीपचंदी

कोई नहि तारणहारा, गुरु विण कोई नहि तारणहारा.
तन धन जोबन सबही जुठा, जुठा जग का सहारा;
नाम प्रभु जगदीशनुं साचुं, ए विण नहि आधारा. कोई–१

नर भव मळीयो पुन्य प्रतापे, पुन्य तणा भरी भारा;
जन्म सफळ करवाने माटे, गुरु भजलो वारवारा. कोई-२
एक दीन रडना एक दीन हसना, जुठा जग व्यवहारा;
भवसिंधुथी पार थवाने, गुरु भज लो वारवारा. कोई-३
साथ जगतमां सदगुरु वरनो, सदगुरु प्रीतम प्यारा;
सदगुरु वरनी साची छाया, गुरु भज लो वारवारा. कोई-४
ध्यान निरंतर सदगुरु वरनुं, ए विण नहि तरनारा;
किंकर कहे घट साफ बने तो, मळशे प्रभुना सहारा. कोई-५

४८

राग काफी-ताल दीपचंदी

कर्मनकी गत न्यारी; चेतनजी कर्मनकी गत न्यारी.
श्रीमंत थई सुखमां वहु राच्यो, पर पीडा नहि जाणी;
मोह मदिरा पी मकलायो, कंइक दुभाव्यां प्राणी. कर्म-१
खानपान सुख भोगवता नर, पळमां वनता भिखारी,
कर्म तणी भाई अजव लीला छे, कर्म तणी वलीहारी. कर्म-२
सुत वनिता यौवनमां म्हाल्यो, अंतर भानने हारी;
दया तणो भाई धर्म ना जाण्यो, पर उपकार विसारी. कर्म-३
धन वैभव निरखी हरखायो, चढी हृदयमां खुमारी;
मोज मजामां खेल गुमायो, मायाने नव मारी. कर्म-४

किंकरदास कहे अंतरथी, प्रभु भजलो भयहारी;
प्राणप्रभु गुरु शांतिसूरीने, नमन करो वारंवारी. कर्म-५

ॐ

४९

राग काफी-ताल दीपचंदी

कोई नहि तारणहारा; गुरु विण कोई नहि तारणहारा. कोई

जग सब जुठा मतलब केरा, मतलबका संसारा;
मतलब खातर सबजन मीलता, मतलबका परीवारा. कोई-१

मा मतलबकी, पीयु मतलबका, मतलबका भाइयारा;
मतलब बीन भाई कोई नहि तेरा, मतलबमें मरनारा. कोई-२

मोह बीचें मानव सपडाया, मूरख फीरा अंधारा;
प्रपंचकी बाजी रमनेमें, भटक्यो भवमें अपारा. कोई-३

सद्गुरु बीन भाई पार नहि पावे, गुरुका सच्चा सहारा;
गुरु मीलनेसे भवभय भागे, दुःखडां दूर करनारा. कोई-४

करगरता गुरुवरको विनवो, चर्ण पडो वारंवारा;
किंकर कहे ए निशदिन भजलो, गुरु बीन नहि आधारा. कोई-५

ॐ

५०

राग काफी-ताल दीपचंदी

कोई नहि तारुं, जगतमां कोई नहि तारुं.

मात पीता सुत भगीनी सर्वे, स्वार्थ तणुं अजवाळुं;
पाप पुन्य दो साथे आवे, अवर थवानुं न्यारुं. कोई-१

दीन दीन घटतो जाय समजले, आयुष्य पुर्ण थनारुं;
काळ आवीने झडपी लेशे, कोई नहि उगारनारुं. कोई-२

देह धरमशाळा मानी ले, जेम मुसाफीरखानुं;
झाड उपर जेम पक्षी बेठुं, पळमां उडी जनारुं. कोई-३

एम मुसाफीर अंतर समजी, भज भयने हरनारुं;
किंकरदास कहे कर जोडी, गुरु वीन कोई नहि म्हारुं. कोई-४

ॐ

५१

राग काफी-ताल दीपचंदी

एक दीन जावुं जग छोडीने.

राय रंक सज्जन नर चाल्या, खाली हाथ लईने;
कोडी एक नहि साथे आवे, सर्वे आंही मूकीने. एक-१

लोक कहे लखपती कहेवायो, पूर्वनुं पुन्य वरीने;
पर उपकार करी ले जीवडा, आतम शुद्ध करीने. एक-२

मात पीता सुत बंधव पत्नी, मळीयां स्वार्थ सहीने;
कुटुंब कवीलो भांड भगीनी, चाल्यां स्वार्थ तजीने. एक-३

आतम उजळो करवा माटे, सदगुरु पंथ ग्रहीले;
किंकरदास कहे कर जोडी, वारंवार भजीले. एक-४

ॐ

५२

राग काफी–ताल दीपचंदी

गुरु गुण अजब कहावे; वीरल नरो गुण गावे. गुरु

अविचळमां गुरुनाद बजावे, अलखमां धून मचावे;
अर्हं अर्हं जाप जपीने, ज्योतीसे ज्योत मीलावे. गुरु–१

जग मायाने दूर करीने, आतमने अपनावे;
ध्यान निरंतर घटमां साधे, परमातम पद पावे. गुरु–२

सोहं सोहं ध्यान करीने, घटमां घंट बजावे;
रोग शोग भय नाश करीने, अदभूत बळ बतलावे. गुरु–३

गुरु गुणथी कोई पार नहि पावे, गुरु पदमां सहु आवे;
गुरु विण कोई नहि मार्ग बतावे, गुरुवर ब्रह्म कहावे. गुरु–४

शांतिसूरी प्रभो अर्बुदगीरीनो, महिमा अजब सूणावे;
किंकर कहे ए दिव्य पुरुष छे, विश्व सहु गुण गावे. गुरु–५

५३

वंदो वंदो गुरुश्री ज्ञानीने-ए राग

मेरी नैयांको पार उतार गुरु,
तुजविण कोई नहि पार करेगा,
भवसागरसे तार गुरु. मेरी

सारा जगतको देखलीया जब,
मळीयो तु आधार गुरु. मेरी

जन्म जराका अवधि दुःखसे.
कोइ न तारणहार गुरु. मेरी
भमीयो भवसागरमें वहुधा,
तोय न आयो पार गुरु. मेरी
अब तुं साहेब साचो मळीओ,
पुरण कृपा दातार गुरु. मेरी
विश्व विशारद विपत निवारक,
शांत सुधा पानार गुरु. मेरी
सवजन जगके एक स्वरुपमें,
भेद न तुं धरनार गुरु. मेरी
अंतरध्यानी आतमरामी,
साचो जगदाधार गुरु. मेरी
अलख लगावे ब्रह्म जगावे,
ज्योति जगावणहार गुरु. मेरी
किंकरदास कहे अंतरथी,
सदगुरुवर दातार गुरु. मेरी

ॐ

५४

वंदो वंदो गुरुश्री ज्ञानीने-राग
भाइ गुरु वीन तारक कोई नहि.
भवसेतारक दुःखनिवारक,
पार उतारक कोई नहि. भाई

तन, धन, जोबन सबही जुठा,
जुठा सब संसार भई. भाई

मात, पीता, सुतस्नेही सबंधी,
कारमो सब परीवार भई. भाई

मानव जन्म मळ्यो महापुन्ये,
तो कंई निजनुं साध भई. भाई

भव अंधेरा बीचमें घेरा,
शाम घटा चोमेर भई. भाई

भक्ति सुधा प्रगटे घटमां तो,
नैयां थशे तारी पार भई. भाई

किंकरदास कहे अंतरथी,
गुरुवरनो आधार भई. भाई

ॐ

५५

मोहे लागी लटक गुरु चरणनकी-राग

भाई गुरु वीन कोन उगारे,
भव समुद्रमें डूबता प्राणी,
कोई नहि तारे. भाई

सागर वीचमें नाव फसाया,
मोजां जोर अति मारे. भाई

हांकनेवाला वोत मुंझाया,
कोई नहि गुरुबीन तारे. भाई
मानव देहका डगता पाया,
मोह माया सबको मारे. भाई
दुनियादारी दुःखनी क्यारी,
आशा तृष्णा मन भारे. भाई
आशा मे सब जग होमाया,
आशा सब जनको मारे. भाई
वीरलनरो आशाको तजके,
घट मंदिरने शणगारे. भाई
किंकरदास कहे अंतरथी,
सदगुरुवर मुज मन प्यारे. भाई

५६
राग-थई प्रेमवश पातळीया

जगनाथ साचा मळीया.

भवभयनां वंधन टळीयां रे, जगनाथ साचा मळीया. १
प्रभुनाथ निरंजन स्वामी, शीवसुख पदवी ने पामी;
वन्या मुक्ति पुरीना गामी रे, जगनाथ साचा मळीया. २
त्रण भुवन मही भजवाया, प्रभु जग पालक कहेवाया;
आनंद आनंद वर्ताया रे, जगनाथ साचा मळीया. ३

नयनोमां मूर्ती त्हारी, मुज प्राण थकी ए प्यारी;
प्रभु अक्षय सुख दातारी रे, जगनाथ साचा मळीया. ४

त्रिभुवन पति आप कहावो, डूबता ओ ! नाथ बचावो;
दया दास परे दर्शावो रे, जगनाथ साचा मळीया. ५

प्रभु अजर अमर कहेवाया, परमातम रुपधराया;
घटघटमां आप पूजाया रे, जगनाथ साचा मळीया. ६

प्रीते हाथग्रहो प्रभु मारो, तुमदीन बाळकने तारो;
किंकर कहे भव दुःख वारो रे, जगनाथ साचा मळीया. ७

ॐ

५७

राग–माढ

छे नाथ निराळा, ताहरणहारा, ए विण नहि आधार.
दुनीआनां सुख दुःखसमां छे, एमां नथी कंई सार;
दरीया वच्चे न्हाव पड्युं छे, कोण उतारे पार रे. छे. १
अंत पळे भाई सूतो त्यारे, नारी कहे भरथार;
सांभळजो कंई नाथ अमारुं, कोण हवे आधार रे. छे. २
त्हारुं विचारे कोई नहि त्यां, स्वार्थ करे पोकार;
पुत्र कहे छे कंईक बतावो, विनवे सहु परीवार रे. छे. ३
बेल बनी चक्कीमां फरीयो, कष्ट सह्यां त्हें अपार;
अंत समय भाई कोई नहि त्हारुं, साचो छे कीरतार रे. छे. ४

लक्ष्मी तणा लोभे सहु करशे, व्हारी अति सारवार;
स्वार्थ तणी आ दुनीआदारी, कोई न तारणहार रे. छे. ५
अर्ज सूणी आ दीन वाळकनी, उरमां कंईक विचार;
करगर ता किंकर वीनवे छे, नाथ जपो वारंवाररे. छे. ६

ॐ

५८

राग-माढ

ओ ! नाथ अमारा, प्राणथी प्यारा, महेर करो कीरतार.
आप विना प्रभु कोण अमारो, अलबेलो आधार;
भमतां भमतां पुन्ये पायो, छोडुं हवे नहि तार रे. ओ ! १
भव नगरीमां वहु भटकाणो, फेरा फर्यो वारंवार;
रोझ मृदंग पेरे अथडायो, तोय न आयो पाररे. ओ ! २
वाळक आ निरधार त्हमारो, चर्ण पडे वारंवार;
हर्ष थकी प्रभु पाय पडुं छुं, मुज हैयाना हार रे. ओ ! ३
मधपुडाने मांख वसावे, फरती रहे वारंवार;
पारधी आवी सर्व भगावे, तीम फरुं संसार रे. ओ ! ४
कर्म कर्यां छे क्रूर प्रभु में, सळग्या छे अंगार;
रोम रोम महीं आग धीखी छे, एहथी नाथ उगाररे. ओ ! ५
आप विना पोकार हमारो, कोण सूणे कीरतार;
नाथ विना सहु साथ अकारो, आप अनाथ सनाथ रे. ओ ! ६

लळी लळी लागु पाय तुमारा, करगरतो निरधार;
किंकर कहे आ दीन बाळकने, भवना दुःखथी तार रे. ओ! ७

*

५९

राग–माढ

भाई अर्ज स्वीकारो, उरमां धारो, नाथ जपो वारंवार.

नाथ विना कोई तात नथी भाई, साचो छे ए साथ;
अंधारे भामां भमवानां, ए विण सर्व अनाथ रे. भाई

सरोवरतीरे जाळ बीछावे, पारधी माछीमार;
गुल्लीतणा लोभे सपडावे, प्राण हरे ततकाळ रे. भाई

मानव भटके मोत कीनारे, मध लेवाने काज;
काळ आवी ने झडपी ले छे, त्राप मारे जीम बाझ रे. भाई

मात पीता सुत बंधु सर्वे, नारी अने परिवार;
मधपुडा जीम सर्वगणीले, जुठो छे संसार रे. भाई

खेडुत खेती करे निज हर्षे, बीज रोपे अति सार;
कोप फाटे जो कुदरतनो तो, हीमकरे संहार रे. भाई

एणी रीते सहु दुनीआदारी, नारी अने परिवार;
किंकर कहे आ दीन बाळकने, शांति प्रभो आधार रे. भाई

*

६०

राग-माढ

दीनानाथ उगारो, आश्रय त्हारो, साचो तुं कीरतार.

दीनपणुं पाम्यो मुज कर्मे, दुःख तणो नहि पार;
आ दुःखमांथी कोण उगारे, साचो तारणहार रे. दी.

मोह तणुं तोफान मचाणुं, सपडाया निरधार;
कर्म राजानो कोप थयो त्यां, कोण बचावणहार रे. दी.

करजोडी कहुं क्रूर बन्युं छे, कीधां कर्म अपार;
नाथ तणुं भाई नाम जप्युं नहि, पीछे करुं पोकार रे. दी.

फक्कड थई फरतो तो त्यारे, नती तने दरकार;
सानसामां सपडायो त्यारे, अर्ज करे वारंवार रे. दी.

करोळीओ जीम चढतो भींते, पाछळनुं नहि भान;
किंकर कहे ईमभव अटवीमां, सर्व भूल्या छे भान रे. दी.

ॐ

६१

राग-माढ

जगनाथ विचारो, अर्ज स्वीकारो, पाय पडुं वारंवार.

परनींदा करी पेट भरीने, कीधो कदी न विचार;
निज तणा दोषो नहि जोया, एळे गयो अवतार रे. १

वहाणवटुं वेपारी खेडे, लोभ तणो नहि पार;
लाख मटी बे लाख थवाने, आश करे छे अपार रे. २

पाघडी पहेरी देश वीदेशे, फेरी फरे वारंवार;
पुन्य विना भाई कंई नहि पामे, पुन्य थकी मळनार रे. ३

सज्जन नरनो संग करे तो, कंईक पामे भाई सार;
तेम प्रभुनी भक्ति करे तो, नर भव पामे पार रे. ४

काळ चक्रथी बचवा माटे, पुन्य तणो भरोभार;
किंकर कहे आ दीन बाळकना, नाथ तुमे आधार रे. ५

ॐ

६२

राग-अंध बनी आथडीया जगमां

नाथ तणां दर्शन करवाने, खूब मचावो उरमां तान.
नाथ खातर तुं सर्व तजी दे, मायाने ममतानुं पान,
बंधन सर्वे नाश करीने, खूब मचावो उरमां तान. १

नाथ विचारो, उरमां ध्यावो, हसो कूदो गावो गुणगान,
रोम रोमने खूब रडावो, भींतरथी बनजो बळवान. २

हींमतथी कदी पीछ नव करजो, जीवन मूको चरणे भगवान,
शुद्ध हृदयथी भक्ति वहावो, रहो सदा एमां गुलतान. ३

ओरत माटे अश्रु वहावे, सुत माटे भाई भूलतो भान,
प्रभु माटे तुं कंई नहि करतो, पछी मळे क्यांथी भगवान. ४

किंकर कहे प्रभु ईम नथी मळता, जेह करे सर्वे कुरबान,
एह वीरल नर दर्शन पावे, आत्म तणुं करशे कल्याण. ५

ॐ

६३

राग–अध बनी आथडीया जगमां

नाथ तणी भाई अद्‌भुतमाया, वीरलनरो दर्शन पावे.
नाथ तणी भाई धून मचावे, पळे पळे उरमां ध्यावे;
घडी पलक विसरे नहि मनथी, एह वीरो दर्शन पावे. १
नाथ निराळा जगथी न्यारा, संसारी नरकीम पावे;
मोह मायानां बंधन बहुधा, याद हृदयमां नहि आवे. २
नाथ नगीना छे रंग भीना, दिव्य लीला ए बतलावे,
वीर पुरुष सहु घटमां निरखे, कायर नर कंई नहि पावे. ३
मोत कीनारे हसतां जावुं, कीम करी हींमत थावे;
मरण तणो भाई भय नहि जेने, एह प्रभु दर्शन पावे. ४
भक्ति वहावो तान मचावो, ए विण साथ नहि आवे;
किंकर कहे ए पंथ विकट छे, वीरल नरो दर्शन पावे. ५

६४

राग–अंध बनी आथडीया जगमां

भाग्य विना भाई कंई नहि पावे, भाग्य तणी अद्‌भूत कहाणी;
भाग्य विनानी बाजी सघळी, आखर मळशे धूळधाणी. १
भाग्य थकी कंई राय बने छे, रंक भरे घरघर पाणी;
पेट खातर कंई घरघर भटके, गाळ उपरथी मूणरानी. २

शेठ बनी मोटरमां म्हाले, स्वर्गपुरी मनमां मानी;
पुन्य विना भाई कंई नहि पामे, पुन्य करो साचु जाणी. ३
भाग्य रुठे त्यां कंई नहि चाले, पळमां सर्व बने फानी;
हाय ! जीवनमां कंई नव करीयुं, पछी रडे पोको ताणी. ४
परमारथकर प्रीत धरीने, एह विना सहु धूळधाणी;
परने शांत करीश तो तुजने, साची शांती मळवानी. ५
सारुं नरसु कर्म करे छे, कर्म नचावे सहु प्राणी;
किंकर कहे सुख दुःख भोगववां, कर्म तणी ए निशानी. ६

ॐ

६५

[मूळ उपर वधारा साथे]

राग-अंध बनी आथडीया जगमां

लक्ष्मी विण लक्षणवंतानी, किंमत नहि अंकावानी;
भाग्य विनानी लक्ष्मी घरमां, आवी ते वही जावानी. १
लक्ष्मी तुं छे मूळ दुःखनुं, ज्यां त्यां कलेश जगावानी;
चंचळ थई तुं घरघर फरती, सारां कर्म तजावानी. २
एकनुं लई बीजाने आपे, तुं पण छे मोटी क्यांनी;
हीकमत छे बस एकज त्हारी, हसताने ज रडावानी. ३
लक्ष्मी लडावे लक्ष्मी मरावे, लक्ष्मी कफन कढावानी;
लक्ष्मीदेवीनी अजब ! लीला छे, पळमां भीख मगावानी. ४

६३

राग-अध बनी आथडीया जगमां

नाथ तणी भाई अद्भुतमाया, वीरलनरो दर्शन पावे.

नाथ तणी भाई धून मचावे, पळे पळे उरमां ध्यावे;
घडी पलक विसरे नहि मनथी, एह वीरो दर्शन पावे. १

नाथ निराळा जगथी न्यारा, संसारी नरकीम पावे;
मोह मायानां बंधन बहुधा, याद हृदयमां नहि आवे. २

नाथ नगीना छे रंग भीना, दिव्य लीला ए बतलावे,
वीर पुरुष सहु घटमां निरखे, कायर नर कंई नहि पावे. ३

मोत कीनारे हसतां जावुं, कीम करी हींमत थावे;
मरण तणो भाई भय नहि जेने, एह प्रभु दर्शन पावे. ४

भक्ति वहावो तान मचावो, ए विण साथ नहि आवे;
किंकर कहे ए पंथ विकट छे, वीरल नरो दर्शन पावे. ५

६४

राग-अंध बनी आथडीया जगमां

भाग्य विना भाई कंई नहि पावे, भाग्य तणी अदभूत कहाणी;
भाग्य विनानी बाजी सघळी, आखर मळशे धूळधाणी. १

भाग्य थकी कंई राय बने छे, रंक भरे घरघर पाणी;
पेट खातर कंई घरघर भटके, गाळ उपरथी मूणरानी. २

शेठ बनी मोटरमां म्हाले, स्वर्गपुरी मनमां मानी;
पुन्य विना भाई कंई नहि पामे, पुन्य करो साचु जाणी. ३
भाग्य रुठे त्यां कंई नहि चाले, पळमां सर्व बने फानी;
हाय! जीवनमां कंई नव करीयुं, पछी रडे पोको ताणी. ४
परमारथकर प्रीत धरीने, एह विना सहु धूळधाणी;
परने शांत करीश तो तुजने, साची शांती मळवानी. ५
सारुं नरसु कर्म करे छे, कर्म नचावे सहु प्राणी;
किंकर कहे सुख दुःख भोगववां, कर्म तणी ए निशानी. ६

ॐ

६५

[मूळ उपर वधारा साथे]

राग-अंध बनी आथडीया जगमां

लक्ष्मी विण लक्षणवंतानी, किंमत नहि अंकावानी;
भाग्य विनानी लक्ष्मी घरमां, आवी ते वही जावानी. १
लक्ष्मी तुं छे मूळ दुःखनुं, ज्यां त्यां कलेश जगावानी;
चंचळ थई तुं घरघर फरती, सारां कर्म तजावानी. २
एकनुं लई बीजाने आपे, तुं पण छे मोटी क्यांनी;
हीकमत छे बस एकज त्हारी, हसताने ज रडावानी. ३
लक्ष्मी लडावे लक्ष्मी मरावे, लक्ष्मी कफन कढावानी;
लक्ष्मीदेवीनी अजब! लीला छे, पळमां भीख मगावानी. ४

६८

एकतारानां पदो

मूरख मन क्या करेरे, तेरा कोई नहि अहीं संगी.

परभवमां कंई पुन्य कर्युं तो, मानव देह तुं पायो;
अब तुं भजन करी छे भाई, तो कुछ कर्म कटायो. मू.

चोराशी चक्करना फेरा, फीरतां फीरतां आयो;
न्हावडुं तारुं चोदीश फरीयुं, जब तुं कांठो पायो. मू.

भवसमुद्रकी बीचमें आयो, जब तुं खूब गभरायो;
हांकनेवालो मल्यो मुताबीक, डूबतां तुने बचायो. मू.

सदगुरु मळे तो मार्ग बतावे, देहनां दर्द दबावे;
किंकरदास हृदयथी भजतो, 'शांति गुरु गुण गायो. मू.

ॐ

६९

समज मन मेरा रे, जगमें कोई नहि तेरा;
तेरा हे सो तेरी पासे, बाकी सबी अनेरा. स.

जब तुं उदर महीं बसतोतो, तब प्रभुने भजतोतो;
बंधनमांथी मुक्तथवाने, हरदम जप करतोतो. स.

नव मास तुं मात उदरमे, उंधा शीरे लटक्योतो;
उदरतणा अवधिकष्टोमां, नित्य अरज करतोता. स.

उदर थकी तें जन्मलीया जब, अति हर्ष उछर्यो तुं;
दीन दीन वधतां बाळपणेथी, युवान वय पाम्यो तुं. स.

कुटुंब कबीला सब जन बीचमें, मोजमजा करतो तुं;
अब मेरी घडीयां सफळ बनी भाई, मुक्ति पुरी गणतो तुं. स.

उदरतणा सब दुःख विसरीने, अंधारे भटकाणो;
साचा हीरानी शोध मूकीने, पत्थरमां पटकाणो. स.

भक्ति विना कोई पार नहि पाम्या, भक्ति सदा उर भरतुं;
किंकरदास कहे भक्ति विना भाई, पार नहि पामे तुं. स.

ॐ

७०.

सद्गुरु मळीया रे, आतम साधीलेजी;
शांतीना दरीया रे, शांतीरस सींचीलेजी.

भवोभव भमीयो जीवडा, तोय नहि आव्यो अरे पार;
सद्गुरु भजीनेरे, आतम साधी लेजी.

योगीओनी मस्ती मांहे, अनहद तान मचाय;
ॐकारने साधीरे, आतम साधीलेजी.

आबु अविचळ गुफामां, ध्यान धरे छे गुरुराय;
आसन झमावी रे, आतम साधीलेजी.

"शांतिविजयगुरु" दिव्य महर्षि कहेवाय;
किंकर नित्य भजतोरे, आतम साधीलेजी.

ॐ

७१

राग-हंसने कयों छे हेरान मनवे मूरख थईनेरे

आत्ममां थयुं नहि भान;
लोभमां ललचाईने रे, आत्ममां थयुं नहि भान.

सदगुरु मळीया तोये, समज्यो नहि रे;
मायामां बन्यो छे महान, लोभमां ललचाईने रे;
आत्ममां थयुं नहि भान.

मनु जन्म पाम्यो तोये, अज्ञानमां झूल्योरे;
गुरुवरनु लीधुं नहि नाम, लोभमां ललचाईने रे;
आत्ममां थयुं नहि भान.

रात, दिवसनेरे, ओळख्यो नहि रे;
स्वार्थमां बन्यो छे गुलाम, लोभमां ललचाईने रे;
आत्ममां थयुं नहि भान.

"शांतिसूरी गुरु" साचा मळ्या रे;
शांतीथी पाम्यो ना विराम, लोभमां ललचाईने रे;
आत्ममां थयुं नहि भान.

किंकरदास करे, गुरुश्रीने विनती रे;
अर्हमथी करोने आराम, लोभमां ललचाईने रे;
आत्ममां थयुं नहि भान.

७२

राग-हंसलो नानोने देवळ जुनुं रे थयुं

ज्ञान ना थयुं रे जीवने ज्ञान ना थयुं;
सद्गुरु मळीया तोये भान ना थयुं. ज्ञान
माटीकेरा महेलमांहे आनंद मान्योरे;
अमृत मूकीने विष पानने पीयुं. ज्ञान
आरे कायाना उपर राच्यो मुसाफीर;
देहने छोडीने एक दीन चाल्यारे जवुं. ज्ञान
कुटुंब कबीलो सहु स्वार्थ सबंधे रे,
मारा ने तारामां म्हारुं गुमावी दीयुं. ज्ञान
किंकरदास कहेसूणो नरनारीरे,
सद्गुरुवरनुं मेंतो शरणुंभयुं. ज्ञान

७३

धीरा धीरा चालोरे गुरुवर भेटवाहोजी;
गुरुवर भेटे तो भव दुःख जाय. धीरा
आबु गीरीवर मांरे गुरुवर तप तपे होजी;
तपतपी काढे छे कर्म कठोर. धीरा
आतम ध्यान केरा गुरुवर जाप जपे होजी;
गुरुवर तारे घणां नरनार. धीरा

ॐकारने साध्यो रे अंधकार टाळवाजी;
रातदीन धरे छे प्रभुनुं ए ध्यान. धीरा
पंचम आरेरे प्रगट्यो ए दीवडोजी;
शांतिगुरु अवधूतने छे योगीराय. धीरा
किंकरदास कहे गुरुवर भेटीने रे;
मनुजन सफळ करो अवतार. धीरा

ॐ

७४

घटमां सफर करी ले भई, घटमां सफर करी ले भई.
घट मंदिरमां आयो मुसाफीर, झगमग ज्योती थई;
लपटायो त्यां भोळो मुसाफीर, पंथ भूल्यो भरमई. १
मोहे मळीने मोंघो बनायो; लोभे मूओ ललचई;
लावेल सघळो गर्थ गुमायो, पीछे रह्या नहि कंई. २
टीकीट कटावा आवो मुसाफीर, हाकल हाकमनी थई;
खर्ची हती ते बेसी गया सहु, बाकी रखडीया अहीं. ३
घट मंदिरथी चाल्यो मुसाफीर, ब्रह्म स्टेशन बदलई;
ब्रह्म स्टेशनथी आगे नीरखतां, अनहदनाद बजई. ४
किंकरदास कहे घट मंदिरनी, अदभूत माया भई;
शूरा होय ते शोधीकाढे, तरे ए भवनी खई. ५

ॐ

७५

सदगुरु भजन करी ले भई, सदगुरु भजन करी ले भई.

बाळपणे तुं लाडमां उछर्यो, मात पीता हरखई;
जब तुं युवान वयमां आयो, कछु कर्युं तें नहि. १

युवान वयमां खूब मकलायो, मदनी जंजीर लई;
हसतां हसतां खेल गुमायो, पीछे रडे क्या भई. २

वृद्ध उमरमां हाड खवायो, सूतो पथारी मही;
घरनी नारी गोदा मारे, गर्थ रह्युं नहि कंई. ३

दुनीआदारीना अजब तमासा, स्वार्थनी सर्व सगई;
मोह मायामां मरे आ जीवडो, कशुं सूझे त्यां नहि. ४

भजन विना कोई पार नहि पाम्या, आतमनुं हीर एभई;
किंकरदास कहे शांतिगुरुनी, साची मळी छे सगई. ५

ॐ

७६

संतो अमर रहे छे भई, संतो अमर रहे छे भई;
एने जनम मरण फरी नहि, संतो अमर रहे छे भई.

संत वनीने आतमनुं साधे, परमां पडे ग् नहि;
मोह मायाथी अळगो रहीने, हरी भजन लय थई. १

दुनीआदारीथी दूर रहीने, नाचे आतमनी महीं;
कुटुंब कबीलो छोडीदईने, संत वन्यो ए भई. २

अगम कुवामां जाळ वीछावे, अदभूत दोरी लई;
सोहं सोहं ध्यान करीने, शोधे ए ब्रह्म सगई. ३

अकळ कोटना अती दरवाजा, कोणे दीठा कहो भई;
आत्म मस्तीमां रमता संतो, नजर करी वतलई. ४

पंडीत वने छे पोथी पढकर, आतम पीछाणे नहि;
पाठ पढावे मोटा मोटा, परनी करे बुरई. ५

शांतिगुरुश्री आतमनुं साधे, न्यारा जगतथी रही;
किंकर कहे छे आतम ध्यान वीन, मुक्ति मळे नहि नहि. ६

ॐ

७७

मुजने सतगुरु साचो मळीयो, मारा मननो संशय टळीयो.
मुजने.

आवु पहाडमां अलख जगावे, ब्रह्म स्वरूप वतलावे;
घट मंदिरमां ज्योत जगावे, ज्ञान दीपक प्रगटावे. मु-१

आवु पहाडनी अजव! घटा भाई, संतोए भष्म लगाई;
वीराहता तेने सारा शरीरमां, कर्मोरी आग जलाई. मु-२

आत्म मस्तीनी अनहद धूनमां, दिव्य लीला दीखलाई;
अकळ कळा भाई अवधूत केरी, जाणे ए वीरला कोई. मु-३

योगी होय ते आतमनुं साधे, भोगीनुं काम त्यां नहि;
किंकरदास कहे शांतिगुरुश्री, साधे आतमनी महीं. मु-४

ॐ

७८

राग–आलममे डंका बजादीया गुरु शांतिसूरिश्वर योगीने

मुज अरजी उपर ध्यान धरो, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा;
बाळकनी अर्ज स्वीकार करो, ओ नाथ जीवन जादव प्यारा.१
भव अटवीमां भमतां आयो, महा पुन्य थकी दर्शन पायो;
दुःख जन्म मरणनां दूर करो, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.२
अज्ञान महीं हुं अथडायो, महा मूर्खवनीने पटकायो;
रडतां तुमरा शरणे आयो, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.३
कथनी छे क्रूर अती मारी, आव्यो छुं हाम हवे हारी;
तुम विण नथी दीसती बारी, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.४
भव चक्र महीं फसीयो फंदे, मायाने मोह तणा छंदे;
ळळी ळळी चेतन तुमने वंदे, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.५
मुज आतम तारक एकप्रभु, गुरु शांतिसूरीश्वरनाथ वीभु;
भक्ति रसनुं में पान पीधु, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.६
ओ ! अंतर्यामी उरधारो, विश्वेश्वर प्राण प्रभु प्यारो;
भवभयना बंधनने टाळो, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.७
करगरतो किंकर बाळ कहे, भक्ति अंतरमां नित्य वहे;
नीशदीन घटमां तुज नाम रहे, ओ प्राण प्रभु पद धरनारा.८

७९

राग–विळापनो

ओ प्रभु ! ओ प्रभु ! शुं कहुं,
आपतो विश्वना नाथरे;
आप विण कोई जगमां नहि,
दीनदुःखी जनतणो साथरे. ओ प्रभु ! १

आपतो मुक्तिमां संचर्या,
मोक्षमां म्हालता नाथरे:
वरी शीवसुंदरी नारने,
रमण करता कृपानाथरे. ओ प्रभु ! २

अजर अवीनाशी पदने वर्युं,
अमरपद सांपडयुं नाथरे;
अभय दातार ज्ञानी प्रभो,
आप विण कोई नहि साथरे. ओ प्रभु ! ३

आप तो विश्वतारक प्रभो,
विश्वना छो प्रभु प्राणरे;
आप विण कोई साचो नहि,
नीरंजन नाथ भगवानरे. ओ प्रभु ! ४

जगत जंजाळमां हुं फस्यो,
कीधा में बहु परीतापरे;
रमत रमीयो प्रभु जुठनी,
करी निष्फळ वधी जातरे. ओ प्रभु ! ५

अंध थई आथड्यो जग विषे,
रोझसम फर्यो संसाररे;
भमर पेरे फर्यो भवमही,
तोय आव्यो नहि पाररे. ओ प्रभु ! ६

मोह विष्टा पीधी में मुखे,
कीधो नहि मन विषे ख्यालरे;
आपनां वचन सर्वे भूली,
बन्यो हुं मूर्ख बेहालरे. ओ प्रभु ! ७

मात सुत पुत्रना कारणे,
फर्योहुं दीवसने रातरे;
वेल थई चक्कीमांहे फर्यो,
शुं कहुं माहरी वातरे. ओ प्रभु ! ८

कुड कपट जाणीने में कीधां,
ओळव्यो पर तणो माल्रे;
कंईक विश्वासी जनने ठग्यो,
शुं थशे माहरा हालरे. ओ प्रभु ! ९

अती दुःख निर्वळोने दीधां,
रडाव्यां कंईक नरनाररे;
सताव्या रंक जनने अति,
नथी मुज जुल्मनो पाररे. ओ प्रभु ! १०

करी निंदा अती पर तणी,
नव थयुं हृदयमां भानरे;
निज तणा दोष जोया नहि,
कीम थशे आत्मकल्याणरे. ओ प्रभु ! ११

गाढ बंधन थकी पीडीया,
पशु पक्षी अती जातरे;
दयानो अंश में नव कीधो,
आप जाणो सहु वातरे. ओ प्रभु ! १२

विषयनी अंध मस्ती महीं,
घोर कर्मा कर्यां नाथरे;
आपथी कंई न छानुं प्रभो,
भ्रष्ट छे माहरी जातरे. ओ प्रभु ! १३

दोष मारा प्रभु छे घणा,
वदे आवे नहि पाररे;
महा पापी अने क्रूर हुं,
अधममां अधम करनाररे. ओ प्रभु ! १४

आग सळगी अती रोममां,
बळे छे कर्म अंगाररे;
त्रास पाम्यो हवे देहथी,
शांती कर शांती दाताररे. ओ प्रभु ! १५

डूब्यो संसार सागर महीं,
कोण झाले हवे हाथरे;
विषम भडका बधे जळहळ्या,
कृपा कर ओ! कृपानाथरे. ओ प्रभु! १६

करीश पर आतमने शांततो,
शांति मळशे तने साचरे;
एह पण कंई कर्युं नहि प्रभो,
शुं थशे माहरुं नाथरे. ओ प्रभु! १७

मुख थकी कंई न बोली शकुं,
लखुं शुं हस्तथी नाथरे;
दोष अगणित प्रभु माहरा,
माफ कर ओ! दीनानाथरे. ओ प्रभु! १८

अनंता दोषनो भाज्य छुं,
कर्म कीधां अती क्रूररे;
मारुं मारुं करी जग फर्यो,
काळनुं आवीयुं पुररे. ओ प्रभु! १९

अनंती वार फेरा फर्या,
भम्यो भवचक्रमां नाथरे;
मळ्यो महा पुन्यथी तुं प्रभो,
हवे छोडुं नहि साथरे. ओ प्रभु! २०

नथी आश्रय हवे कोईनो,
जगतमां कोइ नहि साथरे;
जीवन तारक प्रभो विश्वना,
तुज विना सर्व विषवादरे. ओ प्रभु ! २१

जगत पाळक दया कर त्रिभु,
दयाना आप भंडाररे;
रहेम करजो निराधार पर,
विश्वनो करो उद्धाररे. ओ प्रभु ! २२

प्रभु भक्ति विना कंइ नथी,
जीवननो एज छे साररे;
भक्ति भातुं भरो घटमहीं,
जुठी छे जगत जंजाळरे. ओ प्रभु ! २३

नजर करतां न कंइ दीसतो,
फर्यो हुं मूर्ख अंधाररे;
ज्योत जागी नहि आपनी,
कीम करुं जीवनने पाररे. ओ प्रभु ! २४

आप शरणे हवे आवीयो,
तार के मार कीरताररे;
शरण छे एक त्हारुं हवे,
ए विना कंइ नथी साररे. ओ प्रभु ! २५

विश्वतारक प्रभो ! सांभळो,
दीन तणा आप दाताररे;
त्रिभुवन नाथ स्वामी तुमे,
सृष्टीना छो स्रजनहाररे. ओ प्रभु ! २६

शांति, शांति, प्रभो ध्यावतो,
शांति विण नहि आधाररे;
मूक्युं मस्तक प्रभो चर्णमां,
हवे तुज बाळने ताररे. ओ प्रभु ! २७

लळी लळी चर्ण मांहे पडी,
करे तुज दास पोकाररे;
करगरी हाथ जोडुं प्रभो,
मुक्तिनो मार्ग देखाडरे. ओ प्रभु ! २८

८०

राग-रक्त टपकती सोसो झोळी समरांगणथी आवे

त्रिभुवनपती आ अर्ज स्वीकारो, नाथ हृदयमां धारो,
डूबतो हुं दीन बाळक त्हारो, भवथी पार उतारो;
लळी लळी लागु चरणेरे, प्रभुजी महेर करीने तारो. १

भमरो थई भवनगरे भमीयो, मोह पुरीमां रमीयो,
माया देवीनो संग थयो त्यां, अध वच्चे आथडीयो;
रडतो रडतो विनवुंरे, नाथ दया आ दीन पर धारो. २

आप तणां अमूलां वचनो ने, भूली खरे भटकाणो,
नाथ विचार्यां नहि में मनमां, रोझ बनी अथडाणो;
दुर्गुण अवधि मारारे, माफ करीने प्रभुजी तारो. ३

माया देवीनी दुष्ट खाईमां, अंध बनी पटकाणो,
पंथ भूली खाडामां पडीयो, अति करुं बूमराणो;
फरतुं सैन्य मोहनुं रे, नीरखी खूब मनमां गभराणो. ४

मदिरा पीने मेड बने तीम, मद दारुमें पीधो,
नीशा मही चकचूर बनीने, नर भव एळे कीधो;
सघळुं आप पीछाणोरे, प्रभुजी आप थकी नव छानुं. ५

अग्नि धखी छे रोमरोममां, त्राय त्राय पाम्यो छुं,
नथी हवे स्हेवातुं मुजने, कर्म थको हार्यो छुं;
शरण गुरुनुं साचुंरे, ए विण कोई हवे नहि मारुं. ६

घणुं कह्युं थोडामां समजी, हस्त हवे प्रभु झालो,
करगरतो आ दीन बाळक कहे, अरजी नाथ स्वीकारो;
विनवे किंकर त्हारोरे, मुजने भवसागरथी तारो. ७

श्री सद्गुरुभ्यो नमो नमः

॥ द्वीतीय गुरु काव्य तरंग ॥

ॐ

ध्यानमूलं गुरुमूर्ति,
पूजामूलं गुरुपद;
मंत्रमूलं गुरुवाक्य,
मोक्षमूलं गुरुकृपा.
ज्ञानी, ध्यानी, मुनी, योगी, यती;
गुरु कृपा विना सिद्धी नथी.

ॐ

१

राग-कल्याण

नमन करो श्री जय जय गुरुवर,
तुही तुंही त्राता, जगविख्याता;
घट घटमां गुरु गुण गवाता,
विश्व विभुवर महान धुरंधर. 　　　　नमन १

अकळ अरुपी, ब्रह्मस्वरुपी,
विश्व मुही तुम ज्योत झळकती;
जय जय वंदन जय जय गुरुवर. 　　　　नमन २

आत्म उद्धारक, कर्म निवारक,
भवसागरमां डूबता तारक;
जग उपकारी जय जय गुरुवर. 　　　　नमन ३

दीन दुःख भंजन, पाप निकंदन,
विश्व करे छे वंदन वंदन;
जय जय गुरुवर जय जय गुरुवर. 　　　　नमन ४

बाळ उगारो, डूबता तारो,
भव भयनां गुरु दुःख संहारो;
किंकरनाछो प्राण प्रभुवर. 　　　　नमन ५

२

राग–शांतिसूरी गुरुवरजी तुमसे कोटी नमन

अखीलपती हरजनका तुमपे क्रोडो प्रणाम.
अजर अविनाशी कहलाते, अगम अरुपी धून लगाते;
अनाथ नाथ कहाते, तुमपे क्रोडो प्रणाम. १
शाम घटामें तेज छवाया, सकळ जगतका तात कहाया;
भव भय दूर भगाया, तुमपे क्रोडो प्रणाम. २
जीनके आप गुरु कहलाते, ईष्ट रुपे सब जन गुण गाते;
घट घट आप पूजाते, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ३
यागीश्वर अवधूत कहाया, ब्रह्म दशामें नाद वजाया;
अमृत जळ बरसाया, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ४
शांतिसूरीश्वर नाथ हमारे, उस बीन कोई नहि मन प्यारे;
भवसागरसे तारे, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ५
हृदय कमलका मेल कटाते, जब अंतर में ज्योत जगाते;
किंकर शीर नमाते, तुमपे क्रोडो प्रणाम. ६

ॐ

३

भुजंगी छंद

जगत वैभवोमां रमे छेल वाजी,
वनी शेर नाच्या अरे कंईक पाजी;

विचार्युं कदापि नहि त्यां अमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुआम् प्यारुं. १

मळे पुत्र मित्रो करे कंईक चाळा,
घडे कल्पनाना जीवनमांय माळा;
अरे एह सर्वे वधुं छे अकारु;
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. २

सूतो महेलमां ए प्रभु रुप माणे,
करे दास वृंदो अति शेव जाणे;
पलकमां वधुं ए थवानुं निराळु,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ३

फर्यो वेल थई पुत्रने नार माटे,
अमारुं करीने चढयो छे झपाटे;
तथापि थवानुं नथी ए त्हमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ४

भले कोच शोफा हींडोळा हींचोळा,
चळकता दीशा चारमां काच गोळा;
मच्युं मोह राजा तणुं ए ढींगाणुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ५

प्रभुए कीधा छे घणा मार्ग सारा,
परंतु वधा लागता ए अकारा;

पडे दुःख त्यारे प्रभुने पूकारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ६

गुरुनुं कदापि नहि नाम लीधुं,
परार्थे अरेरे नहि काम कीधुं;
अमारुं थवानुं नथी ए त्हमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ७

करी घोर कर्मो पछी तुं रडे छे,
निराधार पक्षी बनी तडफडे छे;
अरे मोह माया महीं सर्व हार्युं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ८

अरे महेल माळा बगीचा मिनारा,
कदापि थवाना नथी ए त्हमारा;
छतां तुं करे छे अमारुं अमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ९

चढो धर्मना उद्यमे नित्य भाई,
वणज त्यां वधारी करी ल्यो कमाई;
नफोखाद सर्वे खरेखर त्हमारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १०

अजाणे अरे काळ बनशे शिकारी,
उतरशे इहां देहनी सहु खुमारी;

जशे हंस चाल्यो थशे सर्व न्यारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. ११

गुरुवर प्रभो मार्ग साचो बतावे,
सूता प्राणीओ नींदमांथी जगावे;
भवाब्धी तणां बंधनो टाळनारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १२

सदातान अंतर मही ए मचावो,
निरंतर धूनी रोम रोमे जगावो;
घटा शाममांए करे छे उजाळुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १३

अरे आतमाराम अंतर विचारो,
गुरुवर विना पंथ सर्वे अकारो;
डूब्या भवरुपी सींधुथी तारनारुं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १४

कहे दास किंकर हृदयमां घडायुं,
भींतर रोमने रोममां कोतरायुं;
शरण एक शांति गुरुनुं स्वीकार्युं,
गुरुओम् गुरुओम् गुरुओम् प्यारुं. १५

ॐ

४

राग-पूजारी मोरे मंदिरमे आवो

गुरुजी मोरे मंदिरमे आवो. प्रभुजी.
गुरुपद प्यारुं, भयहरनारुं,
नित्य हृदयमां ध्यावो. गु. १
गुरुवर ब्रह्मा, गुरुवर विश्नु,
गुरुमहेश कहावो. गु. २
गुरुमही सृष्टी, गुरुमही सर्वे,
नित्य गुरु गुण गावो. गु. ३
गुरुवर भजतां, गुरुवर जपतां,
अंतर ज्योत जगावो. गु. ४
नाथअरुपी, ब्रह्मस्वरुपी,
ब्रह्म दीशा बतलावो. गु. ५
एक शरण ले, शांतिगुरुनुं,
किंकर बाळ बचावो. गु. ६

५

राग-राधेश्याम

भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. १
भमीयो भूलां भवचक्रमां, भमरो थई पुष्पे फर्यो,

म्हेंकी छतां नहि वासना, आखर भुंडा रोतो रह्यो;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. २

म्हारा अने त्हारा महीं, मूर्खो बनी जग आथड्यो,
त्हारुं विचार्युं नहि कदी, पागल बनी ढुंडतो रह्यो;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ३

काया जुठी माया जुठी, दुनीआ बधी निश्चय जुठी,
अंधो बनी दुनीआ फर्यो, आखर प्रभो ज्वाळा उठी;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ४

भजवा थकी पण ना मळे, बोल्या करेथी शुं वळे?
घट मेल जो धोवाय तो, निश्चय प्रभु तुजने मळे;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ५

साचा जुठा व्यवहारनी, ओळख करी भक्ति करो,
नीती दिपक अंतर धरी, नीज आत्मनुं भातुं भरो;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ६

किंकर कहे महापुन्यथी, मानव जीवन मोंघुं मळ्युं,
शांतिसूरी गुरुदेवनुं, स्वप्नुं मने साचुं फळ्युं;
भजले नाम, भजले नाम, भजले सदगुरुवरनुं नाम. ७

ॐ

६

राग-महावरीका हम सीपाई बनेंगे

भजेंगे भजेंगे भजेंगे भजेंगे;
गुरुवर प्रभो हम सदाही भजेंगे. भजेंगे. १

पडे कष्ट हम पर, हुवे जुल्म भारी;
गुरुवर प्रभो हम कभी नहि भूलेंगे. भजेंगे. २

गुरुध्यान मूर्ति, गुरुमंत्र पाठो;
गुरुनाम सूत्रो सदाही पढेंगे. भजेंगे. ३

पीतु मात भ्राता, गुरुदीन दाता;
गुरुनाम हरदम जपेंगे जपेंगे. भजेंगे. ४

प्रहारो कदापि, पडे कर्म योगे;
छतां शांतीका पान हरदम करेंगे. भजेंगे. ५

क्षमा औषधीसे, हृदय शुद्ध करके;
सभी जीवको हम नमेंगे नमेंगे. भजेंगे. ६

कहे दास किंकर, मुजे प्राण एकी;
प्रभो शांति चरणे सदाही झूकेंगे. भजेंगे. ७

ॐ

७

दुहा

भक्ति करवी दोहली, वचन बोलवां स्हेल;
हुं पापी ए शुं करूं, भर्यो हृदयमां मेल. १

लक्ष चोराशी योनीमां, फर्यो अनंति वार;
छतां नहि वारूं जडयुं, कोण बचावणहार. २

संसारे सुख क्यां मळे, कीचड ए कहेवाय;
असंख्य कीडा खदवदे, स्मित नहि लेवाय. ३

ए पैकीनो एक हुं, नीच नराधम छेक;
भावनथी भक्ति नथी, घटमां नथी विवेक. ४

अनेक भवना पुन्यथी, मळया प्रभो कीरतार;
शांतिसूरीश्वरनाथने, अर्ज करुं वारंवार. ५

धन लक्ष्मी वैभव अने, कुटुंव सहु परीवार;
स्वार्थ सबंधे सांपडे, शरण एक कीरतार. ६

मानव मोह मही मरे, जाण छतां पटकाय;
आखर पोक मूकी रडे, अश्रु नयन वहाय. ७

किंकर कहे ए कठीन छे, मोह तणी महा जाळ;
विरलनरो जल्दी तजे, भजता दीनदयाळ. ८

ॐ

८

भक्ति अजब जंजीर छे, भक्ति जीवननुं तीर छे;
कर्मो हणे ए तीरथी, ए नर जगतमां वीर छे. १

मृत्यु थकी जे ना डरे, मद मोह मायाने हरे;
परवा करे नहि माननी, ए नर जगतमां वीर छे. २

जे विश्वने निज समगणे, समभावनां सूत्रो भणे;
जळपान प्रेमतणुं करे, ए नर जगतमां वीर छे. ३

दिप ध्याननो झळकया करे, झरणां अमीरसनां झरे;
निज मस्तिमां म्हाल्या करे, ए नर जगतमां वीर छे. ४

गुरुदेवमां लयलीन थई, पळपळ धूनी चाल्या करे;
क्षण मात्र पण विसरे नहि, ए नर जगतमां वीर छे. ५

किंकर कहे आ सर्वमां, हुं अल्प पामर शुं करुं;
भक्ति करी भगवंतनी, घटमेलने धोया करुं. ६

९

राग-हे रंगभीना नेमनगीना

हे! गुरु श्री महेर करीने, किंकर बाळ बचावी ल्यो;
भवसागरमां डूबता अमने, शिष्य गणीने तारी ल्यो. हे! १

घोर गगनमां घूमी रहेला, अंधकारमां अथडेला;
समज छतां पण भान भूलेला, अनाथ बाळ उगारी ल्यो. हे! २

मोह मायामां मस्त थएला, मणीधरमां सपडाएला;
मायाना महेमान बनेला, आश्रीतने अपनावी ल्यो. हे! ३

परनें दुःख देवु समजेला, परपीडाने भूलेला;
परदुःखभंजन साची सेवा, पर उपकार शीखावी ल्यो. हे! ४

दीन बाळक आ अर्ज करे छे, विनती आप स्वीकारी ल्यो;
बाळक किंकर दास त्हमारो, भवसागरथी तारी ल्यो. हे! ५

१०

राग-धनाश्री

दयाळु गुरु सौनुं करो कल्याण,
　　पामो अमर विमान. 　दयाळु. १

दया देवीने दिलमांहे धारी,
　　अनाथने तारनार. 　दयाळु. २

करुणा केरु कमळ खीलाव्युं,
　　आत्म दीपावणहार. 　दयाळु. ३

मन, वचन, गुप्तीना पाळक,
　　छो जीवना प्रतिपाळ. 　दयाळु. ४

सर्व सिद्धिना दायक गुरुश्री,
　　परदुःख भंजनहार. 　दयाळु. ५

शांत सुधारस अमृत पीने,
　　उगारो नरनार. 　दयाळु. ६

ॐ अर्हंना ध्यानने धारी,
　　अद्वैतमां वसनार. 　दयाळु. ७

भवसागरमां डूबता अमने,
　　उतारो भव पार. 　दयाळु. ८

बाळक किंकरदास कहे छे,
　　तारो दीन दयाळ. 　दयाळु. ९

११

राग-माढ

गुरु प्राणथी प्यारा, दुःख हरनारा, मुज हैयाना हार.

आप विना गुरु कोण अमारो, नाद सूणे कीरतार;
भव अटवीमां भमतां भमतां, मळीयो तुं आधाररे. गुरु. १

जुठ प्रपंचतणी जाळोमां, सपडायो वार वार;
जाण छतां में हर्षे कीधां, कृत्य अति दूषकार रे. गुरु. २

पुन्य प्रतापे भान थयुं तो, मार्ग मळ्यो कीरतार;
करुणासागर पार उतारो, चरणे पडुं वारंवार रे. गुरु. ३

भक्ति सुधा प्रगटे अंतरमां, रोमे रोम भींजाय;
स्नान करी हुं पाप पखाळुं, मेल सहु धोवाय रे. गुरु. ४

बाळक आ निरधार त्हमारो, कोई नहि आधार;
आप अनाथ सनाथ गुरु श्री, भवसिंधुथी तार रे. गुरु. ५

शांतिसूरी प्रभो नाम त्हमारुं, ज्ञानी अने गुणवान;
सदगुरु साचा आप कहावो, किंकरना छो प्राणरे. गुरु. ६

१२

राग-धार तरवानी

ज्यां लगे आतमा सत्य समजे नहि,
त्यां लगे सदगुरु कीम पीछाणे. ज्यां. १

रात दीन पापनी रमतमां राचीयो;
सदगुरु पंथ ए केम जाणे;
सदगुरु समजवा स्हेल ना जाणशो,
भाग्यशाळी भीरु एह जाणे. ज्यां. २

राग द्वेषे रडयो मोह वैरी नडयो,
काम क्रोधे मळी केर कीधो;
दया रुप देवने ध्यानमां नव लीधो,
दिव्य प्रभु पंथ ए केम जाणे. ज्यां. ३

नारी रुप नागणी देखीने वश थयो.
फुल महीं भ्रमरे जेम वास कीधो;
रंगमां राचीने ख्याल कंई नव कीधो,
भक्तिनो मार्ग ए केम जाणे. ज्यां. ४

जगत व्यवहारमां जड बन्या मूर्खजन,
जीवननी ज्योतने नव पीछाणी;
दास किंकर प्रभो! शांतिने विनवे,
कीम करी जीवनने पार पामे. ज्यां. ५

ॐ

१३

राग-वाजां वाग्यां सोहम वाजां वागीयां

नित्य उठी स्मरो गुरुराज, गुरुगुण दोहीला.

गुरुराज मळे महा पुन्यथी,
एतो पामे भविक नरनार, गुरुगुण दोहीला.

गुरुदेव गुरु दीप जाणजो,
गुरु विश्वना तारणहार, गुरुगुण दोहीला.

गुरुज्ञानी प्रभु रुप दीसता,
गुरु ईश्वरनो अवतार, गुरुगुण दोहीला.

प्रह उठी भजो गुरुराजने,
गुरु ब्रह्म जगावण हार, गुरुगुण दोहीला.

धन्य, धन्य, भविकजन पामशे,
एनो थाशे सफळ अवतार, गुरुगुण दोहीला.

मन मंदिरमां गुरु स्थापीने,
जपो जाप, तजो संताप, गुरुगुण दोहीला.

मनु जन्म मळ्यो महा पुन्यथी,
नर भव मळीयो अतिसार, गुरुगुण दोहीला.

[illegible]य ध्यान करो गुरुदेवनुं,
गुरुराज नमो शीरताज, गुरुगुण दोहीला.

गुरु तत्व महीं सहु आवीयुं,
गुरु भव भयना हरनार, गुरुगुण दोहीला.

सहु हर्ष थकी गुरुवर भजो,
कहे किंकर मुज मन प्राण, गुरुगुण दोहीला.

ॐ

१४

राग-वसंततिलकाव्रत

नित्ये उठी प्रह विषे गुरुदेव ध्यावो,
गुरुवर प्रभो विण बीजुं उरमां न लावो;
उठतां प्रभात समरे मन शुद्ध थावे,
भजतां थकां भव तणां दुःख दूर जावे. १

जय जय गुरु जय गुरुवर धूनध्यावो,
आनंद मंगळ तणां पुर उभरावो;
एना विना जीवननो नहि पार आवे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. २

आहा ! गुरुवर तणा सहु गुण गावो,
पळपळ विषे सद्गुरुवर नित्य ध्यावो;
महा पुन्यवान प्राणी गुरु गुण गावे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. ३

गुरुदेवता गुरुप्रभो गुरु दिव्य ज्ञानी,
गुरुदेव पाय पडजो सहु शीर नामी;
शरणुं प्रभो गुरु तणुं डूबता बचावे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. ४

चैतन्य सिंधु प्रभुना गुरु धून ध्यावो,
घट मेल साफ करीने उरमां गवावो;

जळमां अने स्थळ विषे गुरु रुप आवे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. ५

गुरुतत्व दीप झळक्यो मुज आत्म मांहे,
एना विना जीवनमां नव स्हाय क्यांए;
शांति प्रभो ! चरण किंकर गुण गावे,
भजतां थकां भवतणां दुःख दूर जावे. ६

ॐ

१५

राग-धार तरवारनी

प्रह उठ नित्य सदगुरु प्रभो समरीए,
भवतणां दुःख सहु नाश थावे.
सदगुरु सदगुरु सदगुरु सत्य छे,
ए विना कोई नहि पार पावे. प्रहउठी १

सदगुरु मात छे सदगुरु तात छे,
नित्य भजतां थकां शुद्ध थावे;
सदगुरु विण नहि जीवनतारक प्रभो,
गुरु कृपा होय तो मोक्ष पावे. प्रहउठी २

सदगुरु ब्रह्म छे सदगुरु धर्म छे,
सदगुरु विण नहि पार पावे;
रटन गुरुदेवनुं स्मरण गुरुदेवनुं,
एह नरनुं जीवन शुद्ध थावे. प्रहउठी ३

सदगुरुवरमहीं विश्व आवी गयुं,
सदगुरुदेव विण सर्व जुठुं;
स्हाय साची सदा सदगुरुवरतणी,
सदगुरु ध्यावतां पार आवे. महउठी ४

जाप पळपळ जपे, ताप नित्ये तपे,
मुखथकी इष्टनुं तान मचवे;
हृदयनो मेल धोवाय नहि त्यां सुधी,
सदगुरु पंथने केम पावे. महउठी ५

मस्त थई वन विषे धून धखवे सदा,
नदीतटे जई अरे स्नान करता;
रामना नामनुं गान नित्ये करे,
हृदय शुद्धि विना कंई न थावे. महउठी ६

हृदय शुद्धि करो मोह माया हरो,
जगत जंजाळ सहु परीहरो तो;
तान एनुं सदा ध्यान एनुं सदा,
शुद्ध मनथी भजे पार आवे. महउठी ७

सदगुरु सदगुरु स्मरण नित्ये करो,
करगरो नाथ चरणे पडीने;
दासकिंकर प्रभो! शांतिने विनवे,
शुद्ध मनथी भजे पार आवे. महउठी ८

१७

राग-उपरनो

कृपानाथ साचा मळ्या मोक्ष गामी,
करु हुं स्तुति एहनी शीर नामी;
महा पुन्य योगे मळे एह जाणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. १

गुरुराज मळवा नथी स्हेल भाई,
भमे भूत थईने तदापी न कांई;
निरंतर गुरु भक्तिनो योग आणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. २

गुरु विण मळे नहि प्रभु पंथ भाई,
गुरु विण मळे नहि प्रभुनी सगाई;
गुरु ज्ञानी ध्यानी गुरु सत्य जाणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ३

सदा चित्त राखो गुरुदेव मांही,
नथी ए विना विश्वमां भाई कांई;
गुरुवर तणी स्हाय साची पीछाणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ४

सदा गान एनुं सदा तान एनुं,
सदा पान एनुं सदा ध्यान एनुं;
करो नित्य भक्ति हृदय टेक आणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ५

शरण एह साचुं विना सर्व काचुं,
प्रभो नित्य अंतर विषे भक्ति राचुं;
कहे बाळ किंकर सदा उर आणो,
गुरुराज ज्ञानी प्रभु रुप मानो. ६

१७

राग-धन भाग्य हमारां

सदगुरु अमने पार उतारो.

दुनीआदारीनां दुःखो सहीने, रात दिवस एमां गाळ्यो;
विषम पंथथी कोण निवारे, गुरु विण नहि आधारो. स-१

राग, द्वेष, रमत बहु रमीयो, भवसागरमां भमीयो;
अनंत, अनंता, अवगुण भरीयो, एहने आप उगारो. स-२

अनुभवीअ विण कोण उगारे, साचो पंथ बतावे;
ज्ञान, ध्यानथी पार उतारे, एह गुरु उरधारो. स-३

सत्य मार्गनुं श्रवण करावो, शांतीनो पाठ पढावो;
दया धर्मना रस्ते लावो, किंकरबाळ बचावो. स-४

१८

राग-सदगुरु भक्ति करेयारे

सदगुरु अरज स्वीकारो आप, सदगुरु अरज स्वीकारो;
अमने बाळक गणीने बचावो आप, सदगुरु रज स्वीकारो. स-१

संसार दावानळमां सडेला, अज्ञान मांहे उंघेला;
माया, मदमां भान भूलेला, पापीजनने तारो आप. स-२

विषय, नींदमां अंध थएला, मानमां मस्त वनेला;
मोह, मदिरा पान पीधेला, एहनो केफ उतारो आप. स-३

पर नींदामां आनंद मान्यो, मनमांहे बहु हरखाया;
पोताना दोषो नवी जाण्या, ए सहु नाथ विचारो आप. स-४

अति, अति, दोषोना भरेला, सदगुरु पंथ चूकेला;
घोर गगनमां घूमी रहेला, किंकर वाळ उगारो आप. स-५

ॐ

१९

गुरुस्तोत्र

राग-हरिगीत छंद

जीवन नौका तारनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
आत्मने उद्धारनारा, एक श्रीगुरुदेव छे;
घटमां दिपक सळगावनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
मानव जीवन पलटावनारा, एक श्रीगुरुदेव छे. १

भवःदुख ज्वाळामां हिमालय, एक श्रीगुरुदेव छे,
शांतीनुं साचुं शिवालय, एक श्रीगुरुदेव छे;
लक्ष्मी अने वैभव जीवनमां, एक श्रीगुरुदेव छे,
तत्वना भंडार साचा, एक श्रीगुरुदेव छे. २

योगीश्वरो अवधूतमांपण, एक श्रीगुरुदेव छे,
रुषिवर अने मुनिवर महीं पण, एक श्रीगुरुदेव छे;
जपमंत्रने जगदीश जीनवर, एक श्रीगुरुदेव छे,
मूर्ति अने मंदिरमां पण, एक श्रीगुरुदेव छे. ३

भाग्यनो साचो सितारो, एक श्रीगुरुदेव छे,
मुक्तिनो मनहर मिनारो, एक श्रीगुरुदेव छे;
जीवनयंत्र सुधारनारा, एक श्रीगुरुदेव छे,
दिव्यपंथे प्रेरनारा, एक श्रीगुरुदेव छे. ४

संयम अने शास्त्रो महीं पण, एक श्रीगुरुदेव छे,
तरण तारण दुःख निवारण, एक श्रीगुरुदेव छे;
विश्नु अने ब्रह्मा महेश्वर, एक श्रीगुरुदेव छे,
परब्रह्मने ज्ञानी गुणेश्वर, एक श्रीगुरुदेव छे. ५

ज्ञान साचुं ध्यान साचुं, एक श्रीगुरुदेव छे;
सुख संपत्तीनुं स्थान साचुं, एक श्री. गुरुदेव छे;
किंकर कहे मन मंदिरे पण, एक श्रीगुरुदेव छे,
विश्वमां व्यापी रहेला, एक श्रीगुरुदेव छे. ६

ॐ

श्रीसद्गुरुभ्यो नमोनमः

तृतीय श्रीशांतिसूरीश्वर काव्य तरंग

ॐ

वसंततिलकावृत

काव्यो लख्यां हृदयना अति हर्षथी में,
गुरुदेवना स्वरुपने अंतर वरीने;
आहा! अजब कृपा थई शांतिसूरीनी,
भभकी रही जीवनमां धून ए गुरुनी.

ॐ

१

श्री सरस्वती देवीने प्रार्थना

राग-बीलावल

नमन करुं नमन करु, हे ! सरस्वती,
मयूरवाहन वास करी, सुख सुहावती. नमन-१
जननी, धरणी, जगतभरणी, देवी भगवती;
ज्ञान, ध्यान, शक्ति अर्प, हे ! सरस्वती. नमन-२
रुषि योगी, संत जपे, पंडितो अती;
ध्यान त्हारु सर्व करे, हे ! सरस्वती. नमन-३
भोजराये भजन कीधुं, भ्रमर भींजवती,
कवि, काळिदास कहे, बुद्धि खीलवती. नमन-४
देवीमां असुर नाद, धरणी ध्रूजवती;
तेज त्हारुं दिव्य भासे, हे ! सरस्वती. नमन-५
प्राण प्रभु शांति कहे, विश्व वदंती;
शास्त्रने रचावनार, हे ! सरस्वती. नमन-६
शांति चरण दासमां, तुं पुरजे मती;
वांच्छना पुरो अमारी, हे ! सरस्वती. नमन-७

२

राग-रखारण हो मारे नेमलडे

गुरुजी हो ! मोरे मंदिरीये,
मोरे मंदिरीये हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. १

शांतिसूरीश्वर, प्राणप्रभु माहरा;
शांतिसूरीश्वर हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. २

ज्ञानी धुरंधर, ध्यानी धुरंधर;
विश्वमही वसीयारे हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ३

मोरे मंदिरीये, अलबेली मेडीओ;
भक्तिना गोख रुडा हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ४

प्रेम पुष्प हार गुंथ्यो, कंठे सोहाववा;
कंठे सुहाववारे हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ५

धीरजनो धुप अने, शांतीनी दीवीओ;
प्रगटयो पुनमचंद हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ६

अनुभवनी आरती, उतारुं आनंदथी;
चितडानां चंदन रे हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ७

ध्यान दीप झळक्यो छे, सघळी आलममां;
दिव्य तेज झळक्यां रे हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ८

पळपळ हुं जाप जपुं, प्राणप्रभु माहरा;
टळवळतां वाट जोउं हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ९

शांशां सन्मान करुं, हुं तो प्रीतमजी;
अंतरना प्राणनाथ हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. १०

किंकर, बाळ प्रभो, शांतिसूरींद्रनां;
करगरतां पाय पडे हो !
पधारो मोरे मंदिरीये. ११

ॐ

३

राग-सैदा तारो खूब छे दहाडो रे

गुरुजी भीक्षा आपोरे, भिखारी आव्या आंगलडे.

राय पूकारे रंक पूकारे, पंडीतनो पोकार;
वीर अने वेदांत पूकारे, माया अपरंपार. गु-१

सज्जन आवे दुर्जन आवे, मानवनो नहि पार;
उंच नीचानो भेद नालावो, भाव भर्यो सत्कार. गु-२

कंईक रडे छे कर्मथी हारी, कंईक रडे संसार;
कंईक रडे छे भक्तिना माटे, ध्यान करे छे अपार, गु-३

आशिष आपो कष्टने कापो, हस्त जोडुं वारंवार;
शांतिगुरु श्री नाथ अमारा, देवाना छो दातार. गु-४

रंक भिखारी राय भिखारी, मोटरमां फरनार;
संत अने संन्यास भिखारी, भीख भर्यो संसार. गु–५

किंकर भटक्यो भव अटवीमां, फेरा फर्यो वारंवार;
पुन्य प्रतापे नाथ त्हमारो, सांपडीयो दरबार. गु–६

दश वर्षोमां दवळु देख्युं, माया अपरंपार;
कर्म तणी महा क्रूर गती छे, नाथ बचावणहार. गु–७

दुनिआनो दाळीद्र भिखारी, रंक अने निरधार;
खूब नचावो खूब हसावो, तोय न आवे पार. गु–८

उंधा हाथे लोट पीसावो, खाल मही पडे स्हार;
आकाशने पाताळ बतावो, माया अपरंपार. गु–९

किंकर रडतो अर्ज करे छे, महेर करो कीरतार;
भक्ति तणी भीक्षाने काजे, नित्य करुं पोकार. गु–१०

४

राग-कोई नहि तारणहारा

माया अकळ तुमारी;
गुरुजी माया अकळ तुमारी.

राय न जाणे, रंक न जाणे, जाणे नहीं रुप धारी;
सुर, असुर, देवो नहीं जाणे, अकळ गती प्रभु तारी. गु–१

जाप जपावे, ताप तपावे, धून धखावे भारी,
जय जय नाद बजावे मुखसे, तोय न जाण तुमारी. गु–२

घडीक नचावे, घडीक हसावे, पळमां भान भूलावी;
रातदिवस रखडे नव जाणे, अकळ गती प्रभु तारी. गु-३

पूंठ पकडतां प्रेम धरीने, भटके जेम भिखारी;
लक्ष्मी तणी ज्योति बतलावे, तोय न जाण तुमारी. गु-४

राय भमावे, रंक भमावे, भमता भान विसारी;
भक्तिवान नर भूंगळ वजावे, तोय न जाण तुमारी. गु-५

सोनुं कसे तिम देह कसातो, कष्ट पडे अति भारी;
मरतां मरतां माळ गुरुनी, माया दीसत तुमारी. गु-६

घट मंदिरने साफ बनावो, समता रस उर धारी;
शांति सूरीश्वर नाथ जीवनना, एक गुरु गिरधारी. गु-७

अकळमती छे अकळगती छे, गत गुरुवरनी न्यारी;
किंकर कहे आ दिन बाळकने, स्हाय निरंतर तारी. गु-८

ॐ

५

राग-लागी लगन मुने तारी

आवुना योगी त्हें मने माया लगाडी.

ब्रह्म दशामां त्हें तो, अलख जगायो बाबा;
मुक्तिनी वीणा त्हें बगाडी. आवुना. १

अदभूत मंदिर छे त्हारां, अनुपम द्वारो बाबा;
सोहमूनी धूनी त्यां जगाडी. आबुना. २

अविचळमां वझो त्हारा, मानव नहि भासे बाबा;
अवधूत पुष्पोनी रची वाडी. आवुना. ३

रडवडीयो हुं संसारे, भवभयनां दुःखडां भारे;
शरणे आव्यो छुं वारी वारी. आवुना. ४

अज्ञानी बाळक त्हारो, उरमां त्हें धार्यो वावा;
किंकरमां कळा त्हें लगाडी. आवुना. ५

६

राग-कल्याण

नमन करो गुरु शांतिसूरीश्वर;
अवधूत आनंद घन योगीश्वर. नमन १

तुंहीं तुंहीं त्राता जग विख्याता,
भारतमां तुम गुण गवाता;
जय जय वंदन जय योगीश्वर. नमन २

आप अरुपी, ब्रह्मस्वरुपी,
आत्म मस्तीनी ज्योत झळकती;
विश्व विभुश्वर महान योगीश्वर. नमन ३

भव भय भंजन पाप निकंदन,
राज राजेश्वर करत हे वंदन;
वसुमती नंदन तार्यो मरुधर. नमन ४

आत्म उद्धारक, कर्म निवारक,
वंदन करत हे विश्वना बाळक;
तारो किंकरदास सूरीश्वर. नमन ५

७

राग-कल्याण

नमन करुं शांतिसूरीश्वरने,
शांतिसूश्वरश्रीने. नमन १

भारत भूमीने धन्य धन्य छे,
धन्य मरुधरने. नमन २

गाम मणादर धन्य धन्य छे,
धन्य वसुदेवीने. नमन ३

आहिर कुळने धन्य धन्य छे,
धन्य पीता तोलाने. नमन ४

धन्य धन्य गुरु धर्मविजयजी,
धर्म धुरंधरने. नमन ५

धन्य धन्य श्री तिर्थविजयजी,
महान तपस्वीश्रीने. नमन ६

तेह शिष्य गुरु शांतिसूरीश्वर,
अवधूत ध्यानीश्रीने. नमन ७

किंकर बाळक शांति चरण रज,
जय जय तान वरीने. नमन ८

ॐ

८

राग-सूरीसम्राट पद महा जाणजो रे.

म्हारी भक्ति जागी छे नवा विश्वमांरे;
प्रभो! शांतिसूरी गुरुराज. म्हारी १

सूतां मानव जाग्यां छे हवे नींदथीरे;
त्हारी माया अजब ! गुरुराज. त्हारी २

जगे जगमां संदेश त्हारो पहोंचीयोरे;
त्हारा दर्शनथी खूब हरखाय. त्हारी ३

तान मचव्युं त्हें आबु गीरीराजमांरे;
ॐ धूनीनो यज्ञ कहेवाय. त्हारी ४

राज महेलोमां सूर त्हारा गाजतारे,
राजवीरो नमे गुरुराय. त्हारी ५

एक समये आवेल कदी नव भूलेरे;
त्हारी अदभूत ज्योती झघाय. त्हारी ६

त्हारां नयनो चळके छे दिव्य तेजथीरे;
नेत्र नीरखी आनंद मुग्ध थाय. त्हारी ७

विश्व प्रेम, सागर छला छल भर्योरे;
स्नान करवाथी पाप नाश थाय. त्हारी ८

भीलमेणा मानव घणा कारमारे;
एने वाणीथी बोध अपाय. त्हारी ९

त्हारा मुखथी अमृत रस वही रह्योरे;
नाम त्हारुं आ विश्वमां पूजाय. त्हारी १०

नथी जातीनो भेद त्हारा अंतरेरे;
राय रंक सहु एक सरखाय. त्हारी ११

लाग लगनी किंकर त्हारा वाळनेरे;
मस्त जीवनमां सर्वे लखाय. त्हारी १२

९

राग-अखीलपती हरजनका तुमपे क्रोडो प्रणाम

शांतिसूरी गुरुवरजी, तुमसे कोटी नमन;
प्राण प्रभु गुरुवरजी, तुमसे कोटी नमन.

भारतमां भडवीर गवाया, देश मरुधर जन्म धराया;
साचा संत कहाया, गुरुने कोटी नमन. शांति १

गाम मणादरने अपनाया, परम कृपाळु आप कहाया;
घर घर गुण गवाया, गुरुने कोटी नमन. शांति २

विश्वप्रेमथी पावन करीया, अवधूत योगीश्वर पदवरीया;
सत्य वचन उर भरीया, गुरुने कोटी नमन. शांति ३

परदुःखभंजन हार गवाया, अनाथना आधार कहाया;
भारत भूप नमाया गुरुने, कोटी नमन. शांति ४

आलममां जयघोष वजाया, मूत्र अहींसानां भजवाया;
दिव्य दिपक झळकाया, गुरुने कोटी नमन. शांति ५

दीन बाळकनी अज स्वीकारो, तुम विण नाथ नहि आधारो;
किंकरबाळ उगारो, गुरुने कोटी नमन. शांति ६

१०

राग-भेटे झुले छे तरवार

नाद एनो घरघरमां थाय, प्राण प्रभु शांतिसूरीजी.
शांतिसूरी जगमां पूजाय, प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. १

शांतिसूरी गुरु भेटीने आजे, आनंद आनंद थाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद २

चंद्र समान मुख चळके गुरुश्री, तेज एनुं आलममां थाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ३

ज्ञाते आहिर धाव पाळक कहाया, धन्य एनी जननीना बाळ;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ४

वसुमात कुक्षीए जनम्या जीणंदजी, राजवीरो चरणे लोटाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ५

धन्य, मणादर, नगरी दीपावी, दीप एनो घरघरमां थाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ६

मृत्युना पंथेथी मानव उगारे, रोग एनी आशीषथी जाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ७

ज्ञानी धुरंधर, ध्यानी धुरंधर, आत्मज्ञान दबळुं देखाय,
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ८

एवा रुषीवरनां दर्शन करे तो, दुःख एनां भवभयनां जाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद ९

किंकरवाळ एना चरणोमां विनवे, नाथ तणी साची छे स्हाय;
प्राण प्रभु शांतिसूरीजी. नाद १०

ॐ

११

राग-धनाश्री

नमो नमो शांतिसूरी गुरुराया;
आनंद अधिक झमाया-झमाया. नमो १

वसंत पंचमी दीन शुभ जाणो;
जेम वसंत खीलाया-खीलाया. नमो २

आहिर कुळमां जन्म धरायो;
जग उपकारी कहाया-कहाया. नमो ३

रायका श्री तोलाना नंदन;
नामे सगतोजी कहाया-कहाया. नमो ४

माता वसुदेवी कुक्षी दीपावी;
भारत भूप नमाया-नमाया. नमो ५

आठ वरस घरवास वसाया;
जंगल ढोर चराया-चराया. नमो ६

धर्म विजय प्रभो धर्म धुरंधर;
एहनी पाट दीपाया-दीपाया. नमो ७

युवान वयमां संयम पाया;
शांतिविजयजी कहाया-कहाया. नमो ८

महान् तपस्वी तिर्थं गुरुना;
शिष्य तरीके सुहाया-सुहाया. नमो ९
आर्य अनार्य नरो अपनाया;
शांतीना पाठ शीखाया-शीखाया. नमो १०
दारु मांसनो त्याग करावी;
लाखो जीव बचाया-बचाया. नमो ११
परम कृपाळु परम दयाळु;
किंकर बाळ रीझाया-रीझाया. नमो १२

१२

राग-तेरे पूजनको भगवान

मारा प्राण प्रभु देखाय, आबू पहाडमां जोजो;
एना घर घर गुण गवाय, सारा विश्वमां जोजो. १
एने घटमां ब्रह्म जगाया, आलममां नाद बजाया;
दीन बंधु नाथ कहाय, सारा विश्वमां जोजो. २
नाना म्हाडमां जन्म धराया, भीमतोला तात कहाया;
एनी जन्मभूमी देखाय, मणादर गाममां जोजो. ३
निज रुप जगतने भासे, नहि भेद जीवनमां वासे;
ऐनुं तेज बधे झळकाय, सारा विश्वमां जोजो. ४
महा योगीश्वर पद काजे, दीनरात गुरु धून गाजे;
घन घोर घटा देखाय, आबू पहाडमां जोजो. ५
भय मृत्यु तजीने साध्युं, वीडु मोक्षपुरीनुं वाध्युं;
एनो घोर गगनमां थाय, आबू पहाडथी जोजो. ६

वसुनंदन नाथ कहाया, जंगलने पहाड घूमाया;
एनां दर्शन दुर्लभ थाय, आबू पहाडमां जोजो. ७

ए अकळकळाना गामी, प्रभु नाथ निरंजन स्वामी;
गुरु शांतिसूरीश्वर राय, आबू पहाडमां जोजो. ८

तुंही, तुंही, एक जीवनमां, तुंही, तुंही एकवचनमां;
तुंही, तुंही, नाम जपाय, मारा मंदिरे जोजो. ९

किंकर मन एक गुरु तुं, किंकर मन एक प्रभु तुं;
किंकरनो प्राण कहाय, आबू पहाडमां जोजो. १०

ॐ

१३

राग-नागरवेलीयो रोपाय

नमीए शांतिसूरीश्वरराय, भजतां आनंद आनंद थाय.

भारतना भगीरथ रुपी, ईश्वरनो अवतार जो;
सूरीश्वरश्री साचा कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० १

मरुधरमां मेरु तूट्यो, अम्रत जळ उभराय जो;
पतीतो अहींयां पावन थाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० २

संत कहाया विश्वना, शासनना शणगार जो;
दयाळु दानेश्वर कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ३

पुण्यवंत नरने मळे, भक्ति अपरंपार जो;
अभागी आडमभां अथडाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ४

ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, लब्धी तणा भंडार जो;
कृपालु दिव्यगुणी कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ५

ध्यान दिपक प्रगट्यो पुरो, झघमघ ज्योत झघायजो;
पुरंधर प्राणप्रभु कहेवाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ६

दीन बाळकनी विनती, शांतिसूरीश्वर चरणे जो;
हृदयथी किंकर पडतो पाय, गुरुना घरघर गुण गवाय. न० ७

१४

राग-मारुं वतन मारुं मारुं वतन

कोटी नमन कोटी कोटी नमन,
मारा व्हाला गुरुश्रीने कोटी नमन. कोटी १

नमन करेथी घट ज्योत जागे,
नित्ये रहो सहु एमां मगन. कोटी २

तिर्थविजयजी महान तपस्वी,
तप जप महीं जेणे गाळ्युं जीवन. कोटी ३

धर्मविजय प्रभो धर्म धुरंधर,
मरुधरनां ए मोंघां रतन. कोटी ४

गुरुवर, गुरुवर, तान मचावो,
पळ, पळ, महीं करो एहुं रटन. कोटी ५

जन्म मरणनी मुक्तिने माटे,
जेणे समर्प्यां तन, मन, धन. कोटी ६

एक शरण प्रभो शांतिगुरनुं,
किंकर कहे मने लागी लगन. कोटी ७

ॐ

१५

राग-पार्श्वप्रभु प्यारा वामा माताजी के नंद

आज सूरीश्वरजी भेटीने आनंद थाय.

अवधूत आतम ज्ञानी धुरंधर,
आनंद अति उभराय. आज-१

अनंत जीव प्रतिपाळ कहाया,
बाळ ब्रह्मचारी कहेवाय. आज-२

बामणवाडजी तिर्थ धुरंधर,
महावीर स्वामी भेटाय. आज-३

साचा गुरुवर, साचा प्रभुवर,
साचा सुज्ञानी कहाय. आज-४

विश्व गजावे ने विश्व हसावे,
विश्व मही डंको वजाय. आज-५

बाळक आपनां अर्ज करे छे,
किंकर गुरु गुण गाय. आज-६

ॐ

१६

राग-गुरु शांतिविजयजी स्वामी रे गुण गाउं आपना

ओ ! नाथ त्हमारुं मनोहर मुखड्ड जोई जोई मन ललचाय.
वसुनंदन आप कहाया, आबु गीरीराज सुहाया;
धन्य धन्य तुमारी छाया मुखड्डु जोई जोई मन ललचाय. १
राग द्वेष रीपुने मार्या, मन वच कायाथी काढ्या;
भारतमां आप पूजाया मुखड्डु जोई जोई मन ललचाय. २
माया ममताने त्यागी, भय दुर्गती दूरे भागी;
धून मोक्षपुरीनी जागी मुखड्डु जोई जोई मन ललचाय. ३
तुम अनाथ बाळ उगारो, भवभयनां दुःखडां वारो;
किंकर कहे पार उतारो मुखड्डु जोई जोई मन ललचाय. ४

१७

राग-मैंतो दिवाना प्रभु तेरे लीए हय

मैंतो दिवाना गुरु तेरे लीये हय;
तेरे लीये, गुरु तेरे लीये हय. मैंतो-१
ज्ञान, दर्शन, चारीत्र, के धारक,
त्रण रतन गुरु तेरे लीये हय. मैंतो-२
पंच महाव्रत साधु कहाते,
दया का दान गुरु तेरे लीये हय. मैंतो-३

धन्य, आहिर, कुळज्ञाती दीपावो,
अर्हम् का ध्यान गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–४

अनंत जीव प्रतिपाळ कहाया,
योगीका नाम गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–५

आत्म साधन केरी ज्योति जगावो,
संतन का पाठ गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–६

पतितजनोकुं पावन बनावो,
मुक्तिका हार गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–७

शांतिसूरीप्रभो ! नामे तुमारा,
शांतीका थाळ गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–८

बाळक गुरुने अर्ज करे छे,
किंकरदास गुरु तेरे लीये हय. मेंतो–९

१८

राग–ए जगमांहि अद्भूत योगी

आलममां डंका बजादीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने;
सोता मानवको जगादीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. १

अर्बुदगीरीवरमे वास कीया, आतमकी ज्योत प्रकाशदीया;
अज्ञान तीमीर भय नाश कीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. २

आनंदका सागर हीलवाया, वीर वचनामृतको पीलवाया;
शुभ पाठ दयाका पढवाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ३

ॐकार मंत्रको जपवाया, उस डंका घर घर बजवाया;
दिव्य दिपकको झळकाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ४

अहींसा आलमको समजाया, कंई राजनको ए शीखलाया;
कुकर्म फंदसे छुडवाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ५

दर्दी के दर्दो नाश कीया, भव रोगोसे कंई मुक्त हुआ;
अतिशयका काबु अजमाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ६

शांती सरोवरमे स्नान कीया, अमृत अमीरसका पान पीया;
दुनीआदारीको छोड दीया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ७

ब्रह्मचारी बळको बतलाया, अंतरमे ज्योती झळकाथा;
किंकर बाळकने दीखलाया, ए शांतिसूरीश्वर योगीने. ८

ॐ

१९

राग-मेरा मौला बुलावे मदीने मुजे

मारी अरजी उपर तुम ध्यान धरो;
गुरु शांतिसूरीश्वर स्हाय करो.

आबु अविचळ पहाडमां, गुरु रात दीन फरता फरो,
वाघ सिंहनो भय तजीने, आत्मनुं भातुं भरो;
अष्ट पहोर गुरु तमे ध्यान करो. गुरु-१

ॐकार ध्यान आराधीने, गुरु आतममां लैलीन बनो,
शांती अजब उरमां भरीने, आतम मस्तिमां रमो;
प्रभो ! ध्यानथी कर्म चकचूर करो. गुरु-२

वसुमात कुक्षे जन्म धरीने, देवसुत प्रसव्यो खरो,
मणादर भूमीने धन्य छे, ज्यां मानसर जेम हंसलो;
पीता तोलानो रत्न गवायो खरो. गुरु–३

क्रोध लोभ तजी गुरुश्री, मानने मूक्युं तमे,
मुक्ति किनारो साधवाने, मोहने छोडयो तमे;
करुणालु गुरु करुणा रे करो. गुरु–४

अशरण अने निरधारना, आधार छो गुरुश्री तमे,
परदुःख भंजन गर्व गंजन, शांतीना सागर तमे;
प्रभो ! भवभयनां दुःख दूर करो. गुरु–५

लब्धी तणा भंडारने, दातार छो दीनना तमे,
अवधूतने ज्ञानी गुरु, कलीकाळमां प्रगटया तमे;
दीनानाथ हवे मुने पार करो. गुरु–६

बाळयोगी ब्रह्मचारी, योगीमां सम्राट छो,
डंको थयो आ विश्वमां, किंकर कहे मुज तात छो;
कहे भक्त मंडळ उद्धार करो. गुरु–७

२०

राग–मेरा मौला बुलावे मदीने मुने

योगी, अवधूत, वेष दीपाव्यो खरो;
पीतातोलानो रत्नगवायो खरो.

बाळपणमांहे तमे, जंगल अने झाडो फर्या,
गौमातने भैंशो चरावी, आत्ममां ओजस भर्या;
धन्य, धन्य, आहिर, अवतार हीरो. योगी-१

किशोर वयमां नीसरी, नहि देहनी परवा करी,
कष्टो अति जाते सही, शरणुं गुरुश्रीनुं ग्रही;
मुनीश्वरमां तुं महान कहायो खरो. योगी-२

शुभ शांती रस अंतर भरी, भक्ति पुरी झळकीखरी,
ॐकारने उरमां धरी, अवधूतयोगी पदवरी;
अवीचळमांहे नाद वजायो खरो. योगी-३

योगीश्वरो अवधूतमां, सम्राट तुं साचो खरो,
विश्वमां आदर्श साधु, तत्व दीप झळक्यो खरो;
गुरुवरमां तुं ज्ञानी गवायो खरो. योगी-४

दारु अने हींसा तजावी, राजवी पावन कर्या,
अंग्रेज अन्य मती जनोने, ॐ थी रीझव्या खरा;
कहे किंकर बाळ उद्धार करो. योगी-५

ॐ

२१

राग-मेरा मौला बुलावे मदीने मुजे

एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो;
जेथी जीवन तमारुं पार करो. १

माया अने ममता तजी, जे आत्म रस सींचन करे,
दुनीआथकी जे दूर रही, अवधूत योगी पद वरे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. २

राय, रंक समानदेखे, श्रवण स्तुती नव करे,
आत्मज्ञान रमण करीने, ध्यानथी जाग्रत करे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ३

सत्य नीती मंत्र जेनो, धैर्यता हृदये धरे,
परनारी माता समगणे, शीव सुंदरीयारी वरे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ४

आबू अवीचळ पहाडमां, ए सदगुरु साचा मळे,
शांतिसूरीश्वर नाम जेनुं, शांतीथी कर्मो हरे;
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ५

शांती तणा भंडार साचा, आत्मज्योत प्रगट करे,
ॐकारना महामंत्रथी, नरनारीने पावन करे;
कहे किंकर बाळ उद्धार करो.
एवा सदगुरुनुं तमे ध्यान करो. ६

२२

राग-जाओ जाओ के मेरे साधु रहो गुरु के संग

पायो, पायो, महापुन्य उदयसे, सदगुरुवर को संग;
देखलीया में सबही जगको मीला एक भगवंत,
अब तो नाथ! करुणा करके कृपा कीजे भगवंत. पा-१

गुरु बनना ए कठीन मार्ग हे, अती विकट ए पंथ;
अकळ कळाका ज्ञान पढे जब, बने वोही भगवंत. पा–२

मृत्यु साथ जे रमत रमत हे, करे अलखमें जंग;
आत्मज्ञान अंतरमें प्रगटे, बने वोही भगवंत. पा–३

अवधूत रूप वीरला करजाने, अक्षयसुख अभंग;
अजर अमरपद वोही पीछाणे, एह स्वरुप भगवंत. पा–४

अर्बुदगीरी अवीचळ पहाडोमें, फीरता हे भगवंत;
भाग्यवान नर दर्शन पावे, करे गुरुका संग. पा–५

घोर जंगलमें साधना करके, मुनीसें हुआ महंत;
अती अती तप मौन लगा के, बने आज भगवंत. पा–६

परम कृपाळु शांतिसूरीश्वर, मीला मुने भगवंत;
बाळक किंकरदास बचायो, पूर्यो हृदयमां रंग. पा–७

२३

राग–बोल बोल आदीश्वर बाबा

बोल बोल योगीश्वर बाबा,
काय थारी मरजीरे केमासुं मुदे बोल;
बोल बोल गुरु शांतिसूरीजी,
काय थारी मरजीरे केमासुं मुदे बोल. बोल १

दूर देशांतर से में आयो,
श्रवण सूणीने तोरा रे;

उलट अती मनमे हुई मेरी,
आशा पूरो रे केमासुं मुढे बोल. बोल २

मारवाडमे भले वीराज्या,
महीमा अजब बतावो रे;
देश देशमें नाम तुमारो,
महान कहायो रे केमासुं मुढे बोल. बोल ३

मरुधर भूमीमें घर घर तोरां,
मंगळगीत गवायां रे;
दुःखीआनां दुःख दूर करीने,
हर्ष भराया रे केमासुं मुढे बोल. बोल ४

समकीत केरो सत्य पूजारी,
साधु पद दीपायोरे;
पंच महाव्रत भार वहीने,
पूज्य गवायो रे के मासुं मुढे बोल. बोल ५

बार वरस तप ध्यान धुरंधर,
मौन अति तें धरीयां रे;
काम क्रोध को भस्म करीने,
शांती भरीयारे केमासुं मुढे बोल. बोल ६

जन्मभूमी जयवंत बनाई,
मातपीता कुळ तार्यां रे;

धन्य आहिर अवतार तुमारो,
सिद्ध गवायो रे केमासुं मुढे वोल. वोल ७

केसरीआजी तिर्थने माटे,
घोर अभीग्रह करीयो रे;
त्रीश उपवास हुआपण मनसे,
कदी नहि डरीयोरे केमासुं मुढे वोल. वोल ८

मोती महेलमां पारणुं कीधुं,
महाराणाना हस्ते रे;
भोपालसिंह राजनने बुझव्यो,
जय जय वर्ते रे केमासुं मुढे वोल. वोल ९

अर्ज सूणो सहु भक्तजनोनी,
अव आधार तुमारो रे;
वाळक किंकरदास तुमारो,
डूवतो तारोरे, केमासुं मुढे वोल. वोल १०

ॐ

२४

राग-धन धन हो जगमे नरनार सीद्धाचल के जाने वाले

धन्य धन्य शांतिसूरी गुरुराज,
शांतीके पान पीलाने वाले.

आहिर कुळमे अवतार, उपन्या ए जुग कीरतार;
सव धर्मके पालन हार ज्योतिसे ज्योत मीलानेवाले. ध-१

ब्रह्मचर्य अति बळवान, शुभ शांती अनोपम तान;
अरिहंत प्रभुके ध्यान पतितको प्रेम पीलानेवाले. ध-२
अर्हम पदना धरनार, अविनाशी पद उर धार;
गुरु तारे नरने नार मरुधर देश दीपानेवाले. ध-३
गुरु ज्ञानी अने गंभीर, झूकते हे कंई नरवीर;
कहे किंकर ए अवधूत धुरंधर ज्ञानी कहानेवाले. ध-४

ॐ

२५

राग-दांडी तणा किनारे

वंदन तो कर रहा हुं, चाहो तारो या न तारो;
दर्शन तो कर रहा हुं, चाहो तारो या न तारो. वं-१
संसार सागरोसे, तुम वीण कोण तारे;
अरजी सूणा रहा हुं, चाहो तारो या न तारो. वं-२
दोषो अति भरेला, दुनिया मही डूबेला;
पोकार कर रहा हुं, चाहो तारो या न तारो. वं-३
मद मोहमां भरेला, माया मही फसेला;
विनती तो कर रहा हुं, चाहो तारो या न तारो. वं-४
बंधन भवाब्धी भयसे, तुम वीण कोन छूडावे;
शीर तो झुका रहा हुं, चाहो तारो या न तारो. वं-५
अज्ञानता हटाके, शुभ शान्ति आप अर्पो;
चरणोमे नम रहा हुं, चाहो तारो या न तारो. वं-६

आबु अजब गीरीमें, शांति प्रभो चरणमें;
सेवा तो कर रहा हुं, चाह्य तारो या न तारो. वं-७
किंकर पूकार करते, भवसे करो अनेरा;
शांतिकुं च्हा रहा हु, चाह्य तारो या न तारो. वं-८

२६

राग-दांडीतणा किनारे

गुरुवर ! प्रभो जीवनमे, हे एक ही हमारा;
शीर एक को नमाया, दुसरोंसे क्या सहारा. १
अंधार कोटडीमे, अबतो हुवा उजाळा;
परवा नहे कीसीकी, सच्चा मीलासहारा. २
आफत पडे कदापी, सबहो फना तदापी;
शोचुं नहि जीवनमें, सच्चा मीला सहारा. ३
चाहय तारे या डूबाडे, गेडीसे मार मारे;
कवही न टेक हारे, ये हे नियम हमारा. ४
मेंतो भूलूं कदापी, पण ए भूले न कवही;
माया अजब ! गुरुकी, सच्चा मीला सहारा. ५
अवधूत ज्ञानी ध्यानी, अमृत समी हे वाणी;
गुरु ! मोक्षकी नीशानी, सच्चा मीला सहारा. ६

अरजी प्रभोसे मेरी, कबही भुलूं न उन्को;
गुरु एकही कीयाहे, दुसरों से कया सहारा. ७

कबही वियोग उन्का, मुजसे नहि कराना;
पळमात्र नहि विसारुं, सच्चा मीला सहारा. ८

मुज मन पीता ही माता, मुज मन प्रभो! मनाता;
मुज पापीकाए दाता, दीनके दयाळु प्यारा. ९

में ईष्ट उन्को जाणु, सबही गुरुमे मानु;
सर्वस्व भी पीछाणु, सच्चा मीला सहारा. १०

शांति प्रभो ! चरणमे, ये अर्ज बाळ केरी;
कहेते हे दासकिंकर, बाकी जुठा सहारा. ११

२७

राग-वसंत तिलका वृत्त

मागुं प्रभो ! जीवनमां स्मित हर्ष त्हारुं,
मागुं प्रभो ! जीवनमां शुभ अर्पनारुं;
आहा ! प्रभो ! तुज वीना सहु छे अकारुं,
त्हारा वीना जगतमां नव कोई प्यारुं. १

आहा ! ध्वनी गुरुश्रीनो विश्वे वर्यो छे,
ॐकारनो दीपक आ जगमां धर्यो छे;
आहिरनां अति अति पुन्ये धनारुं,
त्हारा विना जगतमां नव कोई प्यारुं. २

शांती तणां खरेखर पुर उभर्यां छे,
आहा! मरुधरतणा पुन्ये वर्यां छे;
सर्वात्मने हृदयथी तुं एक धारुं,
त्हारा विना जगतमां नव कोई प्यारुं. ३

भवदुःखमां भमी रह्या जीव तुं उगारे,
त्हारा विना अरेरे नव कोई तारे;
शांतिसूरीश्वर गुरुवर नाम त्हारुं,
त्हारा विना जगतमां नव कोई प्यारुं. ४

भक्तोतणां भीतरथी भवःदुख कापो;
आहा! प्रभो! हृदयमां कंई ज्ञान आपो;
तुज बाळकिंकर कहे सर्वे अकारुं,
त्हारा विना जगतमां नव कोई प्यारुं. ५

ॐ

२८

राग-वसंततिलकावृत

शांतिसूरि गुरु मळ्या भव भीड भागी !
वंदन करी हृदयमां शशी ज्योत जागी;
आत्मन् चिदनघन् ऋषिवर मस्त योगी,
महामंत्र ॐ रसपान पीयुप भोगी. १

बनीए सदा जीवनमां सुख-संपशाळी,
भक्ति भगीरथ वधे भय त्राप हारी;

अर्पो नीतीत्व बळ दीनदुःख उपकारी,
भूलीए नहि कदी विभु तुम टेक भारी. २

जनम्या मरुधर विषे कुळचंद्र भानु,
करे ध्यान अंतर विषे ईश साधवानुं;
ॐकारनी अजब मस्ति महिं रमे छे,
अज्ञानता दूर करी शुभ शक्ति दे छे. ४

भारत मही भवी जीवो तुम गुण गावे,
आनंद मंगळ तणां पूर उभरावे;
तुम बाळ दास किंकर चरणे नमे छे,
कहे हर्षथी दीन तणां दुःखडां हरे छे. ६

ॐ

२९

राग खमाज-ताल दादरा

नाथ आप छो सनाथ, बाळ हुं भिखारी;
आंगणे खडो पूकारुं, अर्ज ल्यो स्वीकारी. नाथ १

शांतिसूरी ज्योतपुरी, झळहळी तुमारी;
नाद थयो विश्व मही, हृतने उगारी. नाथ २

आप तो अगाध अकळ, ज्ञानना भिकारी;
दीसत नहि विश्वमही, जोडली तुमारी. नाथ ३

मृत्युमां मुतेल्य रोग, रोगीना हणारी;
अभयदानथी उगारो, मागीओ अपारी. नाथ ४

भ्रमण टळ्युं भाग्य फळ्युं, पाप सहु पखाळी;
दीनदयाळ सुखवृषाळ, हो! कृपा तुमारी. नाथ ५

नाथ शक्ति अजब छे, हुं शुं वदुं तुमारी;
गुणनिधान मुक्तितान, मस्त ब्रह्मचारी. नाथ ६

देव मानु, ईष्ट मानु, ब्रह्मरुप धारी;
सर्वभासु आपमां छे, मूर्ती प्राण प्यारी. नाथ ७

शरण एक ताहरुं, विना बधु नकारी;
पळे पळे हुं जाप जपुं, आपने विचारी. नाथ ८

बाळ निराधार नाथ, आप ल्यो उगारी;
प्रार्थना करे छे दास, नमत वारवारी. नाथ ९

३०

राग-धन्य भाग्य अमारां आज पधार्या मोंघेरा मेमान

नमो, नमो, श्री शांतिसूरीश्वर प्राणप्रभु देवा;
परम कृपाळु गुरुवर ज्ञानी विश्व करे सेवा. नमो १

धन्य श्रीयोगीश्वरराया, नमे सहु रंक अने राया;
भारतमां ए महान रुषीवर आनंद घन जेवा. नमो-२

उगारे कंईक पतितोने, रीझावे राय अमीरोने;
अर्हम् पदनो जाप जपावे अम्रत फळ लेवा. नमो-३

अहिंसाना डंका वागे, सूणी सहु राजवीरो जागे;
दया धर्मनो पाठ पढावे अभय दान देवा. नमो-४

जगावे ज्योती अंतरमां, निरंतर ध्यान धरे घटमां;
किंकरदास कहे मुज अर्पो चरण कमळ सेवा. नमो–५

ॐ

३१

राग हरीगीत छंद

अहा! केवां पुन्य जाग्यां, शांतिनां चरणो मळ्यां,
आ देहनां सद्‌भाग्य जाग्यां, शांतिनां चरणो मळ्यां. १

फरतो हतो हुं शोधमां, सारा जगतने ढुंढ चूक्यो,
जीवन ज्योत झगावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. २

विश्वनी चारे दिशामां, घर घरे भजवाय छे,
सत्य पाठ पढावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ३

ॐकारनी धूनी अजब, ज्यां विश्व प्रेम वहाय छे,
दिव्य जळ उभरावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ४

गुरुदेवनी साची कृपा, नर भाग्यवंता मेळवे,
कृपा रस पीवडावनारां. शांतिनां चरणो मळ्यां. ५

आत्मने दीक्षीत करी, निज मस्तीमां म्हालता करे,
आत्मज्ञान सुहावनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां, ६

वैभव मळे लक्ष्मी मळे, गुणतत्त्व कदीये नव मळे,
आत्मने उद्धारनारां. शांतिनां चरणो मळ्यां. ७

माया अने ममता तजी, स्वार्थ विण भक्ति करो,
परम पंथे प्रेरनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ८

किंकर कहे भूलशो नहि, भक्ति सदा भगवंतनी,
बंधनोने टाळनारां, शांतिनां चरणो मळ्यां. ९

३२

राग हरीगीत छंद

शांतिसूरी गुरुश्री मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं;
तरण तारणश्री मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. १

अनंत जीव प्रतिपाळ सच्चे, योग लब्धी पद वडे:
आतम उद्धारक मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. २

जो आग जल रहीती जीवनमे, शांत उन्से हो गई;
अनाथका रक्षक मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ३

आनंद घन जेसें रुषी, आतम मस्तिमे रमे;
गुरुवर प्रभो ज्ञानी मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ४

ॐकारकी धूनी अजब, जहां रोममे चलती रहे;
अध्यात्म ज्ञानी वीर मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ५

मद्यपान मांसाहारसे, लख्खो मनुपको बुझवे;
उपकारी गुरुवरश्री मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ६

जहां वचन सिद्धि जळ वहे, उपदेशसे अंतर ठरे;
अम्रतभर्या सागर मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ७

भडवीर भारतके महा, नमते सकळ लोको अहा;
ईश साधनेवाले मीला फीर, जगत ढुंढके क्या करुं. ८

सत्यका पोकार कर, आलमको जाग्रत कर दीया;
कहे दास मुजको मील गया फोर, जगत ढुंढके क्या करुं. ९

३३

राग-हरीगीत-छंद

हे ! नाथग्रही अम हाथ पकडी सत्य मार्ग बतावजो,
तुम सत्यने निर्दोष जळनुं प्रेमपान करावजो;
अंतर विषे लावी दया तुम बाळ जाणी तारजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. १

जाग्या न घट अंतर विषे तुम बाळ जाणी जगाडजो,
विषयो न त्याग्या तन विषे ए वात साची जाणजो;
अंतर अमीरसथी भरेलुं नित्य पान करावजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. २

माया अने ममता भरेला मूढ बाळ बचावजो,
अज्ञान पींजरमां फसेला मानवो छोडावजो;
भक्ति नीती रसथी भरेलां भव्य पात्र जगाडजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. ३

दोषो थकी भरपूर अम उपर दया दर्शावजो,
जाण्या छतां रस्तो भूलेल्या मूर्ख अमने मानजो;
भवदुःखमां पीडीत थयेल्या दास जाणी उगारजो,
ए पतित पावन परम पुरुषोत्तम स्वरुप बतावजो. ४

३४

राग-गजल

जगतना सर्व संतोमां, गुरुश्री एक में जोया;
नमुं श्री शांतिविजयजी, अमोने पार उतारो. १

वहे ज्यां शांतीना सागर, अमीनी धार ज्यां वहे छे;
करुणा प्रेममय गुरुश्री, अमोने पार उतारो. २

गुरुश्री बाळ ब्रह्मचारी, खरी छे रत्ननी क्यारी;
वरी छे शांतीरुप यारी, अमोने पार उतारो. ३

आहिर कुळमां गुरु जनम्या, पितानुं कुळ दीपाव्युं;
धन्य वसुदेवी कुक्षीने, अमोने पार उतारो. ४

मणादर गाममां वसता, पिताश्री भीम तोलाजी;
तेहना पुत्र गुरुश्री, अमोने पार उतारो. ५

आनंदघनजी थया योगी, चीदानंदजी थया योगी;
गुरुश्री धर्मविजयजी, अमोने पार उतारो. ६

तपस्वी तिर्थविजयजी, गुरुश्री धर्मना चेला;
तेहना शिष्य गुरुश्री, अमोने पार उतारो. ७

गुरुश्री ज्ञानी ने ध्यानी, खरी छे रत्ननी खाणी;
ओम अर्हम् तणी वाणी, अमोने पार उतारो. ८

नमे छे दास करजोडी, हृदयथी प्रेमने जोडी;
जन्मना त्रासने तोडी, अमोने पार उतारो. ९

ॐ

३७

राग-धनाश्री

सदगुरु भक्ति करेवारे, सदगुरु भक्ति करेवा;
कष्ट आवे गमे तेवारे, सदगुरु भक्ति करेवा.
आधी उपाधी दूर तजी दो, अंतरथी करो सेवा;
हर्ष धरीने भक्ति करो तो, पामो शीवपुर मेवारे. स-१
मोह मायाने दूर करीने, मान प्रपंच हणेवा;
आतम शुद्ध करीने भजी लो, भव समुद्र तरेवारे. स-२
सदगुरुवरनी संगती करीने, गुरु गुण ध्यान धरेवा;
एहनो आपेल मंत्र उच्चरजो, हरदम जाप जपेवारे. स-३
अर्बुद गीरीवरमांहे मळशे, दिव्य महर्षि एवा;
शांतिसूरीश्वर नाम छे जेनुं, किंकरदास कहेवारे. स-४

३८

राग-धारो छे रे धारो छे

आवे छे रे आवे छे, एक अद्भुत योगी आवे छे;
आनंद आनंद वर्तावे छे, एक अद्भुत योगी आवे छे. १
अर्हंमनुं ध्यान धरावे छे, अविचळमां नाद बजावे छे;
आत्मने मंत्र सूणावे छे, एक अद्भुत योगी आवे छे. २
ए अनहद तान मचावे छे, अंतरमां ज्योत जगावे छे;
अविनाशी पद अजमावे छे, एक अद्भुत योगी आवे छे. ३

नयनोमां नाथ बतावे छे, नारायण रूप धरावे छे;
नरनारी मळी गुण गावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ४

मन मंदिरीयामां जागे छे, माया तनमनथी त्यागे छे;
मधुरां वचनामृत लागे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ५

शुभ शांती पाठ भणावे छे, साचो गुरुपंथ सूणावे छे;
समभाव जळे न्हवरावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ६

दुनिआनां दर्द दबावे छे, दील मांहे दया दर्शावे छे;
दीन किंकर गुरुगुण गावे छे, एक अदभूत योगी आवे छे. ७

३९

राग–खमाज

आहिर ज्ञाती जन्मेला एक योगीराजए;
आबू गीरीराजमां वसे छे योगीराजए. आहिर–१

आबू गीरीवरमां फरे, अनहद आनंद वरे;
नयनोमां नीर झरे एह योगीराजए. आहिर–२

भारतमां घोष करे, मरुधरमां वास करे;
शांतीमां स्नान करे एह योगीराजए. आहिर–३

प्रभुतानां द्रष्य खरे, संकटमां क्षाम्य धरे;
हींमतथी कर्म हरे एह योगीराजए. आहिर–४

रायरंक एकगणे, मद मोहमान हणे;
अंतरमां प्रेम भरे एह योगीराजए. आहिर–५

अर्हँम्नो नाद करे, ॐकार ध्यान धरे;
सत्यनीती मंत्रभणे एह योगीराजए. आहिर-६

प्रभुतानुं पान करे, परमातम रुप धरे;
आत्मामां ज्योत झरे एह योगीराजए. आहिर-७

साचुं साधुत्व झरे, भक्तिनां पात्र भरे;
विश्वमांय दृष्टि करे एह योगीराजए. आहिर-८

जातीनो भेद नहि, आनंद उभराय अहीं;
आश्रीतनी बांह ग्रही एह योगीराजए. आहिर-९

शांतिसूरी नाम सूणी, भव भयने दूर हणी;
किंकरबाळ नमन करे एह योगीराजने. आहिर-१०

ॐ

४०

राग-चंद्रप्रभुजी से ध्यानरे मोहे लागी लगनवा

सद्गुरु वरसे ध्यानरे मोहे लागी लगनवा.

लागी लगनवा छोडी न छूटे;
जबलग घटमें प्राण रे मोहे लागी लगनवा. सद्गुरु-१

माया ममतानो त्याग करीने;
धरता आतम ध्यान रे मोहे लागी लगनवा. सद्गुरु-२

ओम् अर्हम्नुं ध्यान करीने;
पामो अमर विमान रे मोहे लागी लगनवा. सद्गुरु-३

दिव्य महर्षि साचा मळ्या छे;
शांतिसूरी गुणवान रे मोहे लागी लगनवा. सद्गुरु-४

तन मन धन सहु अर्पण करीने;
ध्यावो गुरुनुं ध्यान रे मोहे लागी लगनवा. सद्गुरु-५

बाळक किंकरदास कहे छे;
उतारो भवपार रे मोहे लागी लगनवा. सद्गुरु-६

४१

राग-सुंदीर शामळीया

योगीश्वरराया, भवभयदूर भगाया;
योगीश्वरराया.

भारतभूमीमां जन्म धराया,
देश मरुधरने अपनाया;
जग प्रतिपाळ कहाया, योगीश्वरराया. १

भवसमुद्रमां भ्रमण कराया,
भमतां भमतां सद्गुरु पाया;
अंतर हर्ष भराया, योगीश्वरराया. २

पूरवपुन्य पसाये पाया,
शांतिसूरी योगीश्वर राया;
दर्शन करी हरखाया, योगीश्वरराया. ३

अर्हंम्नो नाद करे, ॐकार ध्यान धरे;
सत्यनीती मंत्रभणे एह योगीराजए. आहिर–६

प्रभुतानुं पान करे, परमातम रुप धरे;
आत्मामां ज्योत झरे एह योगीराजए. आहिर–७

साचुं साधुत्व झरे, भक्तिनां पात्र भरे;
विश्वमांय वृष्टि करे एह योगीराजए. आहिर–८

जातीनो भेद नहि, आनंद उभराय अहीं;
आश्रीतनी बांह्य ग्रही एह योगीराजए. आहिर–९

शांतिसूरी नाम सूणी, भव भयने दूर हणी;
किंकरबाळ नमन करे एह योगीराजने. आहिर–१०

४०

राग–चंद्रप्रभुजी से ध्यानरे मोहे लागी लगनवा

सदगुरु वरसे ध्यानरे मोहे लागी लगनवा.

लागी लगनवा छोडी न छुटे;
जबलग घटमें प्राण रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु–१

माया ममतानो त्याग करीने;
धरता आतम ध्यान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु–२

ओम् अर्हम्नुं ध्यान करीने;
पामो अमर विमान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु–३

दिव्य महर्षि साचा मळ्या छे;
शांतिसूरी गुणवान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु-४

तन मन धन सहु अर्पण करीने;
ध्यावो गुरुनुं ध्यान रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु-५

बाळक किंकरदास कहे छे;
उतारो भवपार रे मोहे लागी लगनवा. सदगुरु-६

४१

राग-सुंदीर शामळीया

योगीश्वरराया, भवभयदूर भगाया;
योगीश्वरराया.

भारतभूमीमां जन्म धराया,
देश मरुधरने अपनाया;
जग प्रतिपाळ कहाया, योगीश्वरराया. १

भवसमुद्रमां भ्रमण कराया,
भमतां भमतां सदगुरु पाया;
अंतर हर्ष भराया, योगीश्वरराया. २

पूरवपुन्य पसाये पाया,
शांतिसूरी योगीश्वर राया;
दर्शन करी हरखाया, योगीश्वरराया. ३

मन वचन गुप्तीने पाळे,
क्रोध कषायो मनथी बाळे;
आतमने अजवाळे, योगीश्वरराया. ४

दिव्य गुणो अंतरमां भरीया,
आतमज्ञान तणा छो दरीया;
परमातम पद वरीया. योगीश्वरराया. ५

बाळक आ निरधार तुमारो,
गुरु विण कोई नहि आधारो;
किंकर पार उतारो, योगीश्वराया. ६

४२

राग-भेखरे उतारो राजा भरथरी

बोलो रे बोलोरे योगी वालुडा,
क्यां थकी आवीया आपजी;
जन्म धर्यो रे कीया देशमां,
कोण मात ने तातजी. बोलोरे-१

धन्य, धन्य, मरुधरभूमि,
मणादर धन्य, धन्यजी;
धन्य, वसुदेवी मातने,
उपन्या दीनदयाळजी. बोलोरे-२

संवत ओगणीसंपीस्तालीसे,
महाशुद पांचम दीनजी;
दिव्य प्रभाते जन्मीया,
वर्त्यो जय जय कार जी. बोलोरे–३

आठ वरस मांहे नीसर्या,
छोड्यो घर संसारजी;
श्री धर्मगुरु पाटे रह्या,
करवा जगत उद्धारजी. बोलोरे–४

अर्बुदगिरीमां आवी वस्या,
सह्यां कष्ट अपारजी;
सोळ वरसे दीक्षा लीधी,
लाध्यो संयम भारजी. बोलोरे–५

गच्छ कदाग्रह छोडीने,
झाल्यो मुक्तिनो मार्गजी;
ओमूकार ध्यान आराधीने,
बन्या आप योगीराजजी. बोलोरे–६

शांतिसूरी तुम नाम छे,
शांती तणा दातारजी;
किंकरवाळनी विनति,
शरणे राखो दयाळजी. बोलोरे–७

ॐ

४३

राग-सखी स्वप्न मही मनमोहनमे

गुरु शांतिसूरी दर्शन करी ले,
शांती रसने उरमां भरी ले;
ए सदगुरुवरनुं ध्यान करीने,
आतम तुं उजळो करी ले. गुरु-१

जे सदगुरुवरनुं ध्यान करे,
ते भव सिंधुथी पार तरे;
कुमती कर्मोनो नाश करे,
अंतरमां अजव प्रकाश वरे. गुरु-२

शुभ शांत गुणी गंभीर अती,
ॐकार सूणी आलम नमती;
अवधूत अविनाशी पदथी,
तारे कंई आर्य अनार्य अती. गुरु-३

ॐ ह्रीँ अर्हम् ने जपवाया,
कंई नरनारीने अपनाया;
सदगुरु मारगने वतलाया,
किंकरवाळ गुरु गुण गाया. गुरु-४

४४

राग-हार हीरानो हैये मढावजो

गुरु शांतिसूरीजीने ध्यावजो,
शांतीरस उरमां सींचावजो. गुरु-१

आत्म ओजस तणां झरणां वहावजो,
अती आनंद उरमां भरावजो. गुरु-२

प्रेम पुष्प थाळ भरी हर्षे वधावजो,
सौ मोतीडाना चोक पूरावजो. गुरु-३

ॐ ह्रीँ अर्हंना जापने जपावजो,
नरनारी मळी गुण गावजो. गुरु-४

आत्म कल्याण केरी भावना दीपावजो,
सौ अंतरमां ज्योती जगावजो. गुरु-५

विश्व प्रेम सागरनुं पान पीवडावजो,
समभावजळे न्हवरावजो. गुरु-६

दिव्य महर्षि गुरुवर ए मानजो,
दिव्य अंजन नयनमां करावजो. गुरु-७

सदगुरु चरणोमां शीर सौ झुकावजो,
कष्ट आवे हींमत नवी हारजो. गुरु-८

किंकरवाळ केरी विनती स्वीकारजो,
गुरु दर्शनमां वहेला पधारजो. गुरु-९

४५

राग—माढ

शांती सींचनारा, सुखवरनारा, शांति प्रभो गुरुराज;
मरुधर वसनारा, दुःखहरनारा, अवधूत योगीराज. शां–१

राजराजेश्वर पदवी पाम्या, बामणवाडजी मांय;
गामगामना संघो आव्या, हर्ष धरी गुणगायरे. शां–२

आर्यअनार्य, घणा बुझाव्या, बुझव्या राजराजन;
अर्हम्पद अधिकार सूणावी, विश्व करो पावनरे. शां–३

आतम ज्ञानतणी छे धारा, अम्रतरस–पानार;
शांत सुधारस जळ झरनारा, किंकरबाळने ताररे. शां–४

४६

राग—महावीर तुमारी मनोहर मूर्ति जोई जोई दील हरखाय

गुरु शांतीसूरीश्वर स्वामी रे सहु वंदो हर्षथी;
वंदो हर्षथी, सहु वंदो हर्षथी. गुरु–१

गुरु शांतीनगरना वासी, मन, वच, गुप्ती छे दासी;
भय दुर्गती दूरे नासी रे सहु वंदो हर्षथी. गुरु–२

शरणांगतना छे स्वामी, नवखंडे कीर्ती जामी;
गुरु अधिक, अधिक, गुणगामी रे सहु वंदो हर्षथी. गुरु–३

नरनारी मळी गुण गावे, मोतीना चोक पुरावे;
मन वांच्छित फळने पावेरे सहु वंदो हर्षथी, गुरु–४

ॐकार मंत्र आराध्यो, दुनीआमां डंको वाग्यो;
कहे किंकर भवभय भाग्योरे सहु वंदो हर्षथी. गुरु-९

ॐ

४७

राग-गांधी तो आज हींदका एकशान बन गया

योगी तुं आज विश्वमे महान बन गया!
तेरा चरणमें आये वो अयशान बन गया.
तेरी धूनी जगतमें, चारो तरफ जली रही;
ए धून धखाने वाले धुरंधर तुं बन गया. योगी-१
ये विश्वका कल्याणकी, वीणा तुने बजाई;
एक विश्वका महान रुषिवर तुं बन गया. योगी-२
मीत्रो बना के सबको, तें मीत्रता बताया;
एक प्रेमका महान जादुगर तुं बन गया. योगी-३
रडता अबोल प्राणी, उन्को तुने हसाया;
भय मृत्युसे उगारनार ईष्ट बन गया. योगी-४
दुनीयामें घंटा तेरा, घर, घर, बजा रहाहे;
आलममें एक ईश्वरी अवतार बन गया. योगी-५
जातीका भेद तजके, सब आत्मसे पीछाण्या;
आ बाळदास किंकर एक शान बन गया. योगी-६

ॐ

४५

राग–माढ

शांती सींचनारा, सुखवरनारा, शांति प्रभो गुरुराज;
मरुधर वसनारा, दुःखहरनारा, अवधूत योगीराज. शां–१
राजराजेश्वर पदवी पाम्या, बामणवाडजी मांय;
गामगामना संघो आव्या, हर्ष धरी गुणगायरे. शां–२
आर्यअनार्य, घणा बुझाव्या, बुझव्या राजराजन;
अर्हम्पद अधिकार सूणावी, विश्व करो पावनरे. शां–३
आतम ज्ञानतणी छे धारा, अम्रतरस–पानार;
शांत सुधारस जळ झरनारा, किंकरबाळने ताररे. शां–४

४६

राग–महावीर तुमारी मनोहर मूर्ति जोई जोई दील हरखाय

गुरु शांतीसूरीश्वर स्वामी रे सहु वंदो हर्षथी;
वंदो हर्षथी, सहु वंदो हर्षथी. गुरु–१
गुरु शांतीनगरना वासी, मन, वच, गुप्ती छे दासी;
भय दुर्गती दूरे नासी रे सहु वंदो हर्षथी. गुरु–२
शरणांगतना छे स्वामी, नवखंडे कीर्ती जामी;
गुरु अधिक, अधिक, गुणगामी रे सहु वंदो हर्षथी. गुरु–३
नरनारी मळी गुण गावे, मोतीना चोक पुरावे;
मन वांच्छित फळने पावेरे सहु वंदो हर्षथी, गुरु–४

ॐकार मंत्र आराध्यो, दुनीआमां डंको वाग्यो;
कहे किंकर भवभय भाग्योरे सहु वंदो हर्षथी. गुरु-९

४७

राग-गांधी तो आज हींदका प्रकशान बन गया

योगी तुं आज विश्वमे महान बन गया!
तेरा चरणमें आये वो अयशान बन गया.
तेरी धूनी जगतमें, चारो तरफ जली रही;
ए धून धखाने वाले धुरंधर तुं बन गया. योगी-१
ये विश्वका कल्याणकी, वीणा तुने बजाई;
एक विश्वका महान रुषिवर तुं बन गया. योगी-२
मीत्रो बना के सबको, तें मीत्रता बताया;
एक प्रेमका महान जादुगर तुं बन गया. योगी-३
रडता अबोल प्राणी, उन्को तुने हसाया;
भय मृत्युसे उगारनार ईष्ट बन गया. योगी-४
दुनीयामें घंटा तेरा, घर, घर, बजा रहाहे;
आलममें एक ईश्वरी अवतार बन गया. योगी-५
जातीका भेद तजके, सब आत्मसे पीछाण्या;
आ बाळदास किंकर एक शान बन गया. योगी-६

४८

राग-उपरनो

गुरु शांतिसूरीश्वरजीने कोटीवार वंदना,
मरुधरनाए मुनींद्रने कोटीवार वंदना.
अध्यात्म, योगबळसे, आलमको तें जगाया;
मन, वचन, शुद्ध हृदये सहु करे वंदना. गुरु-१
बचपणमे योगीश्वरजी, जंगलतमे फीराया;
धन्य, धन्य, तोरीजननी सहु करे वंदना. गुरु-२
ॐ मंत्रसाधी, कंई रायने तेंतार्या;
धन्य, आहिर कुळभानु सहु करे वंदना. गुरु-३
महावीर पंथचाली, महावीर तुं गवायो;
दया धर्म धुरंधुर तुं सहु करे वंदना. गुरु-४
विश्व वंदनीय साधु, कळीयुगमें कहाया;
चरणोमे शीर नमावी, दास करे वंदना. गुरु-५

ॐ

४९

राग-शासनदेव दया कर हम पर

हे ! गुरुदेव दयाकर हमपर,
शेवकजाणी बचावेगा;

वाळको करे येही प्रार्थना,
भव समुद्रसे तारेंगा. हे! गुरु-१
विषय, कषायकीनींद भरेला,
उनको आप जगावेंगा;
काम क्रोधसे मुक्त करीने,
शांतीका पाठ पढावेंगा. हे! गुरु-२
पंच समीती, गुप्ती, आराधी,
प्रेमका पान करावेंगा;
आम अर्हँमूना ध्यानने धारी,
कर्मोंकु दूर हठावेंगा. हे! गुरु-३
विश्व प्रेमनी ज्योत जगावी,
आनंद आनंद पावेंगा;
किंकरवाळ कहे गुरुश्रीने,
मुक्तिका मार्ग दीखावेंगा. हे! गुरु-४

५०

राग-चालो गीरी सिद्धाचळ जईए
साचा सदगुरुजी मळीया,
वंधन कर्म तणां वळीयां, साचा सदगुरुजी मळीया. १
आतम ज्ञान तणी धारा, आगम गुण अती सारा;
अंतरध्यानमां रमनारा, साचा सदगुरुजी मळीया. २

शांत सुधारस पानारा, सात्वीक बुद्धि धरनारा;
साचो पंथ सूचवनारा, साचा सदगुरुजी मळीया. ३

समद्रष्टी तृष्णा त्यागी, सुमती सती केरा रागी;
सत्य सूणी आलम जागी, साचा सदगुरुजी मळीया. ४

अर्बुद गीरीवरमां आया, आनंद आनंद, उभराया;
शांती सरोवरमां नाह्या, साचा सदगुरुजी मळीया. ५

शांतिसूरीश्वर गुरु राया, आतम ज्ञानी कहेवाया;
किंकरवाळे गुण गाया, साचा सदगुरुजी मळीया. ६

ॐ

५१

राग-प्रभुजी जावुं पालीताणा शहेर के मन हरखे घणुं रे लोल

वंदू शांतिसूरी गुरुराय,
अनोपम नामने रे लोल;
जेहने भजतां छुटे फंद,
तरे भव पारने रे लोल. वंदू-१

जे हरी अक्षर ब्रह्म आधार,
पार कोई नवी लहे रे लोल;
जेने शेष सहस्त्र मुख गाय,
नीगम नेती कहुं रे लोल. वंदू-२

वर्णवु सुंदर रुप अनुप,
जुगल चरणे नमुं रे लोल;

व्हाला तुज चरण कमळनुं ध्यान,
धरुं अती हेतमां रे लोल. वंदू–३

गुरु अती कोमळ अरुण रसाळ,
चोरे छे चीत चालमां रे लोल;
किंकरबाळ नमे कर जोडी,
हृदय मांहे राखजो रे लोल. वंदू–४

ॐ

५२

राग–गरबानो

जागो, जागो रे सौ जागो, जागो,
शांतीसूरी भेटवाने आज सौ जागो, जागो.
अर्बुदगीरीमां आवी वस्या छे,
विषय, कषाय, नींद त्यागो त्यागो रे सौ जागो, जागो. १
आत्म मस्तीमां जे खीली रह्या छे,
राग द्वेष रीपु भय भागो भागो रे सौ जागो, जागो. २
मन वच कायाने वश करीने,
आत्म कल्याण हवे साधो साधो रे सौ जागो, जागो. ३
किंकरबाळ करे गुरुश्रीने विनती,
भक्ति नीतिमां मने राखो राखो रे सौ जागो, जागो. ४

ॐ

५३

राग-वैष्णव जन तो तेने कहीए

श्रावक जन तो तेने कहीए,
पर पीडा जे जाणे रे;
परदुःख माटे प्राण समर्पे,
मद मनमां नवी आणे रे. श्रावक-१

पर धनने पत्थर सम पेखे,
पर पोता सम देखे रे;
तुज मुज केरो भेद तजीने,
नीज सम प्राणी पेखेरे. श्रावक-२

सम द्रष्टीनुं सींचन करीने,
परने शांती पमाडे रे;
एह जीवननो ध्येयगणीने,
अंतर ज्योत जगाडे रे. श्रावक-३

जन शेवा ते नीजनी शेवा,
एह भींतरमां ध्यावे रे;
पर नींदा हृदये नवी आणे,
नीज दोषो अपनावे रे. श्रावक-४

पर स्त्रीने माता सम देखे,
विषय कषाय निवारे रे;

बाळक किंकरदास कहे छे,
भक्ति नीती उरधारे रे. श्रावक-५

ॐ

५४

राग-वंदो वंदो भविक जनज्ञानीने

वंदो, वंदो, गुरु श्री ज्ञानीने,
श्री धर्मविजयजी ध्यानीने. वंदो-१
मांडोलीमां प्रभु गुण गाया,
अंतरमां आनंद उभराया,
अवधूत, योगी, पद धारीने. वंदो-२
जेणे संयम शुद्धपणे पाळयुं,
कुळ, मात, पीतानुं अजवाळयुं;
दया धर्म तणा अधिकारीने. वंदो-३
असंख्य पशु उपकार कर्या,
महाघोर अभिग्रहव्रत उचर्या;
नवकार, महा, मंत्रधारीने. वंदो-४
रात दीन प्रभुनुं ध्यान धर्युं,
अमृत अमीरसनुं पान कर्युं;
दीन दुःखभंजन दातारीने. वंदो-५
श्रावण वद छठ दीन स्वर्ग थया,
नयनो अश्रु चोधार वहयां;
ए दिव्य, गुणी हीतकारीने. वंदो-६

सहु शरीर बळीने भष्म थयुं,
उपकरण उपरनुं साफ रह्युं;
ए ईश्वर रुप अवतारीने. वंदो-७

अग्नि प्रगटी कुदरत बळथी,
ध्वज पालखी ज्योती झघमघती,
किंकरनी अर्ज स्वीकारीने. वंदो-८

ॐ

५५

राग-रघुपती राम हृदयमां रहेजो रे

गुरुजी धर्म विजयजी ध्यावो रे,
दया धर्मने जेणे दीपाव्यो. गुरु-१

मांडोली तणा ए वासीरे,
मरुधरने बनावी काशीरे;
पुण्यवंत भूमिने प्रकाशी. गुरु-२

अरीहंत तणा अधिकारी रे,
मुनी पंच महाव्रत धारी रे;
पाम्या शीव सुखनी बलीहारी. गुरु-३

महा आतम ज्ञान आराध्युं रे,
नवकार तणुं फळ चाख्युं रे;
साधी साधना सर्व प्रकाश्युं. गुरु-४

नवकारनुं नाव चलाव्युं रे,
धन्य, धन्य, जीवन दीपाव्युं रे;
बाळकिंकर ने ए जणायुं. गुरु—५

ॐ

५६

शीखरीणी छंद

अहो ! दीव्य गुरुश्री, शीष नमावुं हर्ष धरीने;
पडुं पाय तुमारा, आश अर्पो प्रेम वरीने. १
अरेरे ! हुं डूब्यो, सदगुरुनुं भान भूलीने;
ग्रह्युं आजे शरणुं, स्हाय करजो बाळ गणीने. २
पडया छे जे जगमां, मूर्ख जीवडा अंध थईने;
नथी ए कंई समज्या, अंतर विषे ख्याल दईने. ३
भम्या भवसागरमां, मोह, मदिरा, पान पीने;
क्षमा रस नव पीधो, जीवन घटमां धीर थईने. ४
नम्या नहि सदगुरुने, मदअरी, माया तजीने;
गुरुवीण कुणतारे, मूर्ख जनने हस्त लईने. ५
अरेरे ! ओ ! गुरुश्री, अम गुन्हाओ माफ करजो;
नमे छे तुम किंकर, बाळनां सहु दुःख हरजो. ६

ॐ

५७

राग—वलीहारी वलीहारी वलीहारी

ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी,
गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी–१

आबू गीरीवरमां आया, आदी जीन दर्शन पाया,
मूर्ति शोभे छे मनोहारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी–२

दूर देशांतरथी आया, वंदन करीने हरखाया,
अधिक, अधिक, गुणधारी, गुरुशांतिसूरी बलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी–३

त्रण, रतन आपो, दीलनां सहु दुःखडां कापो,
समकीत केरा अधिकारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी–४

डूबता प्राणीने तारो, भवसागर पार उतारो,
अंतरथी मूकजो ना विसारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी–५

ॐकार पदने ध्यावो, अर्हमनो जाप जपावो,
जंगल, पहाड, गुफाधारी, गुरुशांतिसूरी वलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी–६

भक्त मंडळने तारो, अरजी आ आप स्वीकारो,
किंकरबाळने उगारी, गुरुशांतिसूरी बलीहारी;
आबूना वासी शरणमां राखजोजी. ब्रह्मचारी-७

५८

राग-मनमंदिर आवोरे कहुं एक वातलडी

गुरुशांतिसूरीश्वररे, दया दीलमांहे धरो;
तुमे दिव्य महर्षिरे, करुणा दृष्टि करो. गुरु-१
दया धर्मना धोरीरे, अमृतनुं पान करो;
मोह मिथ्या मारीरे, अलखमां वास करो. गुरु-२
क्रोधमान निवारीरे, कुमतीनो त्याग करो;
अज्ञानी उंघेलाने, गुरु गुणवान करो. गुरु-३
कर्मो सहु कापीने, अर्हमनुं ध्यान करो;
ॐकार आराधीने, अजब आनंद वरो. गुरु-४
क्षमा धैर्य ने धारीरे, सेवकने सहाय करो;
तुम किंकर विनवेरे, प्रभो उद्धार करो. गुरु-५

५९

राग-शार्दूलविक्रडीत छंद

शांतिसूरी गुरुराय विश्वयोगी कष्टो सदा छेदजो,
साचा विश्वमहीं रुपिवर प्रभो बुद्धि महा अर्पजो;

प्राणांते हिंमत कदी नव तजुं संतोष सींचावजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. १
भक्ति रस भरपुर अंतर भरी आनंद उभरावजो,
मंगलमय वाणी वदी मन विषे माधुर्यता पूरजो;
नयनोना तेजस्वी चक्रवळथी अंधाकृति टाळजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. २
स्नेही सज्जन सर्व सुखमयी बनी भ्रांती दूरे भागजो,
साचा प्रेमतणा सरोवर महीं सौन्दर्य उभरावजो;
सृष्टीना शृंगार आभूषणथी दुर्गंधता टाळजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. ३
भारतना भगीरथ विभुश्वर रुषि आंत्रीत्व रेडावजो,
भक्तोने भवदुःखथी दूर करी दाळीद्रता हारजो;
बाळक किंकरदासना जीवनमां सत्यार्थता पूरजो,
अर्पो आशीष प्रेमथी सुखतणी शांती अति प्रेरजो. ४

ॐ

६०

राग-राधाकृष्णा विना बीजुं बोलमा

झीलजो, झीलजो, झीलजोरे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो.
नरनारी सहु हर्ष मळीने,
कमळ खीले तेम खीलजोरे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो-१

विश्वप्रेम केरो ज्यां सागर भर्यो छे,
स्नान करी अंतर पखाळजो रे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो–२

आत्म आनंद केरां झरणां वह्यां छे,
तेह पी तृषाने छीपावजो रे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो–३

शांती सागरमां स्नान करीने,
ज्ञान सागरमां म्हालजो रे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो–४

भव भय दुःखथी दूर थवाने,
ॐकार ज्योति जगावजो रे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो–५

शांतिसूरीश्वर साचा मळ्या छे,
मस्त फकिर ए जाणजो रे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो–६

शांतिचरणवाळ किंकर कहे छे,
जय जयकार वर्तावजो रे,
सहु अमृत नीरमां झीलजो. झीलजो–७

ॐ

६१

राग माढ

गुरुराज जगत शीरताज, भव डूबतुं तारो झाझ;
कहावो अवधूत योगीराज,
दुःखीनी भीड भागो महाराज.

आत्म कमळ खीली रह्युं, मुखडुं चंद्र समान;
भारतमां भडवीर तुं, ब्रह्मचारी बळवान. गुरु-१

धन्य आहिर अवतारने, जनम्या जग कीरतार;
सूत्र अहिंसा आदर्युं, पर पीडा हरनार. गुरु-२

मरुधर तारा आंगणे, उपन्यो पुनम चंद;
वसंतपंचमी जन्मीयो, खील्यो जेम वसंत. गुरु-३

ज्ञानी ध्यानी संयमी, गुरुवरमां गंभीर;
आतम पंथ दीपावीयो, साधुमां शूरवीर. गुरु-४

विश्वेश्वर भगीरथ रुषि, दीन दातार कहाय;
भूपती शीर नमावता, सूर्य समा झळकाय. गुरु-५

भक्तजनोनी विनति, अंतर हर्ष अपार;
बाळक किंकरदासने, उतारो भवपार. गुरु-७

६२

राग-माढ

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

तुज विना मम जीवनमां, नथी कोई जगमांय,

प्राण प्रभु छो विश्वना, करजो म्हारी स्हाय;

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

मीरां बनी सतयुगमां, भक्ति अपरंपार,

गुरु गिरधरना नामथी, विष अमी थानार;

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

कळीयुग भासे कारमो, विषम समय कहेवाय,

प्रपंचना पासा मही, भक्ति तुज वहाय;

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

कर्म तणी आंधी चढी, शाम घटा देखाय,

कीकीआरी दुःखनी थई, नयन नीर उभराय;

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

मृत्यु कष्टथी ना डरे, रोम रोम खरडाय,

अन्न वस्त्र विण टळवळे, हाम कदी न तजाय;

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

हरिण्यामी सूत्रो शीखे, गुरुगुरु जाप जपाय,

पळपळ एमां मस्त रहे, ए गुरु भक्त कहाय;

मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

अहो! प्रभु हुं शुं करुं, विश्व चरण रज वाळ,
शांति प्रभो शांति प्रभो, मोंघी मननी माळ;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

मद माया ने मोहमां, जीवन कदी न फसाय;
लघु पाठ नित्ये पढु, विश्व प्रेम वरसाय,
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

निराधार छुं नाथ हुं, अधम अने अज्ञान,
किंकर अर्ज स्वीकारजो, दीनबंधु भगवान;
मारा केसरभीना कान हो, वेलडीए चढजो.

६३

राग-देश

नाचे रसभीनो अलबेलो अदभूत तानमां रे;
अरीहंत ध्यानमां रे. नाचे.

नयनोमां ए नाच करे छे, नाथ निरंजनने जगवे छे;
नीरखी नूर झळके छे एना ज्ञानमां रे. नाचे-१

पंखी वनोवन उडी फरे छे, एह जंगलमां वास करे छे;
प्रेम पुष्पनी माळ वरे छे ध्यानमां रे. नाचे-२

दुर्गंधताने दूर करे छे, शांती थकी सहु कर्म हरे छे;
क्षमा धैर्यने धारी रहे गुलतानमां रे. नाचे-३

विश्वप्रेमनुं जळ पीवडावे, आनंद, आनंद उरमां ध्यावे;
वाघ सिंह पशु शीर नमावे सानमांरे. नाचे-४

अनहद तान मचावे वनमां, अर्हम्ने प्रगटावे तनमां;
अवधूत योगीश्वर पदवीना पानमांरे. नाचे-५

अर्बुद गीरीवरमां विचरे छे, शांतिसूरीश्वर नाम धरे छे;
किंकरबाळ नमे छे एना चर्णमां रे. नाचे-६

६४

राग-जीनराजा ताजामल्ली वीराजे भोयणी गाममें.

योगीश्वर राया आप विराजो मरुदेशमां.

देश देशना भक्तो आवे, हर्षधरी गुण गावे;
अर्हम्पद अधिकार सूणीने, मनवांछीत फळ पावेरे. यो-१

आर्यअनार्य गुणीजन आवे, अर्हम्थी अपनावो;
विश्व प्रेमना परम प्रकाशे, अदभूत बळ बतलावोरे. यो-२

अनंत जीव प्रतिपाळ कहावो, योग लब्धी पद पावो;
एम अनंता [illegible]ा रीझवी, अंतर ज्योत जगावोरे. यो-३

भक्ति [illegible]तीनो पाठ पढावो, सदगुरु पंथ सूणावो;
अभयदान पशुओने अर्पी, धर्म ध्वजा फरकावोरे. यो-४

संवत ओगणीस साल नेवासी, चैत्र वदी त्रीज पाया;
परम कृपाळु शांतिसूरीना, किंकरे गुरुगुण गायारे. यो-५

६५

राग-आशावरी

नमुं श्री शांतिगुरु चरणे, दिव्य रुषिवरने. नमु-१

पंचमआरो महादुःखीआरो, विषम समय कहेवायो;
वीसमी सदीनी घोर घटामां, साचो तुं भजवायो. नमु २

सद्गुरु मळवा स्हेल न समजो, अंतर धून धखावे;
मृत्यु तणी परवा न करे तो, गुरुगुणने ए पावे. नमु ३

मायाने ममतानी खातर, मूढ जनो कंई मरता;
मोहमतीमां भान भूलीने, आतम हीरने हणता. नमु ४

परम कृपाळु परम प्रतापी, परम पुरुष कहेवाया;
पर आतम उपकारी गुरुश्री, घरघर नाम गवाया. नमु ५

विश्वप्रेमनी अजब विभूति, घटघटमां पथराया;
परम कृपाळु गुरुवर साचा, किंकरे गुरु गुण गाया. नमु ६

*

६६

राग-धरमी लोकोनां टोळां उतर्यां

वीरा दर्शन करवाने वहेला आवजो,
आबू गीरीमां इंद्रपुरी देखाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. १

अजब ! ज्योती जागी छे गुरु राजमां,
चांदलीओ त्यां पूर्ण पणे चळकाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. २

जश, जगनां, मानव इहां आवतां,
डंको वाग्यो देश मही कहेवाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ३

धन्य, धन्य, भारत त्हारा आंगणे,
मरुभूमीनां पुन्य अति कहेवाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ४

सोळ वरसे संयम एणे आदर्युं;
दुनिआदारी छोडी दीधी एणीवार रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ६

नयन नीरखी नरनार अति म्हालतां,
अमृत केरो कूप फळ्यो छे आज रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ६

अगम ज्ञानी गुरुराज सहु वंदता,
आनंद, आनंद, अंतरमां उभरायरे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ७

गुरु झघमघता सूर्य समा दीसता,
भाल मही शशी तेज तणो नहि पार रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ८

गुरुवर छे साची विभूती विश्वनी,
जनम्या छे ए विश्व जगावण हार रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ९

धन्य, धन्य, देवी मरुधर देशनी,
दिव्य विभूति भेट धरी जगमांय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. १०

आबू शिखरे आसन झमाव्युं पहाडमां,
चोथो आरो वर्त्यो छे देखाय रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. ११

कहे किंकरवाळ सहु सुणजो,
उतरीयो ए ईश्वरनो अवतार रे;
शांतिसूरीनां दर्शन करवाने वहेला आवजो. १२

ॐ

६७

राग भीमपलासी-त्रिताल

(भोगीलाल पानाचंद)

: १ :

ए जगमांही अद्भूत योगी,
एनी ज्योति झघमग झघमघती,

ए त्यागी तपस्वी वैरागी,
एनी आंखलडी करुणा भीनी....१

एना वचन सुधा रसथी भरीयां,
जनगणने उपकारे हरीयां,
एनां नयन अमीरसथी भरीयां,
पापीनां पाप जलन करीयां....२

एने भेद नथी उंच के नीचनो,
ए रसियो छे आत्मिक जननो,
एनो मार्ग अनुपम न्यारो छे,
आत्मिक जन एने प्यारो छे....३

ए जगनो साचो उपकारी,
एनी कीर्ति करे आलम सारी;
ए मस्त सदा आत्मिक रंगे,
नहि परवा एने जग संगे....४

अर्बुदगिरि शिखरे विराजे छे,
शांतिसूरि नामे गाजे छे;
ओ! जगमांहे अदभूत योगी!,
करे वंदन तुज बाळक भोगी...,५

ॐ

६८

राग मालकंस-ताल त्रिताल

: २ :

मोरी लागी लगन गुरुकीर्तनकी....टेक०

गुरुकीर्तन वीन कुछ नहिं भावे,
आत्मिक ज्योत प्रकाशनकी....मोरी० १

भवसागर अंधेरा घहेरा,
गुरु दीपकसे तरननकी....मोरी० २

भोगीदीपक गुरु शांतिसूरीश्वर,
व्याकुलता तुज दर्शनकी....मोरी० ३

ॐ

६९

राग मिश्र भीमपलासी-त्रिताल

: ३ :

ए दीन दयाळ कृपा सींधो,
हरजन के तारनहार गुरु;

मझधारमें आय फसी नैया,
करो भवसागरसे पार. गुरु....१

जळ अपार उलटी धार वहे,
विपरीत पवन दिन रजनी चले;

जग लागे फिरता जीव कांपे,
तुम विन करे कोन सहाय गुरु....२

चहु ओर अंधेरा न दीश सूझे,
मोरी नाव भमरसे केसे बचे;

तोरी योगकी ज्योत दया जो करे,
मिल जाए ओर किनार गुरु...३
पर्वतको जो चाहो तो राई करो,
ओर राईको तुम पर्वत करदो;
कोई काम कठिनहि नहि तुमको,
हो अगम्म अपार जगतमे गुरु....४
विपत विदारक सब जग के,
ओर अंतर्यामी हरजन के;
ये भोगीकी अरज हृदय धरके,
करो भक्तका बेडा पार गुरु....५

ॐ

७०

राग भैरवी-धुमाळी

: ४ :

पायो पायो में हे गुरुवरजी,
तुम दर्शन सुखकार....टेक०
देख लीया अब जगहि सारा,
मिला न को आधार;
करुणासागर अब मत छोडो,
मेरे तुम आधार.... पायो० १

भव अंधेरा सागर घहेरा,
नैया पडी मझधार;
तुम विन नाथ कोन निर्बळकी,
नैया खेवनहार.... पायो० २
शुभ आशिष सब जगको देकर,
करो भला सब जगका;
भोगी हम तुम गुन गावेंगे,
शांतिसूरी दातार.... पायो० ३

ॐ

७१

राग काफी ताल दीपचंदी

: ५ :

आंखलडी मनोहारी, दिव्य महर्षि तमारी....टेक०
दर्शन काजे आजे हुं आव्यो,
मुखडुं दीठुं मनोहारी;
भाल विशाळ निरंतर शोभे,
चांदल चमके गगनरी....१
राग द्वेष दिसे न लगारे,
मोह माया दुःखहारी;

अनुपम मार्ग अचल तें साध्यो,
भटकुं हुं भवमां भिखारी....२
अंश दिसेना तमारो मुजमां,
कीर्ति करुं शुं तमारी;
चरणकमलनी सेवा चाहुं,
शांतिविजय दुःखहारी....३
सदगुरु प्रितम मेरे दिल वसीयो,
प्रितम विण जग खारी;
भोगी भ्रमर दिल वास तुमारी,
रहो अविचळ सुखकारी ...४

ॐ

७२

राग–प्रीतमजी तेडां मोकले

गुरु शांतिसूरीश्वर, ज्ञानी धुरंधर, डंको थयो वधा विश्वमां. टेक
देशदेशोथी भक्तजनो आवे, एना दर्शनथी आनंद पावे;
अजव अंजन नयनमां लगावे गुरु श्री, डंको थयो वधा विश्वमां. १
धन्य भारतनां भाग्य खीलायां, मोह मायाने मानने हणायां;
नयन वाणोथी क्रोधने हराया गुरुश्री, डंको थयो वधा विश्वमां. २
एने कळीयुगमां ज्योती झघाया, मरुधरना मुनींद्र कहेवाया;
वचन सिद्धीना जळने वहाया गुरुश्री, डंको थयो वधा विश्वमां. ३

एनी आशीषथी रोग दूर थावे, काळ फांसी फसेला बचावे;
परम ज्ञानीने ध्यानी कहावे गुरुश्री, डंको थयो बधा विश्वमां. ४

कदी जातीनो भेद नहि लावे, रंक राजाने एकरुप ध्यावे;
भक्ति नीतीना पंथे चढावे गुरुश्री, डंको थयो बधा विश्वमां. ५

ध्यान ॐकार मंत्रनुं जपावे, कंई पतितोने पावन बनावे;
दास किंकर गुरु गुण गावे गुरुश्री, डंको थयो बधा विश्वमां. ६

ॐ

७३

राग-कल्याण

सकल जगतना तात गुरुश्री, नमीए तमने लीन थईने.
हम अपराध क्षमा रे गुरु करजो, रहेम नजर अम उपर वसजो.
दोषो हमारा सहु रे दूर टळजो, भक्ति नीतीमां लीन मुने करजो.
वैर विरोधो सहु रे दूर टळजो, प्रेम फुवारो हृदय मांहे उडजो.
आत्म मस्तिमां लय मुने करजो, ध्यान थकी कर्मो सहु हरजो.
किंकर पर करुणा रे गुरु करजो, भक्ति नीतीनी आशीष मुने वरजा.

ॐ

७४

राग-वाजां वाग्यां रे वाजां वागीयां

वाजां वाग्यां सोहम वाजां वागीयां;
ए तो वाग्यां मरुधर मांय, सोहम वाजां वागीयां. १

एनो नाद थयो बधा विश्वमां;
वाग्यां शांतिसूरी दरबार, सोहम वाजां वागीयां. २

प्रभो ! शांतिसूरीश्वर भेटीया;
भेटया ज्ञानी गुरु महाराज, सोहम वाजां वागीयां. ३

अमे थाळ भरी प्रेम पुष्पनो;
हरषे वांद्या गुरुराज, सोहम वाजां वागीयां. ४

सहु भक्तो अहीं भेगा थया;
कंई आनंद उरमां न माय, सोहम वाजां वागीयां. ५

गुरु साचो अनुपम दीवडो;
आखुं विश्व जगावणहार, सोहम वाजां वागीयां. ६

जाणे इंद्र अति गुणी उतर्यो;
धन्य, धन्य, आहिर अवतार, सोहम वाजां वागीयां. ७

योगी अवधूत साधी साधना;
साधी तारे घणां नरनार, सोहम वाजां वागीयां. ८

दिव्य ज्योत नयन चळकी रह्यां;
शीव सुंदरीना वरनार, सोहम वाजां वागीयां. ९

सूणी किंकरवाळ नमन करे;
गुरु भव भयना हरनार, सोहम वाजां वागीयां. १०

*

७५

छंद-भुजंगी

कृपानाथ साचा वसे दीन स्वामी,
पडो पाय सहु चर्णमां शीर नामी;
मळे पुण्यना योगथी ईष्ट जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. १

ऋषिवर मुनीवर थया पूर्वमां जे,
पूजाया प्रभोरुप थई विश्वमां ते;
दीसे एह सर्वे तणा रुप जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. २

भयानक, गीरीवन, विषे ए फरे छे,
निरंतर, धूनी ध्याननी त्यां जळे छे;
रहे आत्म ध्यानी सदामस्त जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ३

तजी मृत्यु भयने सदा मोज माणे,
निराशा कदापी नहि उर आणे;
बन्या साधको पूर्वमां एह जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ४

घूमे पहाड आबु गीरीवर गजावे,
निरंतर, धूनी ॐनी ए धखावे;

थया मोक्ष गामी जीवो एह जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ५

अति गुण एना लखे अंत नावे,
पुरा पंडितो पण नहि पार पावे;
निहाळो सदा ध्यानी अबधूत जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ६

सदा विश्व कल्याणना भाव भावे,
कदापी नहि उरमां भेद लावे;
रहे मस्त आनंद घन रुप जवा,
दीठो आज शान्तिसूरीराज एवा. ७

अभय दान आपी पशुने उगारे,
दया धर्मना मंत्रथी जीव तारे;
रीझे राजवीरो करे चर्ण शेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ८

कहे दास किंकर पुरां भाग्य जेनां,
हशे तेह नर पामशे गुण एना;
दीसे दिव्य दर्शन रुपि ब्रह्म जेवा,
दीठा आज शान्तिसूरीराज एवा. ९

७६

राग ओधवजी संदेशो कहेजो म्हारा श्यामने

आतम तारक गुरुवर श्री साचा मळया,
परम प्रतापी पुरण कृपा दातार जो;
पूरव पुन्य पसाये साचा सांपडया,
मस्तक मूक्युं शांतिचरणमां नाथजो. आतम १

धन्य मरुधर देश मणादर गामने,
धन्य आहिर कुळ उपन्या तारणहारजो;
अवतारी नर कहेवाया आ विश्वमां,
नाथ नीरंजन जीवदया प्रतिपाळजो. आतम २

किशोरवयमां गृहस्थाश्रमथी नीसर्या,
सोळ वरसमां साधुपद लेवायजो;
मार्ग वर्यो अंतरमां आतम ज्ञाननो,
परम पुरुषनो पंथ लीधो गुरुराजजो. आतम ३

ध्यान अरे साध्युं तुं बामणवाडमां,
बारी उपरथी पटकाया ततकाळजो;
मस्तक तूटयुं धारा छूटी लोहीनी,
तोय तजी नहि धीर गुरु गुणवानजो. आतम ४

गाम अजारी मारकुंडेश्वरमां रह्या,
सरस्वती देवीनी पुरण स्हायजो;

कवीवर्य पंडीतो विद्या साधता,
साधक जननां सफळ थयां त्यां काजजो. आतम ५

परआतम उपकारी सदगुरु वर प्रभो,
अमर कर्युं छे मातपीतानुं नामजो;
तरणतारण दुःखनीवारण दोहीला,
दीनबंधु दीन दानेश्वर दातारजो. आतम ६

पशु पोकार सूणीने जगवे राजवी,
दया धर्मथी बुझवे हींसक लोकजो;
आलमने रीझववा साध्या ॐने,
रोमे रोममां अर्हम्‌नो जय नादजो. आतम ७

अभयदान अर्पे अती मुंगा प्राणीने,
विजय अहींसा ध्वज फरकावे विश्वजो;
विश्व प्रेमथी पावन करता सर्वने,
आशीष आपे भक्ति नीती बळ वाधजो. आतम ८

एकीका वीचरता वळी शमशानमां,
वाघ सिंह पशु सर्व निहाळे एक जो;
ध्यान निरंतर निर्भय थईने साधता,
मळीयो जाणे परम मित्रनो योगजो. आतम ९

निर्मोहक अवीनाशी रुपमां विचरे,
अकळ अरुपी ब्रह्मदशा देखायजो;

मूढमती जन कंई नहि भासे अंतरे,
नीरखवुं ए परम पुन्यनो योगजो. आतम १०

बार वरस तप घोर परीग्रह आकरा,
अवधि कष्टो सहन कर्यां गुरुराजजो;
माया ने ममताने बाळयां देहथी,
ध्यान बळेथी करीयां सर्वे खाखजो. आतम ११

घोर विकट वन वृक्षोने गीरीवर फर्या,
रोग शोग सहु भाग्यां छे ओ ! नाथजो;
परमातम पद परम प्रभुमां लय थया,
रात दीवस ने पळ पळ चाले ध्यानजो. आतम १२

परम पद प्राप्तिनी फरता शोधमां,
निश्चय करीयो मुक्ति तणो नीरधारजो;
चंद्र ललाटे चळक्यो छे महा तेजथी,
दर्शन करतां नासे सघळां पापजो. आतम १३

एक अनेक अनेरा रूपमां भासता,
समय समयमां भीन्न रुपे देखायजो;
अदभूत बळनी ज्योति जागी आत्ममां,
आध्यात्मीकनो पाम्या साचो योगजो. आतम १४

एह तत्वनी भीक्षा हुं मागी रह्यो,
गजा वगरनो केम उठावुं भारजो;

परम कृपा जो प्रगटे अंतर आपनी;
तो हुं पामुं आपतणो संयोग जो. आतम १५

भव भ्रमणानी खाई मही हुं आथड्यो,
आप विना प्रभु कोण बतावे पंथजो;
शांत सुधा नीर नीत्य मुखे वहेतुं रहे,
स्नान करी हुं निर्मळ करतो देहजो. आतम १६

भान भूली भटकायो जगमां चोदीशे,
अनेक भवना पुन्ये पाम्यो योगजो;
तोपण दोषीत बाळक छुं प्रभु आपनो,
क्षाम्य करो ओ! अलबेला आधारजो. आतम १७

बाळक छुं नीरधार गुरुजी आपनो,
दया वृषावी नाथ करो भव पारजो;
विरहतणा दुःखथी हुं अश्रु सारतो,
हवे नथी स्हेवातो आप वियोगजो. आतम १८

अभय अगोचरशास्वत सुखनी शोधमां,
भमतां भमतां आव्यो छुं ओ! नाथ जो;
करगरतो विनवे छे बाळक आपनो,
दीनदातारी दया वृपावो नाथ जो. आतम १९

मूर्ति में स्थापी अंतरमां आपनी,
आप विना नहि भासु तारणहार जो;

रटन करुं हुं निशदीन घटमां आपनुं,
शांतिसूरीश्वर साचो छे आधार जो. २०

परम कृपाळु, परम दयाळु सांभळो,
अनाथ जनने नोंधाराना तात जो;
दीन दुःखभंजन विनती सूणजो माहरी,
किंकर बाळने भवसागरथी तारजो. २१

७७

गुरुपूर्णिमा प्रसंगे

राग—गझल

अषाडी पूर्णिमा आजे, गुरुदर्शन तणा काजे;
मूको मस्तक कृपासिंधु, प्रभो! शांति गुरुवरजी. १

नवीरा राजवी आवो, अति आनंद उलटावो;
गुरुपद अंतरे ध्यावो, प्रभो! शांति गुरुवरजी. २

पधारो सर्व भ्राताओ, न जाणो भेद अंतरमां;
विभूति विश्वनी साची, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ३

गुरुने मानवावाळा, कदापि नव भूले भाई;
निशानी मुक्तिनी साची, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ४

अजब मस्ति खीली आजे, अखंडानंद वर्ते छे;
धूनी ॐकारनी जागी, प्रभो! शांति गुरुवरजी. ५

दिपक आजे झग्यो एनो, अरे ! घर घर विषे भाई;
झळकती विश्वमां ज्योती, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. ६
दिपावी ज्ञात आहिरनी, पितानुं कुळ तार्यु छे;
मरुधरना महायोगी, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. ७
कमळ करुणा खीलाव्युं छे, भरी छे वास अंतरमां;
बगीचो पुष्पनो साचो, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. ८
बळेलो कर्मथी मानव, पूकारे त्राय भीतरथी;
शीतळ छाया अहो त्हारी, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. ९
तृषातुरने मळे शांती, छीपे छे प्यास अंतरनी;
दुःखीनो आशरो साचो, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. १०
वहे मुखथी सदा अमृत, करे संतुष्ठ आलमने;
निहाळे विश्व समभावे, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. ११
जगतनी चोतरफ जोतां, घटा घनघोर भासे छे;
नथी त्हारा विना रस्तो, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. १२
दयाकर ! ओ दयासिंधु, शरण त्हारुं हवे साचुं;
स्वीकारो अर्ज किंकरनी, प्रभो ! शांति गुरुवरजी. १३

ॐ

७८

जन्म जयंति

राग-गुणवंती गुजरात अमारी गुणवंती गुजरात

आज ! थयो उल्लास प्रभाते जयजयकार गवाय !
प्रभो ! ए दिव्यपुरुष सरजाय ! १

वसंतरुतु दवली देखाय, अति महातमय एनुं कहेवाय;
वसंतनी अदभूत घटनाथी पार कदी न पमाय!
रुतुमां श्रेष्ट वसंत कहाय! २

वसंत रुतुमां पान खराय. लीला पानोथी वृक्ष भराय;
वसंतनी रमणीय छायामां दीव्य स्वरुप झळकाय!
पूरो आनंद इहां प्रगटाय! ३

घटा घनघोर दीसे वनमां, खीले मस्ती रुषिवर तनमां;
मोर, बपैयां, पीयु पीयु वदतां मधुर स्वरे टहुकाय!
पवन मधरो, मधरो फरकाय! ४

महा सुद पांचम दीन उजवाय,
ओगणीस पीस्तालीस साल गवाय;
वसंत पंचमी दिव्य प्रभाते जन्म थयो गुरुराय!
आहिरनां पुन्य अति कहेवाय! ५

पीता तोलाना रत्न कहाय, वसुदेवी कुक्षी दीपवाय;
गाम मणादर नगरे शुभ मुहुरतमां नाम पडाय!
वदे सहु सगतोजी गुरुराय! ६

प्रभो जंगलमां ढोर चराय, ललाटे चंद्र अहो! चळकाय;
लक्षणवंता महान! पुरुष ए दिव्य महर्षि थाय!
गुरुना विश्व सहु गुण गाय! ७

युवानवये संसार तजाय, अवस्था गभरु बाळ कहाय;
आठ वरसमां घरथी नीसर्या जंगल पहाड फराय!
अनुभवमां परीपक्व थवाय! ८

अहोहो! दीक्षाव्रत लेवाय, जीवनमां ज्योत खरी झळकाय;
सोळ वरसमां संयम लीधुं शांतिविजय गुरुराय!
तपस्वीना ए शिष्य कहाय! ९

प्रभो! श्री धर्मविजयराया, महान धुरंधर कहेवाया;
एह तणा पट्टधर गुरुवर श्री साचा संत गवाय!
प्रभु महावीरनो पंथ दीपाय! १०

तपस्या घोर! करी गुरुराय, अभीग्रह कष्ट घणां सहेवाय;
बार वरस जंगल पहाडोमां मौनपणे विचराय!
सूणीने अश्रु नयन उभराय! ११

रुडो! अर्बुदगीरीराज गवाय, रुषीयोगीनुं स्थान कहाय;
अर्बुदगीरीमां ध्यान करीने योगीश्वर पद पाय!
कहाया शांतिसूरीश्वरराय! १२

चरणमां भूपती शीर नमाय, जगत सहु एकरुपे नीरखाय;
विश्वप्रेमना परम प्रकाशे देश विदेश जगाय!
प्रभो! आलममां डंको थाय! १३

असंख्य जनो हिंसक बुझवाय, मदिरा पान सहु छोडाय;
अनहद शक्ति नाथ! तमारी वर्णन केम कराय!
वचनसिद्धि मुखथी म्हेकाय! १४

अहिंसानां सूत्रो भजवाय, अबोलानां अंतर रीझवाय।
भक्तमंडळ सहु हर्षे गावे किंकरदास नमाय।
महर्षि ए साचा कहेवाय। १५

७९

जन्मजयंति

राग-गझल

जयंती आज गुरुवरनी, वीराओ हर्षथी उजवो;
नमावी शीश चरणोमां, त्हमारा आत्मने रीझवो. १

अगम अद्‌भूत बळ ज्योती, प्रकाशी विश्वमां आजे;
करी अंजन नयन मांहे, त्हमारा आत्मने रीझवो. २

गीरीवरने शिखर मांहे, प्रभो ! आसन जमाव्युं छे;
गुणो एना विचारीने, त्हमारा आत्मने रीझवो. ३

अजर अविनाशी पद काजे, अहा ! सर्वस्व अर्प्युं छे;
जीवनमां ज्योत प्रगटावी, त्हमारा आत्मने रीझवो. ४

गुफाओने खीणो मांहे, सदा निर्भयपणे फरता;
दिपक घरघर झग्यो आजे, त्हमारा आत्मने रीझवो. ५

दुःखोना डुंगरो तोडी, अजब ! मस्ती खीलावी छे;
अरे ए वासना म्हेंकी, त्हमारा आत्मने रीझवो. ६

मरुधर देशना महाडे, अरे ! ओ ! भारती माता;
धरी छे भेट अणमोली, त्हमारा आत्मने रीझवो. ७

मणादर गाममां वसता, पीताश्री भीमतोलाजी;
पुत्र श्री नाम सगतोजी, त्हमारा आत्मने रीझवो. ८

उजाळी कुंख मातानी, वसुदेवी! वसुदेवी!
धन्य आहिर ज्ञातीने, त्हमारा आत्मने रीझवो. ९

ओगणीस पीस्तालीसे साले, वसंते वासना मुकी;
महासुद पांचमे जन्म्या, त्हमारा आत्मने रीझवो. १०

अवस्था आठ वय मांहे, जगत माया तजी एने;
अनुपम मार्ग निरधार्यो, त्हमारा आत्मने रीझवो. ११

जन्म दीक्षा समय एके, फकिरी आत्ममां लीधी;
बन्या ए विश्वना साधु, त्हमारा आत्मने रीझवो. १२

स्वीकार्युं नाम शांतिनुं, गुणो अद्भुत उभराया;
गुरुश्री तिर्थविजयजी, त्हमारा आत्मने रीझवो. १३

तपस्वी तिर्थविजयना, गुरुश्री धर्मविजयजी;
धुरंधर ज्ञानी ने ध्यानी, त्हमारा आत्मने रीझवो. १४

पूजाया देव थई आजे, मांडोली गामना पाळे;
महायोगेंद्र कहेवाया, त्हमारा आत्मने रीझवो. १५

दिपावी पाट गुरुवरनी, प्रभो! शांतिसूरीश्वरजी;
मुनीश्वर महान कहेवाया, त्हमारा आत्मने रीझवो. १६

भयानक वन अने पहाडो, वसे हिंसक पशुओ ज्यां,
मरणनो भय तजी साध्युं, त्हमारा आत्मने रीझवो. १७

अमर फळ योगनुं पामी, बनी अवधूत पूजाया;
लीला चैतन्यमय झळकी, त्हमारा आत्मने रीझवो. १८

परमपद प्राप्त करवाने, कर्यो निरधार मुक्तिनो;
करी दर्शन कृपाळुनां त्हमारा आत्मने रीझवो. १९

नमन ! कोटी ! नमन ! कोटी, प्रभो शांतिगुरु चरणे;
विनंती दास किंकरनी, त्हमारा आत्मने रीझवो. २०

ॐ

८०

श्री गुरुमंदिर महोत्सव प्रसंगे.

वीराओ सहु वेळेरा आवजो,
बाळुडां सहु प्रेमे पधारजो. ए टेक

मरुधर प्रदेशे नगर नामे गाम मांडोली महीं,
गुरुदेव धर्मविजय प्रभोनुं धाम उज्वळ छे अहीं.
चरण छे त्यां धर्म विजयनां,
चरण छे त्यां तिर्थ विजयनां. १

धर्मविजय प्रभो धुरंधर ज्ञानीने ध्यानी थया,
जन्म्या मरुधर देश नगरे गाम मांडोली रह्या.
गुरुवर हो ज्ञानी गवाया,
रुषिवर हो घर घर पूजाया. २

गुरुदेव स्वर्ग थया पछी ज्यां देहनी भस्मी करी,
अग्नि भभूकी आपथी ए दिव्य घटना छे खरी.

अगम बळ हो गुरुवरनुं वामीयुं,
अमर फळ हो मुक्तिनुं पामीयुं. ३

देहभष्म थयो अने ध्वज पालखीनी झगमघी,
लीमखूट वस्त्र बळ्यां नहि ए सर्व अमर रह्यां अहीं.
लीमडीओ त्यां अदभूत गाजती,
पादुका त्यां गुरुवरनी भासती. ४

तसशिष्य तिर्थविजय तपस्वी ज्ञात आहिरमां थया,
शांति सूरीश्वर शिष्य एना एक कुळमां उपन्या.
नवे खंड हो कीर्ती गवाणी,
सूरीश्वरश्री ज्ञानीने ध्यानी. ५

मंदिर गुरुनुं भव्य रचीयुं गाम मांडोली महीं,
मूर्ति ईहां स्थापन करे ए वात निश्चय छे सही.
विभुवरश्री धर्मविजयनी,
गुरुवरश्री तिर्थविजयनी. ६

भक्तो पधारो हर्षथी आनंदनी अवधि नहि,
दर्शन करी गुरुदेवनां पावन बनो सर्वे अहीं.
वीराओ सहु झांझरथी झूकजो,
वालुडां सहु भक्तिना चूकजो. ७

मणीमय महामंगल प्रभाते दिव्य अनुपम अवसरे,
अगम अदभूत ज्योत झरशे मानवीनां मनहरे.

चांदलीओ त्यां चमकेलो उगशे,
धनाधन त्यां वाजांनी उडशे. ८

ओगणीसे चोराणुं साले मास फागण फालशे,
शुक्ल दशमीने प्रभाते दिव्य उत्सव झामशे.
अविचळ रहो मंदिर गुरुनुं,
शरण एक हो शांतिसूरीनुं. ९

छोळो उछळशे प्रेमनी अद्‌भूत रचना झामशे,
गुरुवर प्रभो शांतिसूरीनी दिव्य घटना वामशे.
किंकरदास कहे अवसर ना भूलजो,
बालुडां सहु भक्तिमां झूलजो. १०

८१

गझल

मांडोली गाममां आजे, अजब आनंद उलटायो;
वह्यां झरणां कृपासिंधु, प्रभो शांति सूरीश्वरजी. १

पधार्या प्रेमथी भ्राता, हृदयमां हर्ष उभराता;
गुणो गुरुदेवना गाता, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. २

नबीरा राजवी आव्या, जीवनमां भेद नव लाव्या;
सर्वने एक सरखाव्या, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ३

गुरुमंदिर रुडु भासे, अमर पुष्पो थकी वासे;
निरखतां पाप सहु नासे, प्रभो शांति सूरीश्वरजी. ४

तपस्वी तिर्थ विजयने, प्रभो श्रीधर्मविजयनी;
करी मूर्ति ईहां स्थापन, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ५

ओगणीसें चोराणुं साले, फागण शुक्ले दशम दहाडे;
लीलाओ दिव्य प्रगटावी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ६

मरुधरना महापुन्ये, मणादर गाम नगरेथी;
हीरो आदिव्य झळक्यो छे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ७

पीताश्री भीमतोलाजी, वसुदेवी अहो माता;
उजाळी ज्ञात आहिरनी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ८

दुःखो अवधि सही आजे, परमपंथे झुकाया छे;
दिपक घर घर झगाया छे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ९

परम ज्ञानी अने ध्यानी, जीवनना एक विज्ञानी;
बुझावे विश्वना प्राणी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १०

युरोपीअन पारसी राजन, करे छे कंईकने पावन;
जपावे ॐ ने अर्हम्, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. ११

अगम मस्ती खिलावीने, वजाव्यो देशमां डंको;
पूजाया चोदीशा मांहे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १२

सदा समभावनी शैया, महीं पोढया प्रभोस्वामी;
निजानंदे सदा रहेता, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १३

जगत कल्याणने माटे, फकिरी आत्ममां लीधी;
सोडीए स्वर्गनी सीधी, प्रभो शांतिसूरीश्वरनी. १४

पुरण पुण्यात्म मांडोली, वधुँ ज्यां रत्न अणमोलु;
प्रकाषी विश्वमां ज्योती, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १५

हृदय शुद्धी थशे त्यारे, पछी गुरुदेव छे व्हारे;
डूबेलां मानवी तारे, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १६

विना स्वार्थे करो भक्ति, पछी कंई पामशो शक्ति;
नथी भक्ति विना मुक्ति, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १७

अनाथो नाथ छे स्वामी, जमर कीर्ती जुगे झामी;
अहो ! शीवपुरना गामी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १८

पुरवना पुन्य योगेथी, मळया ज्ञानी प्रभो साचा;
दया किंकर उपर कीधी, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. १९

गुरुमंदिर अमर रहेजो, मुखेथी सर्व ए कहेजो;
पुरो त्यां हर्षनां वहेजो, प्रभो शांतिसूरीश्वरजी. २०

ॐ

८२

राग-एवा सद्गुरुनुं तमे ध्यान करो

प्रभो आनंदपुर वहायां अहीं,
धन्य धन्य मांडोली गाम मही. १

मूर्ति करी स्थापन प्रभो गुरुधर्म तिर्थ विजय तणी,
नयने निरखतां पाप नासे दिव्य छे पारसमणी.
प्रभो धर्म धुरंधर ज्ञानी तणी,
योगी अवधूत आतम ध्यानी तणी. प्रभो २

उलटयो अजब आनंद सागर दिव्यदिप झळकी रह्यो,
वर्णन मुखे नव थई शके दर्शन करी पावन बन्यो.
अति अद्भूत तान मचायुं अहीं,
गुरु ज्ञानीतणा गुण गाया सही. प्रभो ३
महापुन्यशाळी नर हता ते सर्व अहींआं आवीया,
दर्शन करी गुरुदेवनां आनंद रस उभरावीया.
प्रभो अमृत जळ उभरायां अहीं,
गुरु दिव्यलीला प्रगटावी सही. प्रभो ४
शांतिसूरीश्वर महानयोग विश्वमां भजवई रह्या,
जंगल अने पहाडो फरी ॐकारनी धूनी वर्या.
प्रभो शांतिसूरीश्री पधार्या अहीं,
एनो डंको थयो बधा विश्वमहीं. प्रभो ५
किंकर कहे आ दिव्य घटना भाग्यवंता पामीया,
भक्ति करी भगवंतनी आनंद उरमां वामीया.
प्रभो स्हाय करो तुम वाळगणी,
मारां जन्म मरणनां दुःख हणी. प्रभो ६

ॐ

८३

श्री केसरीआजी तिर्थ अने सूरीश्वरनी हाकल

राग-आलममां डंका वजादीया गुरुशांतिसूरीश्वर योगीने

केसरीया तिर्थ बचानेको, बजव्याता डंका सूरीश्वरने;
व्हां जय जयनाद वजानेको, आदरीयाता अनशन व्रतने. टेक

ए तिर्थ धुरंधर जैनोका, मंदिर कहलाता जीनवरका;
ए सत्य स्वरुप वतलानेको, बजव्याता डंका सूरीश्वरने. १
पूजारी पंण्डा मंदिरके, रहेते प्रभु पूजन करनेको;
ए हक सच्चा समजानेको, बजव्याता डंका सूरीश्वरने. २
लख्खो जैनो वहां जाते है, दर्शन करी आनंद पाते है;
ए तिर्थ तणी यात्रा करके, आदीश्वरके गुण गाते है. ३
पंडा कहे तिरथ वैष्णवका, अवतार सूणाते रीखवका;
ए असत्य नाश करानेको, बजव्याता डंका सूरीश्वरने. ४
पण्डाने जुल्म कीया भारी, निश्चय झघडेका नीरधारी;
ए झघडा शांत करानेको, बजव्याता डंका सूरीश्वरने. ५
किंकर कहे तप तपीआभारी, गुरु शांतिसूरीश्वर बलीहारी;
समभाव सदा अंतरधारी, बजव्याता डंका सूरीश्वरने. ६

८४

राग–आशावरी

सूरीश्वर साचा कोण कहावे;
वीर धर्म दिपावे. ए टेक.

भूतकाळमां थया सूरीश्वर, नाम अमर कहेवायां;
सत्य तणो संदेश सुणाव्यो, दिव्य पुरुष कहावे. सूरीश्वर–१
सकळ संघनो भार उठावे, एह सूरीपद पावे;
संकट समये शीर झुकावे, वीरपणुं वतलावे. सूरीश्वर–२

धर्म खातर जे प्राण समर्पे, आतमने अपनावे;
देहतणी परवा नहि करतां, अदभूत बळ अजमावे. सूरीश्वर-४

शांतिविजयजी महान योगीश्वर, सूरीश्वर पद पावे;
संघ सकळ पदवी अर्पे छे, धन्य, धन्य, गुणगावे. सूरीश्वर-५

केसरीयाजी तिर्थ बचावा, भिष्म प्रतिज्ञा लीधी;
स्नेह अने शांती करवाने, अनशन व्रत बतलावे. सूरीश्वर-६

मरुधरना ए महान रुषीवर, आतम ज्योत जगावे;
शांतिचरण रज किंकर कहे छे, आनंद मंगळ थावे. सूरीश्वर-७

८५

राग-आशावरी

सूरीश्वर चरण मही वंदीजे, आतम शुद्ध करीजे. १

हीरविजयजी सूरीश्वरराया,, भारतरत्न गवाया;
दारु मांसनो त्याग करावी, अकबरराय बुझाया. २

हेमाचार्य सूरीश्वरराया, वीर पुरुष कहेवाया;
गुर्जर भूमीना भूपनमाया, रायकुमार कहाया. ३

वर्तमान समय कळीयुगनो, महान योगीश्वर राया;
शांतिविजयजी नाम छे जेनु, भारत भूप नमाया. ४

बामणवाडजी तिर्थ मरुधर, सूरीश्वर पद पाया;
विजय शांतिसूरीश्वरजीना, जय जयनाद बजाया. ५

घोर प्रतिज्ञा साथे लीधी, तिर्थ केसरीया माटे;
क्लेश हणावी शांती थवाने, अनशन व्रत बतलाया. ६

विश्वप्रेमना अद्‌भूत बळथी, आलमने अपनाया;
शांतिचरण रज किंकर कहे छे, जय जयकार जगाया. ७

*

८६

राग-प्रीतमजी तेडां मोकले

तिर्थ केसरीया जैननुं बचायुं गुरु श्री,
घर घर संदेशो मोकल्यो. ए टेक

पंडा लोको मंदिरना पूजारी, एने जुल्म कीधो अति भारी;
अन्य धर्मीनी स्हायने स्वीकारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ १

ध्वजा जैनत्व केरी उतारी, होम कीधो मंदिरमां भारी;
जैन आलममां चर्चा अपारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ २

युद्ध चाल्युं पंडानुं भारी, जुठी वाजी जगतमां प्रसारी;
पंडा लोको कहाता पूजारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ३

थती श्रावक मंदिरमां सारी, पुजा प्रक्षाल भावना अपारी;
कहे पंडा श्रावक ए अमारी गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ४

गुरु शांतिसूरीश्वररायाृ एने आलममां डंका बजाया;
परम ज्ञानीने ध्यानी कहाया गुरुश्री;
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ५

महाराणा मेवाड ना आया, गुरुचरणोमां शीषने झुकाया;
मोतीमहेले आनंद उभराया किंकर कहे,
घर घर संदेशो मोकल्यो. तिर्थ ६

८७

राग–ह्वारी भक्ति जागी छे बधा विश्वमां रे

सूरी सम्राट पद महा जाणजो रे,
होये छत्रीश गुण गुणवान. सूरी १
गुरु शांतिसूरीश्वरने नमो रे,
जेने नमवाथी पार पमाय. सूरी २
धन्य धन्य भारत ह्वारा आंगणे रे,
गुरु सूर्य समा झळकाय. सूरी ३
सोळ वरसे संयम एणे आदर्युं रे,
राय रंक सहु एक सरखाय. सूरी ४
भील मेणा मानव घणा कारमा रे,
एने वाणीथी बोध अपाय. सूरी ५

घोर कष्टो सह्यां गीरीराजमां रे,
परमज्ञानी ने ध्यानी कहाय. सूरी ६

शुदी त्रीजे मागशर मास महुरते रे,
वामणवाडा तिरथ कहेवाय. सूरी ७

सूरी सम्राट पद गुरु पामीया रे,
संघ सर्वे मळी गुणगाय. सूरी ८

केसरीयाजी तिरथ रुडु जाणजो रे,
युद्ध चाल्युं पूजारीनी साथ. सूरी ९

वदे मंत्री आ तिर्थ नथी जैननुं रे,
ए तो सार्वजनीक कहेवाय. सूरी १०

तिर्थ माटे प्रतिज्ञा आदरी रे,
स्नेह शांती अनुपम थाय. सूरी ११

आवी गामेमदार तप आदर्यो रे,
त्रीश उपवासे जयजय थाय. सूरी १२

मोती महेले आवी नम्या राजवी रे,
अति आनंद त्यां उभराय. सूरी १३

कहे किंकर वाळ गुरु शांतिनो रे,
एनी घर घरमां ज्योती झघाय. सूरी १४

८८

राग-आया हुं गुरु द्वारपे कुछ लेके जाउंगा

केसरीयाजी तिर्थ बचावा, घंट बजायो तो;
घंट बजायो तो, गुरुए घंट बजायो तो. के-१
तिर्थ बचावा अनशन व्रतनी, भिष्म प्रतिज्ञा जो;
त्रीश उपवास करी गुरुवरश्री, घंट बजायो तो. के-२
सूरीपद श्री संघे अर्प्युं तुं, एह बतावा जो;
पदवी लईने पण आरंभ्युं, धन्य सूरीश्वर जो. के-३
उदेपुर मेवाड प्रदेशे, अनुपम घटना जो;
दाखल नहि करवाने माटे, सैन्य स्वयंवर जो. के-४
पोलीस पेरो रात दिवसनो, चार तरफ मूक्यो;
दीवान श्री सुखदेव प्रसादे, निश्चय करीयो तो. के-५
मदार गामे ध्यान वळेथी, शांतिसूरीश्वर जो;
दीवान आवी चरणे पडीयो, दर्शन करतो तो. के-६
त्रीश उपवासे ध्यान वळेथी, गाम देवाली जो;
महाराणा श्री चरणे पडतां, जय जय बोले जो. के-७
किंकर कहे आ कार्य वीरोनुं, हसतां जावे जो;
मृत्यु तणो भय नाश करे ए, शीव सुख पावे जो. के-८

८९

गझल

केसरीया तिर्थने माटे, प्रतिज्ञा भीष्म लीधीती;
अरस्पर स्नेह करवाने, करी हाकल दीशा चारे. १

गजाव्यो घोष दुनीआमां, सूरीपद सत्य बतलावा;
जीनेश्वर गुण गावाने, करी हाकल दीशा चारे. २

भयानक युद्ध पंडानुं, बन्युं ए तिर्थमां भारी;
प्रतिज्ञा प्रेमथी पाळी, करी हाकल दीशा चारे. ३

नीकळीया टेक निरधारी, तपश्चर्या जीवन भारी;
मृत्युनो शोक विसारी, करी हाकल दीशा चारे. ४

मदारे वास कीधो तो, जीहां उपवास आरंभ्या;
जीवन मस्ति जगावीने, करी हाकल दीशा चारे. ५

सूरीपद सिद्ध करवाने, अभीग्रह आत्म कीधो तो;
वीणा जय जय वगाडीने, करी हाकल दीशा चारे. ६

मुलक मेवाडनो उतर्यो, सूरीश्वर दर्शनो माटे;
अहींसा सूत्र समजायुं, करी हाकल दीशा चारे. ७

पधार्या त्रीश उपवासे, देवाली गामना पाळे;
प्रभो ! निज आत्मना वळथी, करी हाकल दीशा चारे. ८

अनंतां मानवी उभर्या, पधार्या राजवी महेले;
मदारे शोध गुरुवरनी, करी हाकल दीशा चारे. ९

मदारे नव दीठा गुरु श्री, दीशा चारे सहु खोजे;
पुरंधर ज्ञानीने ध्यानी, करी हाकल दीशा चारे. १०
जडेलां रत्नने मोती, हीराथी पालखी झळके;
गुरु सन्मानने माटे, करी हाकल दीशा चारे. ११
देवाली गामथी आगे, हता त्रण कोश उपर ए;
पधार्या ध्यानना बळथी, करी हाकल दीशा चारे. १२
हती त्यां थूरनी वाडो, निहाळ्या वाडनी वच्चे;
वधाव्या नाद जय जयथी, करी हाकल दीशा चारे. १३
झूकाव्युं शीष महाराणे, क्षमा अंतर थकी याची;
कराव्युं पारणुं हस्ते, करी हाकल दीशा चारे. १४
बन्यु सहु मोती महेलोमां, कमीशन राज्यथी नीम्युं;
दीगंबर श्वेतना वच्चे, करी हाकल दीशा चारे. १५
हती जे वात वैश्नवनी, तजी जैनत्वनी आवी;
लगाडी शांतीनी चावी, करी हाकल दीशा चारे. १६
पूकारे बाळ दीन किंकर, अजब ! माया गुरुवरनी;
ध्वजा जैनत्वनी झळकी, करी हाकल दीशा चारे. १७

९०

राग–आशावरी

माया वीरला पावे, गुरुनी माया वीरला पावे.
सदगुरुवरनी अकळ लीलाओ, : भाग्यवानमां आवे;
मोह मतीमां भान भूलेला, अंधारे अथडावे. गुरुनी–१

कृपा वृक्ष मनमंदिर स्थापे, झघमग ज्योत जगावे;
नैयां डगमग थाय नहि तो, घटमां घंट बजावे. गुरुनी-२

मारुं त्हारुं मनथी छोडे, शांती जीवन उभरावे;
गुरु गुणमां लयलीन बनीने, भेदन उरमां लावे. गुरुनी-३

परगुण निरखी निजने माटे, पंडीत जात मनावे;
पंडीत बनवा अवनव रीतीए, अंतर हर्ष धरावे. गुरुनी-४

नाम जगतमां निजनुं करवा, भीन भीनता न मचावे;
सब जन अकळ कळा नहि पावे, अकल नकलमां नावे. गुरुनी-५

सर्व बने निज मनथी कवीओ, वीध वीध रीत गुण गावे;
सदगुरुवरनी अदभूत माया, घटघटमां नहि आवे. गुरुनी-६

किंकर बाळक शांति चरणरज, मूढमती कहलावे;
शांति प्रभोनी अकळ लीलाथी, आतमने अपनावे. गुरुनी-७

ॐ

९१

राग-ज्ञान ना थयुं रे जीवने ज्ञान ना थयुं

शुं रे करुं रे हवे शुं रे करुं, गुरुवर गुरुवरनुं ध्यान धरुं. टेक.

गुरुवर माता पीता, गुरुवर दीन दाता;
गुरुनाम भजवाथी: हुं प्रभुने मळुं. शुं-१

आरे जीवनमां साचो, गुरुवर गुरुवर;
सदगुरुवरना चरणे सहु रे धरुं. शुं-२

दुनीआदारीनां सुखो, दुःख रुप भासे;
आरे दुःखडामां एनुं शरणुं मयुं. शुं–३

चितडानी चोरी जाणे, डूबताने कांठे आणे;
भवरुपी दरीआमांथी, केमे तरुं. शुं–४

विषडानी वेले चढीयो, भवसागर एळे करीयो;
मोह ने मायामां हुं तो, रम्या रे करुं. शुं–५

हजु नथी समज्यो किंकर, सदगुरुवरने;
शांति गुरुवरने मारी, अरजो करुं. शुं–६

९२

विखवादनां वादळ

हरिगीत छंद

आ जगतमां ज्यां ज्यां निहाळुं, त्यां बधे विखवाद छे,
ज्यां ज्यां नयन मारां फर्यां, त्यां त्यां बधे विखवाद छे;
भक्ति अने शक्ति मही पण, सर्वमां विखवाद छे,
निजनी मुरादो पार करतां, सर्वमां विखवाद छे. १

साधु अने संतो मही पण, सर्वमां विखवाद छे,
मुनीजन अने गुणीजन मही पण, सर्वमां विखवाद छे;
भक्तो तणा अंतर मही पण, कटर ए विखवाद छे,
क्रोध किल्लो बांधनारो, एक ए विखवाद छे. २

शीतळतानी लहेरमां पण, उष्ण ए विखवाद छे,
विश्व प्रेम तणा झरामां, आग ए विखवाद छे;
ज्यां सत्यनी सरिता वहे, त्यां पण खरे विखवाद छे,
जय जय तणा झणकारमां पण, एक ए विखवाद छे. ३

माळा जपे मुखथी छतां पण, अंतरे विखवाद छे,
शांती जीवनमां राखतां पण, दुष्ट ए विखवाद छे;
धर्ममां ने कर्ममां पण, सर्वमां विखवाद छे,
किंकर शिरे वादळ तूष्यां, धिख, धिख, ए विखवाद छे. ४

मुज नाथ शांतिसूरी प्रभोमां, शांतीनो शुभ नाद छे,
ए योगीना अंतर महीं, शांती तणो संवाद छे;
आ जगतना कल्याण माटे, एक आशीर्वाद छे,
किंकर कहे छे चोदीशा, ए विण बधे विखवाद छे. ५

९३

राग—डंको वाग्यो लडवैया शूरा जागजो रे.

डंको वाग्यो घर घरमां, एना नामनो रे;
एना नामनो रे, मुक्ति धामनो रे. डंको

ज्ञानी–ध्यानी झळक्या छे, सारा विश्वमां रे;
सारा विश्वमां रे, सारा विश्वमां रे. डंको

वंदन करवा वीराओ, वहेला आवजो रे;
भक्ति काजे अंतरमां, नित्ये ध्यावजो रे. डंको

आतमरामी, विश्रामी, कष्टो कापजो रे;
कष्टो कापजो रे, भक्ति आपजो रे. डंको
आतम मुक्तिने काजे, सर्वे झूकजो रे;
किंकर कहे छे, मायाने मनथी मुकजो रे. डंको

ॐ

९४

राग-गुणवंती गुजरात अमारी गुणवंती गुजरात

शांतिसूरीश्वरराय, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय.
आत्म कमळ अंतरमां खीलव्युं, अनहद तान मचाय;
अलबेला ए नाथ अमारा, प्राण प्रभु कहेवाय. शां १
करुणा सागर करुणा नागर, छे जीवना प्रतिपाळ;
कृपासिंधु ए नाथ अमारा, प्राण प्रभु कहेवाय. शां २
नाथ उगारो, दुःखडां टाळो, महेर करो शीरताज;
दीन दुःख भंजन नाथ, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. शां ३
आतम रामी शीव सुखगामी, शांती तणा दातार;
भव भयनाशक नाथ, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. शां ४
किंकर बाळक अर्ज करे छे, चर्ण पडे गुरुराय;
आत्म उद्धारक नाथ, अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. शां ५

ॐ

९५

राग-शांती माटे सदगुरुनुं शरणुं लीधु रे

सदगुरुनो संग हवे नहि मुकूं रे;
तारे के डूबाडे तोये नहि चुंकूं रे. सदगुरु-१

दुनीआ केरो डर तजीने, भक्तिमां झुंकूं रे;
भाग्य फळयुं भगवान अमारुं, गांठ न चुकूं रे. सदगुरु-२

अंध दशामां ज्योत झघावी, टेक न मुंकूं रे;
तारे के डूबाडे तोये, बाळक हुं छुं रे. सदगुरु-३

गोततो चारे कोर हुं, तेने घटमां चींध्युं रे;
अंग तणी दुर्गंध भगाडी निर्मळ कीधुं रे. सदगुरु-४

शांतिसूरी गुरुवरनुं में तो शरणुं लीधुं रे;
प्रेम पीलावी किंकरनुं, एने मनडुं वींध्युं रे. सदगुरु-५

९६

राग-आवुना योगी त्हें मने माया लगाडी

मुज अरजी सूणजो, शांतिसूरीश्वर स्वामी;
मुक्ति तणा छो तुमे गामी. मुज-१

क्रोध, हणीने त्हेंतो, शांती सुहावी बावा;
माया धुतारीने हठावी. मुज-२

मद मोहन मनथी काढयो, समता रस रेल्यो बाबा;
अहँमनी ज्योती त्हें जगावी. मुज-३

अज्ञानी बाळक त्हारां, शरणे आव्यां छे बाबा;
अंतरनी अग्नीने बुझावी. मुज-४

मुक्तिपुरीना स्वामी, ज्ञानी ध्यानी छो बाबा;
बाळकने मूकजो ना विसारी. मुज-५

भवभवनां दुःखडां वारो, बाळकने तारो बाबा;
किंकरनी अरजी ल्यो स्वीकारी. मुज-६

९७

राग-अवतारी

गुरु गीरधारी, बेठा छे ब्रह्मचारी;
आबू केरी गुफा मांहे, शुभ ध्यान धारी. गुरु-१

शीरपेरे झटा सोहे, ब्रह्म रुप धारी,
शांतिसूरी, गुरु, जग बलीहारी. गुरु-२

गुरु दिव्य ज्ञानीने, आतम रामी;
भव दुःख भंजन, दीनानाथ स्वामी. गुरु-३

प र म कृ पा ळु, प र म द या ळु;
निजानंद रहेता स्वामी, प्रभु प्रभु प्यारुं. गुरु-४

भेद न जाणो स्वामी, नव खंड कीर्ति जामी;
विश्व नमे छे गुरु, चर्ण वारी वारी. गुरु-५

किंकर बाळक, शांती चरण रज;
दर्शन देजो नित्ये, गुरु गीरधारी. गुरु-६

ॐ

९८

राग-साचा शांतिसूरी कहेवाय

गुरु श्री शांतिसूरीश्वर राय;
अमारा प्राणप्रभु कहेवाय.

वसु कुक्षी जन्म धराया गुरुश्री,
आनंद दीप प्रगटाया गुरुश्री;
घोर गगनमां थाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. १

पारणीए हुलराया गुरुश्री,
आहिर ज्ञात गवाया गुरुश्री;
जंगलमां उछराय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. २

मोर करे टहुकार गुरुश्री,
वन वृक्षोनी हार गुरुश्री;
दिव्य नयन तलसाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ३

जंगल ढोर चराय गुरुश्री,
तिर्थविजय भेटाय गुरुश्री;
भान भीतरमां थाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ४

संयम व्रत लेवाय गुरुश्री,
आतम दीक्षा थाय गुरुश्री;
मृत्यु बाथ भीडाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ५

शांतिसूरीश्वर नाम गुरुश्री,
ज्ञानी अने गुणवान गुरुश्री;
आतम ज्योत झघाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ६

घर घर गुण गवाय गुरुश्री,
ध्यान दिपक झळकाय गुरुश्री;
किंकर गुरु गुण गाय,
अमारा प्राण प्रभु कहेवाय. ७

९९

राग-मारा मनना मालीक मळोया रे थई प्रेमवश पातळीया

मारा मनना संशय टळीयारे, गुरुराज साचा मळीया.
गुरु शांती तणा छे स्वामी, आतम गुण अंतर्यामी;
परदुःख भंजन शीवगामीरे, गुरुराज साचा मळीया. १

ॐकार मंत्र आराध्यो, वणसे अतिशय वळ वाध्यो;
साचा तन मनथी साध्योरे, गुरुराज साचा मळीया. २

मरुधर भूमी पून्य कहाणी, अमृत अमीरसनी वाणी;
धन्य धन्य गुरुश्री ज्ञानीरे, गुरुराज साचा मळीया. ३

घरघरमां घंट बजाया, कंई राजनने अपनाया;
वसुदेवी कुक्षी दीपाया रे, गुरुराज साचा मळीया. ४

विश्वप्रेमनी ज्योती जागी, धून मोक्षपुरीनी लागी;
भय दुर्गती दूरे भागीरे, गुरुराज साचा मळीया. ५

प्रीते हाथ ग्रहो प्रभु मारो, भवभयनां दुःख संहारो;
किंकरने पार उतारो रे, गुरुराज साचा मळीया. ६

१००

राग-दांडी तणा किनारे

आबू तणा मीनारे, शांतिसूरी पधारे;
प्रभु आदीनाथ द्वारे, मनोहर स्वरुप धारे. १

नमुं आदी देव राया, मारु देवी मात जाया;
अर्बुदगीरी सुहाया, सूणी आत्मनंद पाया. २

शांतिविजयजी राया, वसुदेवी मात जाया;
मरुधर भूमी दीपाव्या, गुरु धर्म पाट पाया. ३

साधु पदे सुहाया, अवधूत योगी राया;
आतमीक गुण दीपाव्या, धन्य धन्य तोरी छाया. ४

बाळयोगी ब्रह्मचारी, खरी रत्ननी छे क्यारी;
वरी शांती रुप यारी, कर्मोने तोडनारी. ५

धन्य धन्य आत्मज्ञानी, अर्हम तणी छे वाणी;
मुक्ति तणी नीशानी, भव पार पामवानी. ६

धन्य धन्य योगीश्वरजी, सूणो आप मोरी अरजी;
कहे दास शिष्यवरजी, करुणा करो गुरुजी. ७

१०१

दुहा

शांत दांत गुरुदेव छो, परम कृपा नीधान;
शांतिसूरी तुम नाम छे, शांती तणा बळवान.

धन्य धन्य मरुधर भूमी, धन्य मणादर गाम;
धन्य वसुदेवी मातने, उपन्या करुण नीधान.

आठ वरसे घर छोडीयुं, रह्या तिर्थ गुरु पास;
अर्बुदगीरी मांहे रह्या, ध्यान धर्युं छे खास.

सगतोजी संतोकीयो, संसारी तुज नाम;
गौ माताने चारतां, वन्या गुरु गुणवान.

आठ वरस गुरु चरणमां, रह्या गुरुश्री आप;
अनुभव पाको संचरी, दीक्षा आपी खास.

सोळ वरसे दीक्षा लीधी, गाम रामसीण मांय;
संघ सहु भेळो थई, धन्य धन्य गुण गाय.

साधुतामां संचर्या, पंच महा व्रत धार;
बाळ ब्रह्मचारी तमे, पामो शीव सुख सार.

किशोर वय कष्टो सह्यां, त्यागी मोह वीचार;
राग द्वेषने जीतीया, छोडचो देहाचार.

अति अति तप आदर्यो, धर्या जंगलमां ध्यान;
मोह शरीरनो छोडीने, पाम्या आतम ज्ञान.

घोर कष्ट गुरुश्री सह्यां, कह्यां न मुजथी जाय;
कर्म सटोसट तोडीने, बन्या आप योगीराय.

क्षमा धैर्य हृदये धरी, तारो कंई राजन;
कुकर्मना फंदो तजी, बनता कंइ पावन.

जैन अने जैनेतरो, गुण तमारा गाय;
वचनामृत तुम सांभळी, मनमां बहु हरखाय.

अहो ! अहो ! गुरुश्री मळ्या, आत्म ज्ञान भंडार;
किंकर अर्ज स्वीकारजो, दीनबंधु भगवान.

ॐ

१०२

कवाली

भले सारुं बुरुं थावे, प्रभु ईन्साफ करवानो;
करेला कृत्यनो बदलो, जरुर अहींआंज मळवानो. १

नचावे भाग्य सर्वने, वीधीना लेखथी भाई;
नहि त्यां कोईनुं चाले, प्रभु ईन्साफ करवानो. २

गजब छे लक्ष्मीनी माया, मूरखडा कंईक भरमाया;
वीराओ पुन्यथी पाया, प्रभु ईन्साफ करवानो. ३

कसोटी कर्मनी आवी, जीवन अंगार सळगाया;
जुठी छे जगतनी माया, प्रभु ईन्साफ करवानो. ४

नतीजे जुल्मनी आशा, वन्युं आजे अहो भाई;
अरेरे केर वर्तायो, प्रभु ईन्साफ करवानो. ५

नतीजा न्याय पर आजे, चढी अंधेरनी आंधी;
छतां निश्चय नीतीनो छे, प्रभु ईन्साफ करवानो. ५

हती जे प्रेमनी धारा, वनी ए लोही सम आजे;
नयन अश्रु वहायां छे, प्रभु ईन्साफ करवानो. ७

अरे! आ शुं वन्युं आजे, निरखतां लोक सहु लाजे;
अधमता युद्धनी गाजे, प्रभु ईन्साफ करवानो. ८

सज्यां त्यां वस्त्र जे अंगे, गुरुना दर्शने चाली;
मुरादो हर्षथी वाळी, प्रभु ईन्साफ करवानो. ९

दिपक ज्यां रातदिन झगतो, प्रसादी भक्तजन लेता;
कहे किंकर वन्युं अवधि, प्रभु ईन्साफ करवानो. १०

१०३

शीखरीणी छंद

अहो ! अमृत रसनां, झरण वहेतां नित्य हृदये,
हरख हरखे म्हाली, भक्ति भावे हास्य वदने;
तृषातुर हैडांने तृप्त करीने, रम्य करता,
अति आनंदोमां, अवनवा ज्यां प्रेम झरता. १

जीवन जादव व्हाला, प्राण प्रभुने प्रेम थाळो,
गीरीवर आबूजी, पहाड भासे छे रुपाळो;
जता साथे सर्वे, ऐक्यतानां तान वरता,
उमंगे उछरंगे, शुद्ध भावे हास्य करता. २

अहो ! लक्ष्मी देवी, कृतिमता त्हारी गजब छे,
जपे त्हारा जापो, ए जीवनमां महा प्रबळ छे;
वरे भाग्य वारोने, अमर खुलतां हस्त भरता,
नहि समजे त्हारा, विविध गुणने एह रडता. ३

भजन भक्ति भावे, मनुष हृदये हाम रहेती,
जगत जाणे मनमां, अश्रुधारा अंत लेती;
दुःखोना वादळमां, विषम समये तेज झघतुं,
ईहां श्रद्धा साची, विजय पामे मन मलकतुं. ४

बन्युं नहि बनवानुं, ए प्रभुनी दिव्य माया,
पडे पहाणा अंगे, कष्ट कारागार काया;

वीरल नर ए पावे, मृत्यु सामे हाम भरता,
दुःखो अवधि सहेतां, अमर सुखनी वास वरता. ५

गजब गुण एना छे, मोह माया तान मचवे,
रडया कंईक रडावे, भाग्य सहुने नाच नचवे;
समजवुं दुष्कर छे, कर्म राजा वास वसतो,
क्षमा औषध पीने, कर्म तोडे एज हसतो. ६

अरे ! लक्ष्मी त्हारा, त्रीवीध तापे मन घवायां,
दुःख तणी वादळीओ, नयन अश्रु जळ भरायां;
नतां स्वप्नो जेनो, एह नजरे आज भासे,
रुठयां अम अंतरमां, प्रेम रसमां झेर वासे. ७

न तुं जाण्युं घटमां, कल्पनाना कोट चणतां,
तूटयो आजे किल्लो, करुणताथी मन विवळतां;
हृदयमां गभरातां, नयन रडतां जाप जपतां,
स्मरी श्री गुरुवरने, कर्मकेरा ताप तपतां. ८

अहो ! आ शुं आजे, मन सूझयुं चाल्यां सजीने.
निराधारे उभां, गृह अने सर्वे तजीने;
प्रभो शांति शांति, अमजीवनमां एक प्यारुं,
गुरुविण आ जगमां, सर्व मनथी छे अकारुं. ९

१०४

राग–युवानो ओ हिंदना सनिक बनीने चालो

वीराओ, भक्ति करीने,
आत्मने दीपावो.

भवसागर तरवाने माटे,
एज नीशानी साची छे;
भक्ति झाझमां बेसवाने,
पळपळ धून मचावो. वीरा–१

कर्मयुद्ध महाभारत चाल्युं,
नीराधार सपडाया छे;
कर्म त्हमारां तोडवाने,
नित्य हृदयमां ध्यावो. वीरा–२

मोह मणीधर नाग डश्यो छे,
मायामां पटकाया छो.
मायामांथी मुक्त थवाने,
घटमां घंट बजावो. वीरा–३

सद्गुरुवरनी साची सेवा,
ए विण जग सहु जुठुं छे;
मारुं तारुं सर्व तजीने,
अंतर ज्योत जगावो. वीरा–४

किंकर पाय पडी करगरतो,
गुरुपद भय हरनारुं छे;
सदगुरुवरना चरणकमळमां,
सर्वे शीर झूकावो. वीरा-५

१०५

भुजंगी छंद

गुरु ब्रह्म ज्ञानी गुरु देव मानो,
गुरु विश्व व्यापी प्रभु रुप जाणो;
गुरु गुण गावो गुरु गुण ध्यावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. १

गुरु मोक्ष मानो गुरु सर्व जाणो,
गुरुवर तणी स्हाय साची पीछाणो;
गुरुभक्ति नित्ये हृदयमांही ध्यावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. २

गुरुना गुणोनो कदी पार नावे,
विचारेल सघळु सदा व्यर्थ जावे;
गुरु मंत्रनी धून नित्ये धरावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. ३

गुरुने समजवा अती दोहिला छे,
गुरुना गुणोनी अनेरी लीला छे;

गुरु ओळखीने सदा उर ध्यावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. ४
गुरुनी कृपा विण नथी कांई थातुं,
गुरुनी कृपामां बधुं आवी जातुं;
कहे दास किंकर धूनी ए मचावो,
गुरुने सदा चित्तमां सर्व लावो. ५

ॐ

१०६

राग–धन्यभाग्य हमारां आज पधारो मोंघेरा मेमान

ओ ! नाथ ! कहेला कोल प्रमाणे मुज फळशो क्यारे.
प्रभु अंतर्यामी मळीया, उलट अवधि उरमां भरीया;
रजनी विषे आपेला कोल प्रभु फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–१

नीरखतो भीन्न स्वरुप म्हारुं, बतावो समय समय न्यारुं;
दर्शनमां आपेल दीलासा, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–२

निहाळुं नाथ घणा रुपमां, वसे छे मन मारुं तुजमां;
स्वप्न महीं आपेलां वचनो, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–३

नयनमां मार्ग नथी सूझतो, प्रभो पळ मात्र नथी भूलतो;
दर्शावेलां स्वरुप प्रभोश्री, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–४

घडीभर वचन नथी भूलतो, सदा तुज तान महीं झूलतो;
कृपासिंधु ए दिव्य लीलाओ, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–५

पुरो विश्वास प्रभो त्हारो, दया आ दीन परे धारो;
तलसाव्या विण कोल, प्रभुश्री मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–६

विरहथी अश्रुअति सारुं, रडे छे हृदयसदा मारुं;
विरह तणां दुःख शांत करीने, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–७

हवे तो धीरज नथी रहेती, बधी शक्ति तुजमां वहेती;
कोल मुजब आ दीन बाळकना, मन वसशो क्यारे.
ओ ! नाथ–८

गुरुश्री भेद सहु खोलो, हृदयथी आप हवे बोलो;
किंकर कहे प्रभु कोल प्रमाणे, मुज फळशो क्यारे.
ओ ! नाथ–९

ॐ

१०७

आशावरी

गुरुवीन कोई न तारणहार.

तन दुःखीआरा, मन दुःखीआरा, जग मांहे सब जन दुःखीआरा;
त्रिविध, त्रिविध, तापे बळनारा, रडतां आंसुधार. गुरु-१

राय भिखारी, रंक भिखारी, मोटरमे फीरनार भिखारी;
संत अरी संन्यास भिखारी, भीख भरा संसार. गुरु-२

मन मगरुर वनाके फीरते, धन वैभवमे कुछ नव करते;
प्रभु, पूकारे मरते मरते, करगरता नीरधार. गुरु-३

कोई नहि धन जन दुनीआमे, कोई न हे निर्धन दुनीआमे;
कर्म विपाके सब जन पामे, ईश्वर केशव बाळ. गुरु-४

मन साधे वो सबसे मोटा, उन चरणोमे सब जन लोटा;
किंकर बाळक सबसे छोटा, गुरु मुज पाळनहार. गुरु-५

ॐ

१०८

स्तुति

जय, जय, गुरुदेवा;

अभय अगोचर आनंद, शास्वत सुख लेवा. जय

आतम ध्यान धुरंधर, अवीचळमां वसता;
काम क्रोध रीपु भयने, अंतरथी हणता. जय

जंगल पहाड गुफामां, ध्यान अती धरता;
हिंसक पशु भय छोडी, शूरवीरता भरता. जय

अवधूत योगीश्वर, गुरुविश्व तणा रागी;
आम् धूनी धखवीने, भय दुर्गती भागी. जय

विश्व प्रेम सागरमां, पान सदा करता;
दिव्य दिपक प्रगटावी, जगनां दुःख हरता. जय

सत्य तणो पोकार करी, आलमने तें जगव्या;
विश्व धर्मना पूजक, अन्य जनो रीझव्या. जय

जाती तणो नहि भेद, जीवनमां शांती तणी धारा;
आत्म एक रूप नीरखी, अम्रत पानारा. जय

तुं जगत्राता दाता, प्राण थकी प्यारो;
किंकरबाळ कहे छे, भवसागर तारो. जय

१०९

स्तुति

जय, जय, गुरुदेवा;

आरती करुं सदगुरुनी, चरण कमळ शेवा. जय

चित, चंदन, जळ शब्दे, प्रेम तणा पुष्पे;

ज्ञान, गुलाल, अबोल, शील, धीरजना धुपे. जय

दिपक, अवीचळ नाम, अक्षत अनुभवना;

कर्पुर आरती करुणा, लग रहा गुरु जपना. जय

नथी ईच्छा अंतरमां, कंई लेवा के देवा;

भजन गुरु प्रतापे, पामुं हुं नित्य मेवा. जय

आरती सदगुरु केरी, जे कोई गाशे;

भाव धरी शेवक कहे, शांती थई जाशे. जय

ॐ शांती ॐ शांती ॐ शांती